**फरक आकार, फरक आयाम**

पुनर्बासपछिका भूटानी नेपाली कविता



साहित्य परिषद भूटान

 **सम्पादक**

शिवलाल दाहाल

रमेश गौतम

भक्त घिमिरे

**फरक आकार, फरक आयाम**

सर्वाधिकार © २०२२

प्रकाशन वर्ष: जुन २०२२

प्रति: ५००

संस्करण: प्रथम

मूल्य: युएस $ १५

प्रकाशन निर्देशक: रमेश गौतम

सम्पादक: शिवलाल दाहाल

रमेश गौतम

भक्त घिमिरे

छापाखाना:

आवरण:

E-mail: [publication@lcob.org](mailto:publication@lcob.org)

ISBN

समर्पण

**विषय सूचि**

[प्रकाशकीय xvi](#_Toc98114411)

[प्राक्कथन xvii](#_Toc98114412)

[खण्ड १ 18](#_Toc98114413)

[भूमिका 18](#_Toc98114414)

[**परिचय** **Error! Bookmark not defined.**](#_Toc98114415)

[**यस आलेखको संरचना** 20](#_Toc98114416)

[**भूटानी नेपाली कविताको आयाम र विशेषता** 20](#_Toc98114417)

[**परिवेश र वैचारिक धरातल** 20](#_Toc98114418)

[**१९९० पूर्वको सामाजिक-राजनीतिक स्थिति** 21](#_Toc98114419)

[**१९९० पूर्वका कविता** 25](#_Toc98114420)

[**निर्वासनकालका कविता** 27](#_Toc98114421)

[**पुनर्वासपछिका कविता** 30](#_Toc98114422)

[**बसाइँसराइ र पहिचान** 33](#_Toc98114423)

[**डायस्पोरा र साइबर-स्पेस** 40](#_Toc98114424)

[**‘डायस्पोरा’को वैश्विक परिदृश्य** 40](#_Toc98114425)

[**डायस्पोराको नेपाली सन्दर्भ** 43](#_Toc98114426)

[**डायस्पोराको भूटानी सन्दर्भ** 44](#_Toc98114427)

[**डायास्पोरिक नेपाली साहित्यमा भूटान** 51](#_Toc98114428)

[**साइबरस्पेसमा भूटानी साहित्य** 56](#_Toc98114429)

[**कविता सङ्कलन तथा छनोट** 58](#_Toc98114430)

[**कविता सङ्कलन** 58](#_Toc98114431)

[**कविता छनोट** 60](#_Toc98114432)

[**विश्लेषण** 61](#_Toc98114433)

[**परिमाणात्मक विश्लेषण** 61](#_Toc98114434)

[**गुणात्मक विश्लेषण** 65](#_Toc98114435)

[**क. अध्यात्म, प्रकृति र जीवनचिन्तन** 66](#_Toc98114436)

[**ख. संस्कृति, समाज र समसामयिकता** 69](#_Toc98114437)

[**ग. प्रगतिवाद, देश र माटो** 72](#_Toc98114438)

[**घ. नारीवाद र सीमान्त आवाज** 73](#_Toc98114439)

[**घ. डायस्पोरा, विश्ववोध र पर्यावरण** 76](#_Toc98114440)

[**उपसंहार** 79](#_Toc98114441)

[**अभिस्वीकृति** 81](#_Toc98114442)

[खण्ड २ 88](#_Toc98114443)

[कविता 88](#_Toc98114444)

[अजित रुपाबुङ् 90](#_Toc98114445)

[कसरी बाँच्नु भएको छ ? 90](#_Toc98114446)

[अधिकारी कान्छो (परमानन्द ) 92](#_Toc98114447)

[हेर्ने त फेसबुक हो 92](#_Toc98114448)

[अनन्त आचार्य 94](#_Toc98114449)

[आमाको पत्र 94](#_Toc98114450)

[अबिबाबु अधिकारी 96](#_Toc98114451)

[पारपाचुके 96](#_Toc98114452)

[अम्बिकाप्रसाद दुलाल 98](#_Toc98114453)

[सम्झन्छु सम्झन्छु है 98](#_Toc98114454)

[अर्जुन प्रधान 101](#_Toc98114455)

[परिकल्पना गरौँ 101](#_Toc98114456)

[आइती राई 103](#_Toc98114457)

[मेरो प्रश्न छ 103](#_Toc98114458)

[आईपी अधिकारी 110](#_Toc98114459)

[त्यो परी 110](#_Toc98114460)

[आभास रिखाम मगर 112](#_Toc98114461)

[मरेको इतिहासको ज्युँदो पात्र - नरबहादुर 112](#_Toc98114462)

[इन्द्रप्रकाश खवास 116](#_Toc98114463)

[कालको युग आयो 116](#_Toc98114464)

[ईश्वर ढकाल 118](#_Toc98114465)

[दुनियाँ 118](#_Toc98114466)

[ईश्वर प्रवासी 120](#_Toc98114467)

[म सानो छदाँ.... 120](#_Toc98114468)

[उपेन्द्र रेग्मी 123](#_Toc98114469)

[रवि महिमा 123](#_Toc98114470)

[उमा गौतम 125](#_Toc98114471)

[तिम्रो खोजीमा 125](#_Toc98114472)

[उमेश आचार्य 127](#_Toc98114473)

[उ बेलाको म र यो बेलाको म 127](#_Toc98114474)

[उत्तम राई 130](#_Toc98114475)

[लाखे है ! 130](#_Toc98114476)

[एच्. पि. चम्लगाँइ 133](#_Toc98114477)

[गौरवान्वित नास्तिक 133](#_Toc98114478)

[एस्.पी. भण्डारी 135](#_Toc98114479)

[सत्य प्रेम 135](#_Toc98114480)

[ओम पोख्रेल 137](#_Toc98114481)

[तिमी बादलभित्र लुक्दा 137](#_Toc98114482)

[कमल बजगाईं 140](#_Toc98114483)

[अतीत 140](#_Toc98114484)

[कर्ण गुरुङ 142](#_Toc98114485)

[काचिन 142](#_Toc98114486)

[कृष्ण भण्डारी “काइँलो” 146](#_Toc98114487)

[एकादेशको कथा बन्दै छ 146](#_Toc98114488)

[कृष्ण ढुडंगेल (सङ्घर्ष) 149](#_Toc98114489)

[मैले फेर्ने सास 149](#_Toc98114490)

[कुबिर शर्मा भुवानेटारे 151](#_Toc98114491)

[ललिपप 151](#_Toc98114492)

[कुमार सिवाकोटी 153](#_Toc98114493)

[याद आयो 153](#_Toc98114494)

[केशव काफ्ले 156](#_Toc98114495)

[बस्ती चकमन्न छ ! 156](#_Toc98114496)

[के.सी. सान्दाइ 158](#_Toc98114497)

[प्रेम दिवसको सन्दर्भमा 158](#_Toc98114498)

[खगेन्द्र गौतम 161](#_Toc98114499)

[मित्रहरू 161](#_Toc98114500)

[खगेन्द्र भण्डारी “जन्तरे” 163](#_Toc98114501)

[मान्छे 163](#_Toc98114502)

[खेम खनाल 165](#_Toc98114503)

[कर्तव्य बिर्सिसके 165](#_Toc98114504)

[खेम रिजाल 167](#_Toc98114505)

[प्रेमयुग 167](#_Toc98114506)

[गणपति दाहाल 169](#_Toc98114507)

[अर्को गुगल संसारको खोजी 169](#_Toc98114508)

[गोविन्द लुइँटेल 173](#_Toc98114509)

[मान्छे 173](#_Toc98114510)

[गंगा अधिकारी 175](#_Toc98114511)

[मेरो प्यारो सन्देश 175](#_Toc98114512)

[गङ्गाराम रिजाल 176](#_Toc98114513)

[विपत्तिको बादलले ढाकिदियो ! 176](#_Toc98114514)

[गंगा लामिटारे 179](#_Toc98114515)

[त्यहाँ के हुँदैन ? 179](#_Toc98114516)

[घनश्याम रेग्मी 181](#_Toc98114517)

[गङ्गा-स्तुति 181](#_Toc98114518)

[चरण बजगाईँ 184](#_Toc98114519)

[मेरो टोपी नझिक 184](#_Toc98114520)

[छत्र दंगाल 186](#_Toc98114521)

[आँसु 186](#_Toc98114522)

[छत्रपति फुएल 188](#_Toc98114523)

[कटुसका काँडा ! 188](#_Toc98114524)

[जगेन गौतम 192](#_Toc98114525)

[जीवन र भोगाई 192](#_Toc98114526)

[जय हुँमागाई 194](#_Toc98114527)

[कलम 194](#_Toc98114528)

[जलन भण्डारी 196](#_Toc98114529)

[मरुभूमिको यात्रा 196](#_Toc98114530)

[जितेन खड्का 198](#_Toc98114531)

[मान्छेको मन ! 198](#_Toc98114532)

[जितेन ‘मुस्कान’ 201](#_Toc98114533)

[बन्दीको डायरी 201](#_Toc98114534)

[जे एन दाहाल 205](#_Toc98114535)

[बन्द ढोका 205](#_Toc98114536)

[झगेन धिमाल 207](#_Toc98114537)

[गुनासो 207](#_Toc98114538)

[टि.आर.राई (आँशु) 211](#_Toc98114539)

[जीवनको एकक्षण 211](#_Toc98114540)

[टि.आर. रेग्मी 214](#_Toc98114541)

[फुकोसीमा 214](#_Toc98114542)

[टि.एन्. निरौला 217](#_Toc98114543)

[यातना 217](#_Toc98114544)

[डा. गोविन्द रिजाल 219](#_Toc98114545)

[बेलडाँगी 219](#_Toc98114546)

[डा. लक्ष्मीप्रसाद ढकाल 223](#_Toc98114547)

[ड्रयागनको गर्जाई 223](#_Toc98114548)

[डा. लक्ष्मीनारायण ढकाल 225](#_Toc98114549)

[ग्रस नेसनल ह्यापिनेस ! 225](#_Toc98114550)

[डिल्लिराम रेग्मी 227](#_Toc98114551)

[पाँच सय पच्चीस 227](#_Toc98114552)

[डिल्लीराम शर्मा आचार्य 231](#_Toc98114553)

[कर्मभूमि 231](#_Toc98114554)

[डिपि दुलाल 233](#_Toc98114555)

[ए नानु ! 233](#_Toc98114556)

[डी. एन्. काफ्ले 236](#_Toc98114557)

[शहीद र म 236](#_Toc98114558)

[डेञ्जोम साम्पाङ 237](#_Toc98114559)

[बिचरा कवि ! 237](#_Toc98114560)

[डेभ सिवा 239](#_Toc98114561)

[नातिनीलाई अर्ती 239](#_Toc98114562)

[डोना आचार्य 241](#_Toc98114563)

[बिलखबन्द म ! 241](#_Toc98114564)

[डम्बर घिमिरे 243](#_Toc98114565)

[अतीतसँग नमिठो बिछोड 243](#_Toc98114566)

[तिलक राई 246](#_Toc98114567)

[माङ्मा लुङ रिसाउँछ 246](#_Toc98114568)

[तिलारूपा आचार्य (अधिकारी) 248](#_Toc98114569)

[गौरव गर्छु नारी हुनुमा 248](#_Toc98114570)

[तुम्बेहाङ् लिम्बु 251](#_Toc98114571)

[उत्तरे खोला 251](#_Toc98114572)

[तेजमान रायका 254](#_Toc98114573)

[इतिहास र सन्तती 254](#_Toc98114574)

[तोयानाथ क्षेत्री 257](#_Toc98114575)

[आस्था मरेको छैन 257](#_Toc98114576)

[त्रिविक्रम अधिकारी 260](#_Toc98114577)

[फूलबारी र मान्छे 260](#_Toc98114578)

[थुत्तेनदोर्जी ड्रुक्पा 262](#_Toc98114579)

[देशविहीन हुनुको दुखाइ 262](#_Toc98114580)

[दिपक थापा 264](#_Toc98114581)

[तिमीले पनि सम्झ है 264](#_Toc98114582)

[दिल भूटानी 267](#_Toc98114583)

[एउटा देश 267](#_Toc98114584)

[दुर्गा आचार्य 269](#_Toc98114585)

[मैले आज चाबी बुझाएँ 269](#_Toc98114586)

[दुर्गा रिमाल 272](#_Toc98114587)

[साँच्चै, देशको सिमाना कहाँसम्म हुन्छ ? 272](#_Toc98114588)

[देउकी ढकाल 274](#_Toc98114589)

[म फुलेको दिन 274](#_Toc98114590)

[देव लामा 276](#_Toc98114591)

[ऊ - हिमनदी, बग्छ हिमशिखरदेखि महासागरसम्म 276](#_Toc98114592)

[देवीभक्त भट्टराई 278](#_Toc98114593)

[यी हातहरू 278](#_Toc98114594)

[देवी पोखरेल 280](#_Toc98114595)

[स्मार्टफोन 280](#_Toc98114596)

[दैफामे जेठो 285](#_Toc98114597)

[सम्झनाहरू 285](#_Toc98114598)

[धर्मेन्द्र तिम्सिना “क्षितिज” 286](#_Toc98114599)

[चिठी 286](#_Toc98114600)

[निमेश भूटानी 288](#_Toc98114601)

[स्वर्गको सम्झना 288](#_Toc98114602)

[नवीन प्रभात 290](#_Toc98114603)

[वा ! उसको आत्मबल 290](#_Toc98114604)

[नेत्रप्रसाद आचार्य 296](#_Toc98114605)

[भानु 296](#_Toc98114606)

[नैनसिङ मगर (सारु) 298](#_Toc98114607)

[हामी एक हुनुपर्छ 298](#_Toc98114608)

[पुजन राई 300](#_Toc98114609)

[चित्र 300](#_Toc98114610)

[प्रकाश धमला 302](#_Toc98114611)

[आमा र तस्बिरहरू 302](#_Toc98114612)

[प्रतिमान सिवा 305](#_Toc98114613)

[मान्छेहरू मान्छेजस्ता देखिँदैनन् आजकाल 305](#_Toc98114614)

[बादल थापा 307](#_Toc98114615)

[आमा–बाबु ! 307](#_Toc98114616)

[बि.पी. शर्मा 311](#_Toc98114617)

[फोछु - मोछुका गीतहरू ! 311](#_Toc98114618)

[बि.बि. पौडेल (भूटानी) 314](#_Toc98114619)

[लुटिएको मान्छे 314](#_Toc98114620)

[बुद्धमणि ढकाल 316](#_Toc98114621)

[हामी गोवर्द्धन उठाउँछौँ 316](#_Toc98114622)

[बृजेश गौतम 319](#_Toc98114623)

[म हराएको सूचना 319](#_Toc98114624)

[बेनु मैनाली (इट्टाघरे) 321](#_Toc98114625)

[मलाई भिक्टोरिया क्रस चाहिएको छैन 321](#_Toc98114626)

[बैरागी माइलो 324](#_Toc98114627)

[विगत सम्झेर वर्तमानबाट 324](#_Toc98114628)

[भक्त घिमिरे 328](#_Toc98114629)

[प्रेमको श्राद्ध 328](#_Toc98114630)

[भानु ढुङ्गाना 332](#_Toc98114631)

[धुपी 332](#_Toc98114632)

[भावना गिरी 335](#_Toc98114633)

[उनकै लागि त हो 335](#_Toc98114634)

[भोला ढुंगाना 337](#_Toc98114635)

[तिम्रो र मेरो सम्बन्ध कस्तो ? 337](#_Toc98114636)

[भोलानाथ सापकोटा 339](#_Toc98114637)

[साहित्यिक सम्पदाका स्रोत 339](#_Toc98114638)

[भोला सुवेदी 342](#_Toc98114639)

[अब ता भानुजयन्ती बिरानो भएछ 342](#_Toc98114640)

[मदन दुलाल 345](#_Toc98114641)

[आउनेहरू/जानेहरू 345](#_Toc98114642)

[मणिराम धिमाल “दीपित” 347](#_Toc98114643)

[टेक्सास, अमेरिका 347](#_Toc98114644)

[बाबा नहुँदा घर 347](#_Toc98114645)

[मञ्जु खड्का 349](#_Toc98114646)

[आखिर किन म बाँचे ? 349](#_Toc98114647)

[माया भट्टराई 352](#_Toc98114648)

[अनुत्तरित प्रश्न 352](#_Toc98114649)

[मौसमी ढुङ्गाना 354](#_Toc98114650)

[दशैँको याद 354](#_Toc98114651)

[रमेश दियाली 355](#_Toc98114652)

[त्यो ‘रातो’ 355](#_Toc98114653)

[रमेश गौतम 358](#_Toc98114654)

[चिताको आगो साँच्चै तातो हुँदोरहेछ 358](#_Toc98114655)

[रवि खनाल 367](#_Toc98114656)

[प्याज र यादहरू 367](#_Toc98114657)

[स्व. राकेश काफ्ले 369](#_Toc98114658)

[कहिल्यै नथाक्ने घाउ 369](#_Toc98114659)

[राज बराल 373](#_Toc98114660)

[म खुसीको पसल थाप्न सक्छु 373](#_Toc98114661)

[राधा काफ्ले 375](#_Toc98114662)

[आह्वान 375](#_Toc98114663)

[रिमेन आलोक 380](#_Toc98114664)

[सम्बन्ध 380](#_Toc98114665)

[रुप पोखरेल 382](#_Toc98114666)

[अजीव व्यक्ति 382](#_Toc98114667)

[रुपेश ढुंगाना 386](#_Toc98114668)

[आमाको बुढी औँलो 386](#_Toc98114669)

[लीला निशा 387](#_Toc98114670)

[दृष्टिभ्रम 387](#_Toc98114671)

[लक्की राशि 389](#_Toc98114672)

[सास रहेसम्म आस 389](#_Toc98114673)

[विकाश प्राञ्जल 392](#_Toc98114674)

[झरि, जाँच र जोङ्खा लोपेन 392](#_Toc98114675)

[विदुर काले पौडेल 398](#_Toc98114676)

[कविता कस्तो हुनुपर्छ? 398](#_Toc98114677)

[विशु निछा 400](#_Toc98114678)

[म र म-हरु 400](#_Toc98114679)

[विश्वास लामा 402](#_Toc98114680)

[जीवनको ग्रेटवाल उभिएर 402](#_Toc98114681)

[श्याम खनाल 409](#_Toc98114682)

[तुर्सा 409](#_Toc98114683)

[शिवलाल दाहाल 413](#_Toc98114684)

[पिरोडिक टेवल 413](#_Toc98114685)

[शङ्कर रैनपुरे 416](#_Toc98114686)

[सेतो झोला 416](#_Toc98114687)

[श्रीलाल सिवा 419](#_Toc98114688)

[दमाईको मलामी 419](#_Toc98114689)

[सबिन शर्मा 425](#_Toc98114690)

[यी मुर्छित हरफहरु 425](#_Toc98114691)

[सत्यवीर 427](#_Toc98114692)

[हली उवाच: तिमीले मलाई बौलाहा बनायौ 427](#_Toc98114693)

[सञ्चमान खालिङ 430](#_Toc98114694)

[गाउँखाने कथामा… 430](#_Toc98114695)

[सि. एम्. निरौला 431](#_Toc98114696)

[स्वतन्त्रता दिवस 431](#_Toc98114697)

[सुसन माझी 433](#_Toc98114698)

[एउटा प्रश्न 433](#_Toc98114699)

[हरि फुयाँल 435](#_Toc98114700)

[कुसुम 435](#_Toc98114701)

[हरी उप्रेति 437](#_Toc98114702)

[कुण्ठित सपनाहरू 437](#_Toc98114703)

[हिमशिखर अधिकारी 439](#_Toc98114704)

[प्रिय याद 439](#_Toc98114705)

[हेमन्ता आचार्य 441](#_Toc98114706)

[म वृद्धाश्रमकी एक वृद्धा 441](#_Toc98114707)

[यतिराज अजनबी 444](#_Toc98114708)

[केही यक्ष प्रश्नहरू 444](#_Toc98114709)

[यदु युगान्तर "आलोक" 450](#_Toc98114710)

[नेपाली परिचय-पत्र... 450](#_Toc98114711)

[याम थुलुङ 453](#_Toc98114712)

[बादलका टुक्राहरू… 453](#_Toc98114713)

[युग दवाडी 455](#_Toc98114714)

[तिमी कुलागाङ्ग्री 455](#_Toc98114715)

[सम्पादकको परिचय 458](#_Toc98114716)



कविता

अजित रुपाबुङ्

भर्मन्ट, अमेरिका

#### कसरी बाँच्नु भएको छ ?

म त यस्तो ठाउँमा छु

जहाँ

मान्छेहरूको ठेलमठेल छ

अजङ्गका आलयहरूले घेरिएको छु

तर छिमेकी छैनन्

वन घना छ

साना साना झरनाहरू छन्

बिहानी उही सुनौलो हुन्छ

साँझ उस्तै गोधूलि हुन्छ

तर

“तिल्लु तिल्लु” गरेर

रुने न्याउली छैन ।

असारमा उस्तै बर्सात हुन्छ

किसानहरू छन्

खेत-बारीहरू छन्

गाई-गोरुहरू छन्

तर

कसैले धान रोप्दैनन्

घन्किँदैन कतै पनि असारे गीत

हरेक साल

दसैँ आउँछ

तिहार आउँछ

हुँदैन गाउँमा दुर्गा पूजा

आँगननेर

न सयपत्री-मखमली सजेको हुन्छ

न देउसे भैलेको

जोर मादल बजेको हुन्छ

खल्लो लाग्छ उस्तै

न कतै मारुनी नाचको

“हा…..हा…हा….” सुनिन्छ ।

म त यसरी बाँचेको छु

हर बखत यहाँ

आफ्नै मुटुबाट डराउनु पर्छ

आफ्नै छालाको रङबाट डराउनु पर्छ

आफ्नै भाषाबाट डराउनु पर्छ

आफ्नै धर्मबाट डराउनु पर्छ

आफ्नै पहिरनबाट डराउनु पर्छ

आफ्नै राष्ट्रियताबाट डराउनु पर्छ

समग्रमा आफ्नै पहिचानबाट डराउनु पर्छ

म त

यस्तै ठाउँमा छु

यसरी नै बाँचेको छु ।

अधिकारी कान्छो (परमानन्द )

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### हेर्ने त फेसबुक हो

बोल्दा हेर्न हुने बसे परपरै कस्ले बनायो कुनी

खोल्दा विश्व सबै छ सुन्न सकिने राखेर यान्त्रिक् ध्वनि

जस्तै सङ्कटमा बसेर घरमा चिन्ता छ फेस्बूकको

सारै कष्ट परे भए सरलता हेर्ने त फेस्बूक हो।।

धेरै चिन्तन छन् गरे मन परे लाग्दैन पैसा अनि

बाँडी हेर्न सकिन्छ रे मन गरे सेयर् गरेरै पनि।।

योगा ध्यान गरे खिचेर भिडियो हाल्ने त फेस्बूक भो

आमा, दाजु, दिदी र भाइ-बहिनी हेर्ने त फेस्बूक हो।।

मान्छे जन्म हुँदा छ हर्षित उता हालेर फोटो निकै

धेरै पाठ पढी बनेर गतिलो हाल्दा छ फोटो ठिकै।

राजा या जनता र शासक सबै डुब्ने त फेस्बूक भो

झुप्रोमा घरमा बसे सहरमा हेर्ने त फेस्बूक हो।।

लाग्दा भोक उता किनेर मसिनो हालेर फेस्बूकमा

खान्छन् झट्ट किनी गई झटपटी मान्छे त होटेलमा।

भान्सा भात लिटो चढाउनु अघी हाल्ने त फेस्बूकभो  
आधा घण्ट नभै बसेर अलिबेर् हेर्ने त फेस्बूक हो।।

कस्ले के गहना किने पसलमा पैसा तिरेछन् कति

बाली खेत खिची बताउँछ छिटो केके भयो उन्नति।

कोदालो हँसिया चलाउनु अघी फेरेर फेस्बूकको

बाँझो खन्न परे चिया दिनुपरे हेर्ने त फेस्बूक हो।।

जाँदा बाथ्रुममा चलाउनु बसी भान्सा र कोठा पिँडी

पूजा पाठ भुली बिहान दिनमा फेस्बूक हात्मा बिडी।

फोटो हेर्नु सुती उठी पलङमा कोट्याइ फेस्बूकको

रातीमा दिनमा कुनै समयमा हेर्ने त फेस्बूक हो।।

नेपालीहरुले डुलेर बहुतै फोटो खिचेका थिए

भेट्दा टावर ती बसेर सबले फेस्बूकमा हाल्दिए।

जाने मार्ग कता छ त्यो मन गरी खोजेर फेस्बूकको

गाडी मोटरमा गुडे सब जना हेर्ने त फेस्बूक हो।।

लौरी हात लिई सुतेर बसने आँखै नदेख्नेहरू

गाँडो फेस्बुकमा पकाउँछ ठिटी कस्को कुरा के गरौँ।

लोकै तर्छु भनी बडा गजबको खोलेर फेस्बूक यो

मान्छे मर्नु अगी सुती पलङमा हेर्ने त फेस्बूक हो।।

अनन्त आचार्य

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### आमाको पत्र

मातृवात्सल्यबाट-

म यहाँसम्म आइपुग्दा

कालो रातमा,

मैँले एउटा पत्र प्राप्त गरेँ –

“मबाट छुटाएर लगेपछि

सदैव शान्ति रहेन ममा

मेरो वरिपरि

खजुरा र बिच्छीहरू देख्छु

सर्पहरू मलाई टोक्न आउँछन्

बलिन्द्र आँसु

असित देह लिएर

म तिमीलाई पर्खन्छु

यदि सकिन्छ भने

मेरो अमिलो मनको बाटो भएर आऊ

त्यो संसारमा

सबै कुराहरू पाउनेछौँ

रातपछि दिन हुन्छ

म त्यो कुरिरहेको छु ।”

आमाको पत्र पढिसकेपछि

मेरा आँखाबाट आँसु झरेर

पत्रको “तिमी आऊ”

शब्द मेटियो ।

मेरो हातबाट पत्र झर्‍यो

आ…मा…..को….पत्र……!!!

अबिबाबु अधिकारी

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### पारपाचुके

आ-आफ्नू घमण्डले हाम्रो बाटो छुट्टियो,

सँगै जिउने सँगै मर्ने वाचा कसम तोडियो !

अनि हाम्रो जिन्दगीको पाटो छुट्टियो !!

तिमीले तिम्रो गन्तव्य रोज्यौ,

र म पनि मेरो गन्तव्य खोज्न तिर लागेँ !

अनि,

बिचैमा अलपत्र परे ती हाम्रा सन्तानहरू !

तिमीले अर्को मन मिल्ने जोडी भेट्यौ !!

ठूलो रुखमुनि बलियो गुँड बनायौ

म पनि एक्लै बस्न सकिनँ,

मैले पनि अर्की खोजेँ र सानु गुँड बनाएँ

अनि हामी आफू खुसी रमायौँ, मनलागि रमायौँ,

अनि दिन रात रमायौँ !!

तर टुहुरा भए ती हाम्रा सन्तानहरू !!

अनि……..

दिनसँगै रात बित्यो, प्रकृतिले हात फैलायो !

उनी पहिलो आमा बनिन, म दोस्रो बाबु बनेँ,

तिमी दोस्री आमा बन्यौ, ऊ पहिलो बाबु बन्यो !

हामी आ-आफ्ना बचेरा कोरल्न थाल्यौं ,

त्यसैमा निमग्न भयौँ, अनि आनन्द मनायौं !

तर भोकै-तिर्खै, नाङ्गै भए ती हाम्रा सन्तानहरू !!

अनि………

कतै तिमी चुक्यौ, कतै म पनि चुकेँ होला !

बिर्सिएर जिन्दगीको यात्रा यस्तै हो भन्ने

नियतिमाथि सबै दोष थोपर्दै

त्यो सेतो कागजमा ल्याप्चे लगाई, मसी पुछेपछि,

खुले तिम्रा र मेरा जिन्दगीका अनगिन्ती ढोकाहरू !

तर सदासदाकालागि रोकिएछन्,

ती हाम्रा सन्तानहरूका अनन्त प्रगतिका पाइलाहरू !!

अनि…..

मैले मेरो लडाइँ मेरै पक्षमा जितेँ,

तिमीले पनि आफ्नै पक्षमा अवश्य जित्यौ !

अनि फुके तिम्रा र मेरा सबै बन्धन र अफ्ठ्याराहरू !

तर बन्द भएछन् निर्दोषीहरूका इच्छा चहानाहरू !

अनि निमोठिएछन् ती कलकलाँउदा मुनाहरू!!

र सदासदाकालागि भाँची झरे र बलात्कृत भए

ती हाम्रा कलिला सन्तानका मन-मस्तिष्कहरू !

अम्बिकाप्रसाद दुलाल

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### सम्झन्छु सम्झन्छु है

जलढका अनि बग्छ धनसिरि नदी पश्चिम तथा पूर्वमा

सीमाना भनिने ती डाँडा मुनिका बारी बगैँचा त्यँहा ।

दक्छिणमा छ सिमा विशाल समतल् आसाम बङ्गालको

त्यै बीचको रमणीय दक्छिण भुटान सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

झांगिला वनले सुशोभित सदा डाँडा र पाखाहरु

पानीका झरना र मूलहरुका खोल्सी र भन्ज्याङहरु ।

झुल्कन्छन् हिमशैल छोई रवि ती आभा प्रभा सुन्दर

वायू स्निग्ध सधैँ सुवास सितको सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

मक् मक् कुर्र: गरी प्रत्येक प्रहरको दिन्थे परेवा निधो

प्रात:काल भयो भनेर सबदिन् भाले उषा डाक्दथ्यो ।

गाउँथिन् गीत यदा कदा बिरहको न्याउली चरी सुन्दरी

लाग्थ्यो कोयलिको कुहू सुनिरहूँ सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

आगो भर्भर भर् गर्यो यदि भने संकेत यो बुझ्दथेँ

पाहुनाहरु देवता स्वरुपमा आँउछन् भनि कुर्दथेँ ।

कागले बोल गरी गयो यदि भने सन्देश के ल्यायो है

यो मन तुल्बुल भै आकुल हुने सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

असारको रसिया र मेरिबरदो हो गीत मङसीरको

देउसी भैलि तिहारको र अरु गीत बालन र संगिनिको ।

भाका शुध्द स्वत: स्वत्व पनको माधूर्य जातित्वको

रम्थेँ ती सुरिला लवाजहरुमा सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

टुङना नौमति डम्फु लोकलयका झ्याली र झ्याम्टा अरु

मुर्चुङ्गा मुरली र मादल अनि च्याब्रुङ बिनायोहरु ।

बज्थे गाँउ भरी त पर्व अनुसार लालीत्य झल्काउने

ती वादन अब धुन सुन्नु र कँहा सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

माना पाथि थिए स्वकीयपनको नाप तौलका माध्यम

जाँतो ढीकि र कोल घट्ट सब यी पीसौनिका साधन ।

बिछ्यौनाहरु राडि गुन्द्रि गजरा निन्द्रा मिठो पाउने

कैले देख्न म पाँउने र अब ती सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

बेगार बेठि गरी तिरेर खजना राजा रिझाउँदथे

बाली धूप र दीप शुध्द मनले देउता बुझाउँदथे ।

देउरालीहरुमा धजा र पतका पाती चढाउँदथे

पौवा-पाटि र देविथानहरु ती सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

उन्नतशील बनोस् र विश्वभरमा कीर्ति बढोस देशको

भन्ने ध्येय लिएर तन्मय हुँदै सेवा गरेँ राष्ट्रको ।

ठुलो कष्ट गरेर बोट बिरुवा लाँए बडो यत्नले

ती हाँगा लहरा बुटा सुमन नै सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

प्यारो देश थियो मनोरम थियो आभा थियो स्वर्गको

न्यानो बास थियो कुनै नगरमा दक्छिण भूटानको ।

भिन्नै रीति रिवाज मान्य नहुने त्यो राष्ट्रको नीतिले

माया मोह सबै उखेलिन गयो सम्झन्छु सम्झन्छु है ।।

[कविले प्रस्तुत कविता, कवि डिल्लीराम तिमिल्सिनाको “बिर्सन्न बिर्सन्न है” को शैलीमा रहेको उल्लेख गरेका छन् – सम्पादक]

अर्जुन प्रधान

मिनिसोटा, अमेरिका

#### परिकल्पना गरौँ

परिकल्पना गरौँ

यो भूगोलको सृष्टि थिएन

न त कुनै स्वर्गस्थान

न कुनै नर्कको संसार

ध्रुवसत्य मात्र थियो

हामीमाथि निलो गगन

त्यसैले विश्व-मानवहरू हामी

आजकालागि जिउने प्रयास गरौँ ।

परिकल्पना गरौँ

भूगोलभित्र भूगोलहीन सिमाना

असम्भव पनि छैन, सम्भावना पनि रहेन

त्यसैले न कुनै देश छ

न त कुनै धर्म नै

न त कुनै ग्रन्थ नै

स्वतन्त्रता, सद्भावनाको परिकल्पना गरौँ

हामी जिउनु पर्छ शान्तिकालागि ।

हिंसारहित बन्न

सृष्टिका चारसुर किल्लाबाट

मानव-अस्थिपञ्जरमा

शान्तिका ॐ नमः शिवायः

भनी नारा बुलन्द गराऊँ

त्यसैले विश्व मानवहरू हामी

बाँचिरहेको भूगोलमा हिंसा छ ।

अहिंसाको मार्गमा महामानव

कुनै स्वामित्व ग्रहण नगरी

दु:खी-सुखी सबमा भाइचारा सम्बन्ध

एक आपसमा सुख साटिँदैछ

महामारी र हाहाकारहरू विलय हुँदै

अवश्य यी विचारमा सब एक जुट हुँदै

नयाँ बिहानीका साथ नौलो मार्ग कोरिन्छ

त्यसैले परिकल्पना गरौँ एक चोटि

विश्व भयमुक्त हुँदै खुसीयालीमा छाएको छ

पूर्ण परिकल्पना गरौँ !!!

आइती राई

कनेक्टिकट, अमेरिका

#### मेरो प्रश्न छ

यो समाज एउटा रेखा कोर्छ र भन्छ-

खबरदार यो सिमाना काट्लिस् !

यो आदर्शको सिमाना काटे,

नियम र कानुनमा आफैँलाई दोषी ठान्नु;

तर, मसित प्रश्न छ;

जसले मलाई बन्धनमा राख्छ

म कसरी त्यसलाई समाज मान्नु ?

नारीलाई तराजुमा राखेर भनियो-

‘तिमीलाई नैतिक मूल्यसित जोखिनेछ !’

धेरै बोले, मुखाले भइन्छ

थोरै बोले, घोसे भइन्छ-

बोल्दै नबोले लाटी भइन्छ !

सके हाँस्दै नहाँस्नू

हाँस्नै परे पनि मुख छोपी हाँस्नू-

बोल्नु नरम अनि

शिर झुकाई लजालु बन्नू-

हिँड्दा चाल नगरी हिँड्नू,

भाँडा माझ्दा

डाडु - पन्यू बजाउँदै नबजाउनू-

यी सब छोरीकै लागि

तोकिएका सिमाना हुन् !

यदि मैले मेरो चेतनाको कुरा बोलेमा

उनीहरूले ‘असभ्य’, ‘संस्कारहीन’

भनेर मलाई बिल्ला भिराइदिन सक्छन्-

मैले मेरो इच्छा व्यक्त गरेमा

म ‘विद्रोही’ हुनेछु, ‘अटेरी’ बन्नेछु !

मेरो परिभाषा निर्धारण गर्ने अधिकार

म स्वयंबाहेक अरू कोसित छ ?

म सोध्न चाहन्छु – मेरो अनुपस्थितिमा

मेरो विवरण तयार गर्ने

अख्तियार अरू कोसित छ ?

यदि म उनीहरूकै छोरी वा बहिनी भए

संसारले सुन्ने गरी भन्नेछन् उनीहरू:

मेरी छोरी, मेरी चेली शिक्षित बनोस्

उसका इच्छाहरू पूरा गरोस् !

म स्वतन्त्र, आँटी र

स्वयंको प्रतिरक्षामा अब्बल बनौँ;

म यात्रा गरौँ, संसार बुझौँ !

तर, यही काम मेरा साथीहरूले गरे

उनीहरू यो पचाउनै सक्तैनन् !

मेरो प्रश्न छ-

नारी अस्तित्वको कुरा गर्नेहरू

किन आज पनि छोरीलाई

‘अर्काकै भित्ता टाल्ने जात’ भनिरहन्छन् ?

‘छोटो वस्त्र नलगाउनु;

त्यसले पुरुषलाई लोभ्याउँछ’-

ममाथि कुटिल दृष्टि परे यसरी

मेरो वस्त्रलाई दोष दिन्छन् उनीहरू !

मेरो प्रश्न छ-

के यो पहिरनले नै उनीहरूलाई

मेरो इज्जत लुट्ने अनुमति दिन्छ ?

ठिक छ, म स्वीकार गर्छु;

छोटो वस्त्र बलात्कारकै स्वागत भएछ रे-

अब भन्नुस्, तिनीहरू को हुन्

जो बलात्कारमा लिप्त छन् ?

उनीहरूमा अलिकति आत्मसम्मान छ?

ल- म खराब केटी नै भएछु;

तर, मेरो वस्त्र छोटो हुँदैमा

मलाई बलात्कार गर्ने तिनीहरू

सज्जन हुन् कि दुर्जन ?

अश्लील उत्तेजनामा स्वयंलाई

नियन्त्रण गर्ने उनीहरूको कुनै चेतना छ ?

नारीको अधीनमा पर्न नचाहने पुरुषहरू-

लौ भन-मेरो छोटो लुगा हेरेर

ममाथि जाइ लाग्छौ भने;

तिमी कसको अधीन पऱ्यौ ?

नारीको अधीन नरहने तिम्रो आदर्श

त्यो बेला कहाँ गयो-

जति बेला तिमी बलात्कारी बनिरहन्छौ ?

म सोधिरहेकी छु -

के मलाई बलात्कार गरेरै तिमी

आफ्नो पुरुषत्वको दाबी गरिरहन्छौ ?

मेरा पुरुष मित्रहरू भन्छन् –

हाम्रा चेलीहरू, हाम्रा आमाहरूलाई

म पुरुषको दोषी नजरबाट सुरक्षित राख्छु;

मेरा चेलीहरूप्रतिको दुर्व्यवहार म सहन्न-

उनीहरू भन्छन्-

बहिनी तिमी होसियार बन,

पुरुष भनेको खराब हो, रद्दी हो-

तर, यो सोचेर म अचम्मित हुन्छु;

के यो भन्दै गर्दा उनीहरूले

तिनै खराब पुरुषहरूको हाँचमा

आफू स्वयंलाई पनि समावेश गर्दैछन् ?

कि उनीहरू अरू छोडेर

पारिवारिक नाताका नारीहरूको मात्र

सुरक्षाको कुरा गर्दैछन् ?

पुरुषले पुरुषलाई ‘खराब’ भन्ने शब्द

आफ्नै चेली र आमाविरुद्ध

भएको दुर्व्यवहारमा मात्र प्रयोग गर्छन्-

के यो कुरो उनीहरूलाई स्वीकार्य छ ?

केटाहरू आफ्नो समूह बाँधेर

केटीहरूकै कुरा गर्छन् रे;

‘खराब केटी’का

नग्न तस्बिरहरू लेनदेन गर्छन् रे-

जब म सोध्छु-

पुरुषहरू किन त्यसो गर्छन् ?

खराब केटी भनेको को हो ?

एउटी केटीलाई खराब कसले बनाउँछ ?

त्यस बेला उत्तर आउँछ-

‘तिमी अञ्जान छौ, केटा भनेको केटा हो !’

यस्तो उत्तर सुनेर लाग्छ-

पुरुषले जे गरे पनि सामान्य हो;

मेरो प्रश्न त केवल

संसारको सत्यप्रति अनभिज्ञताको सङ्केत हो !

यस्तो उत्तरले के भन्छ भने-

पुरुषका सबै हर्कतलाई मैले

अति सामान्य रूपमा लिनुपर्छ ,

चुपचाप बस्नुपर्छ, म बोल्न हुन्न !

यस्तो उत्तरले भन्छ-

पुरुषले मप्रति जे चाहन्छ

त्यो व्यवहार गरोस्-म बोल्न हुन्न,

म अन्तरमुखी बन्नुपर्छ, लाटी हुनुपर्छ

तर विरुद्धमा बोलेँ यदि भने

म संसारभरिकै घमन्डी बन्नेछु !

जब म यस्ता कुराहरू सुन्छु

मेरो मनमा खुल्दुली हुन्छ-

आफ्ना चेलीहरूको सुरक्षा गर्ने

ती तमाम दाजु-भाइहरूले

संसारका खराब पुरुषबाट

आफैँलाई कसरी अलग राख्छन् ?

‘रद्दी’ पुरुष भनेको को हुनसक्छ?

खराब र सज्जन पुरुषहरूलाई

कहाँनेर रेखा कोरेर छुट्याउन सकिन्छ ?

म समाजका नियम-कानुनहरू,

खास गरी समाज बनाउने मानिसहरूले

तयार गरेका आदेश र हुकुमहरू-

चुपचाप पालना गर्दै थाकिसकेँ;

त्यसैले, आज म प्रश्न सोधिरहेछु-

समाजको सभ्यता कायम गर्न,

समाजलाई उन्नत र सुसंस्कृत बनाउन

यदि विधानहरू बनेका हुन् भने-

नारीका लागि मात्र नियमहरू छन् ?

तिनै नियमहरू पुरुषले पालना गर्नुपर्छ कि पर्दैन ?

किन नारीले मात्र होसियार पूर्वक हिँड्नु पर्ने ?

किन नारीले लजालु हुनुपर्ने, नरम बोल्नुपर्ने ?

सोही अभ्यास पुरुषले किन नगर्ने ?

यस्तो नियम समाजका प्रत्येक

व्यक्तिले पालन गर्ने चलन बनाए-

के हाम्रो संस्कृतिको विनाश हुन्छ र ?

यदि लात हान्नु नारीको लागि गलत हो भने

यो पुरुषको लागि पनि गलत हुनुपर्छ होइन र ?

लात हान्नु, घृणा दर्साउनु, उत्ताउलिनु यदि

नारीले मात्र गर्न नहुने भन्छौ भने

भो पर्दैन मलाई कुनै अर्ती नगर्नु-

यदि मैले तिमीलाई सुन्नुपर्छ भने

गलत सबैको लागि गलत हो

छोरा र छोरीमा गल्तीको विभेद छैन - भन्देऊ !

मेरो पुर्खाले साँचेको संस्कृतिलाई

म पनि खुब माया गर्छु-

तर अन्याय म कदापि सहन्न,

असमानतामा म रमाउन सक्तिनँ-

त्यसैले म मेरा

माइती र बाबालाई भन्न चाहन्छु;

म तपाईँकी छोरी वा चेलीको मात्र

उन्नति, प्रगति र सफलताको लागि होइन

म जस्तै मेरा साथी-सङ्गी

गाउँका छोरीहरूको पनि

विकास, उन्नति सोचिदिनुस्-

छोरीलाई मात्र प्रश्न नगरी

छोरालाई पनि शिक्षित बनाउनुहोस् !

होइन भने, मेरो प्रश्न छ-

हाम्रो संस्कृति छोरा र छोरीबिच

विभेद राख्ने कठोर परम्परा हो ?

न्याय र समानताको विरोध गर्ने

थोत्रो सामाजिक आधारशिला मात्र हो ?

आईपी अधिकारी

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### त्यो परी

कालो मैलो वरपर अनी पाल त्रीपाल कालो

बाँस्का भाटा सबतिर छिरी बल्दथ्यो त्यो दियालो

पानी पर्दा सब खलललै बग्थ्यो ओछ्यान भित्र

साँझै पर्दा जुन टहटही पस्दथ्यो छ्यान भित्र

बाँसैका ती थिए कुटी अनी बाँसकै ती मकान

लेख्ने पढ्ने अनि टसक बस्ने बाँसकै भो त काम

यस्तै बाँस बिच रहरको प्यासको फूल् पलायो

हेर्दा हेर्दै बनि अनि ठुलो देह पो झन् जलायो

लामा लामा ती सुरसिला पानका पात जस्तै

राता ताता ती विरसिला प्यासका आस जस्तै

सेता दन्तै चहचह अघी वेगको आस गर्दै

भन्थे आओ नवयवन हो रागको प्यास बुन्दै

ओठ्का भाका सबतिर थिए चक्षुका शान उस्तै

काला तीखा मृग नयन ती चिर्दथे मन् चसक्कै

जोरी खेल्थे मकनसित अहो लालि पोतेका गाला

ईत्री रन्थे हरक्षण यहाँ शीव भक्त ति प्याला

हाँस्दा खुल्थे दरशन रति मोती बिर्साउने दाँत

हाँसोसंगै मन बहकिने थियो जीवन्को साथ

औधी राम्रा छुनुमुनु गरी केशका राशि भित्र

खेल्दै घुम्दै मथ-परिक्रम गर्थे औला विचित्र

चुच्चो वक्ष बटन कसिलो तान्दथ्यो मन् भुसुक्कै

पानी पानी बनिकन त यो बस्दथ्यो तन् टुसुक्कै

वक्षे भन्थ्यो करकमल हे आइजा मस्त भैजा

चित्तै भन्थ्यो सबकन बुझी हात माथि न लैजा

दिनै बित्थे मुखभरि भ’को थूकको लुम्स निल्दै

जीवन् बित्थ्यो परम इशको नामको नाम जप्दै

आभास रिखाम मगर

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### मरेको इतिहासको ज्युँदो पात्र - नरबहादुर

नरबहादुर त्यही पात्र हो

जसलाई एक साँझ

आफ्नै घरको आँगनबाट

केही सोध्नु छ भन्दै

लिएर गएको थियो

माथिको आदेशमा

एक हुल 'एस म्यनहरूले'

खै !

यतिका वर्षसम्म सोधी सक्यो कि छैनन्

बा अझै सोध्दैछन् कि ?

कसैलाई अत्तो-पत्तो छैन

त्यो अन्तिम साँझ थियो

त्यो अन्तिम दिन थियो

कमानसिङ र तुलमायाले

आफ्नो छोरालाई मृत्युले

धेरै नजिकबाट गिज्याएको देखेको

त्यसपछि कहिल्यै देख्न पाएन

कसैले चेम्गाङमा छ भन्थ्यो

कसैले डडिमाखामा छ भन्थ्यो

गाउँमा यस्तो हल्लाहरूले

मज्जाले नै विज्ञापन पायो

आयो-आयो …. …….

………… …… गयो

१ वर्ष, २ वर्ष, ३ वर्ष

अनि यतिका वर्षसम्म

मात्र बाच्यो मृगतृष्णा

असारे काका: नर बहादुर मर्‍यो होला !

आउने भए त यतिका वर्षसम्म

आफ्नो बुढी, छोरा- छोरी

सम्झेर आई हाल्थ्यो नि !

मनिपुरे कान्छा: हैन छोरा मान्छे हो

एक दिन घर सम्झेर कसो नआउला ?

सँगैको साथी डि.बि राई

पोहोर साल फर्केर आयो

कौशिला भाउजू-

दाजु लिएर आएको

दुई-चार वर्ष भइसक्यो ।

आ.… बुहारी !

चिन्ता मान्नु पर्दैन

आउँछ काले एक दिन

तिम्रो माया सम्झेर

आखिर ! सिन्दूर

उसैको नामको लगाएकी छौ क्यार

मन दह्रो बनाएर बस

माने भन्ज्याङको उकाली

निम्तोलाको देउराली

आज पनि त्यही हुनुपर्छ

सुनबिरे काका, दाह्री बुढाहरूले भनेको सुन्दा

नरबहादुरको बाटोभरि लतपतिएको

रगत पछिसम्म पनि

सुकेको थिएन अरे ।

त्यो सुनेर

नीरमाया (नरबहादुरको धर्मपत्नी) ले

जेञ्जु (त्यस बेलाको मण्डल) लाई

अझै पनि सरापी रहन्छ

मर्‍यो होला पिशाच

नीरमायाहरू जस्तै कयौँ आमाहरूको

सराप लगेर

तर

नर बहादुर आउने आशा भने

अझै मरेको छैन ।

[ यस कवितामा गाउँले र जातीय लवजलाई जस्ताको त्यस्तै राखिएको छ – सम्पादक]

इन्द्रप्रकाश खवास

नर्थ क्यारोलाइना, अमेरिका

#### कालको युग आयो

जगर-बगर गाउँ-बस्ती पाखा पखेरो

चउर पर भिरालो छैन खाली कटेरो ।

दउरि कुदि लखेटी एकले एक खायो

अब त विधि हरायो कालको युग आयो ।।

पशु पनि पशुकै त्यो भेष-भाषा पुकार्छन्

खगगण, नभ कुद्ने मातृभाषा सुसेल्छन् ।

समय खिइसके लौ हेर आफ्नो सु-वाणी

विलिन विहिन भैगो कालको युग आयो ।।

स्वजन पर कसैको छ्यान-बिछयान छैन

उदर भरन मात्रै, अन्यको ध्यान छैन ।

यति त अरु म जोड्छु खालि मेरो छ पालो

विनय सब सकियो कालको युग आयो ।।

म सरि अरु न जागुन् ढुक्क मैलाई चैन

हरि गुणि सबमा लौ ज्ञानको लेश छैन ।

नयन तल खसाली हेर्न छोड्यो दुनियाँ

हरि ! हरि ! अब साँच्चै कालको युग आयो ।।

जीवन वनसरी भो मर्यदाले विहीन

मनुज मति कता गो भित्रभित्रै छ चैन ।

अवनि गगन जोडने फुर्तिलो घुर्कि आयो

शिव ! शिव ! अब खाली कालको युग आयो ।।

ईश्वर ढकाल

ओहायो, अमेरिका

#### दुनियाँ

बार्दलीमा बसेर हेरिपठाउँछु

पल्लो घरको झ्यालतिर

देख्छु एउटी सुन्दरीलाई

लाग्थ्यो, उनी अलिक हतारमा थिइन्

आफ्नो मोबाइलसँग थिइन्

सेल्फिको डन्डासँग थिइन्

यतिकैमा

आँखा जुध्यो

अलि-अलि लजाउँदै-सर्माउँदै

मात्र हात हल्लाएर बेपत्ता भई

मोबाइलमा

किरिङ्ग-किरिङ्ग घण्टी बज्छ

एक्कासी

‘कोसँग व्यस्त हुनु भो ?

कोसँग टिक-टक बनाउन भ्याउनु भो ?’

भन्ने आवाज मेरो कानसम्म ठोकियो

म तिन-छक्क परेँ

आफू बार्दलीमा बसी-बसी

भाइरल भएको पनि पत्तै भएन ।।

ईश्वर प्रवासी

युटा, अमेरिका

#### म सानो छदाँ....

म सानो छँदा

थोरै सपनाहरू, सस्ता सपनाहरू

नाचिरहन्थेँ मेरो मानसपटलमा

एउटा दुई वटा पुरा हुन्थेँ यदाकदा,

तर पनि म धेरै प्रफुल्लित हुन्थेँ,

अझ धेरै पुलकित हुन्थेँ,

सम्हाल्न गाह्रो पर्थ्यो आफूलाई ।

सानो संसार, सानो सोच

लगभग सम्झौता हुन्थ्यो सानै जिन्दगीसँग

कहिल्यै हारेको महसुस गरिनँ मैले ।

क्षणभरको रुन्चे आग्रह मै,

पख भोलि भन्नु हुन्थ्यो बुवाले ...।

म त्यो भोलिको आशातीत प्रतीक्षामा

'आज' कटाउँथे ।

बस्, त्यो झुल्के घामसँगै फेरि बुवालाई

कोट्याउँथे, हिजोको बुवाको त्यो बासी वचनलाई

पुनः दोर्याउँथे, सम्झाउँथे ....

उहाँ पनि आजित हुनुहुन्थ्यो सायद,

र फेरि भन्नु हुन्थ्यो " भोलि "

मेरो बाल्यकाल,

त्यही भोलिको आशातित् प्रतीक्षामा

कयौँ दिनरात कटाउँदै हुर्किएँ।

मलाई लाग्थ्यो "भोलि" पनि कहिल्यै आउँछ र ...??

तर एक दिन स्कुलमा म पहिलो भएँ ..

म औधी खुसी भएँ, मलाई चाहिएन अब

त्यो कहिल्यै सवार नहुने "भोलि "

शिक्षकबाट ग्रहण गरिएको त्यो उपहार

मेरा निम्ति करोडौँको साबित भयो ।

म उफ्रिँदै, कराउँदै उपहार लिएर दौडिएँ

लाग्थ्यो, त्यस दिन म धर्तीमा हैन आकाशमा उड्दैँछु ।

घरमा बुवालाई केही भन्नै परेन ,

उहाँले सप्रेम अङ्कमाल गर्नु भयो र भन्नु भो ...

"स्याबास " छोरा !!

गोजीबाट केही निकाल्दै बाँधिदिनु भो मेरो नाडीमा

"मिल्के घडी"

जसको प्रतीक्षामा मैले

कयौँ भोलि कटाएँ, कयौँ चाहना थप्न सकिनँ

तर आज त्यही भोलिले वर्षौँ पछि दुवै हातमा

लड्डु दिलायो मलाई .... !

खुसीमाथि खुसी कहिले, आहा क्या छ जिन्दगी ...??

तर समयको गतिसँगै म पनि हुर्किएँ

सपना पनि मसँगै हुर्किए, वृहत् बनेर झाँगिए

महँगा भए सपना, पूरा हुन कठिन हुन थाल्यो

मेरा इच्छा आकाङ्क्षाले बुवालाई चिथोर्न थाले

हिर्काउन थाले तर भोलिसँग कहिल्यै पनि सम्झौता गरिनँ मैले ।

उहाँले थेग्न सक्न छाड्नु भयो ...

म एकोहोरो भएँ, उहाँलाई गाली गरेँ, रुवाएँ

फेरि पनि कुटिरहेँ बुँदागत मागहरूका ज्वारभाटाले ..

खुसी खोज्न परदेश हानिएँ,

बल्ल बुझेँ परदेशमा पनि खुसी कहाँ फल्दो रहेछ त ...?

यहाँ त दुःख, सास्ती, दमन र शोषणको खेती पो चल्दो रहेछ

वास्तविक खुसी खोज्न त स्वदेश मै बस्नु पर्दो रहेछ

सन्तोष मै खुसी फल्दो रहेछ, खुसी मै सन्तोष मिल्दो रहेछ ... !!

उपेन्द्र रेग्मी

कान्सास, अमेरिका

#### रवि महिमा

जगमा रविको महिमा छ ठुलो

झलमल्ल गरी सब ज्योति खुलो

जब बादलमा रवि सुस्त गए

पछि खोजि सबै अरु व्यस्त भए ।।

छहरा पहरा लहरा सजिए

हरियालि भई सब जोस लिए

जगमा जब ज्योति जगाइ दिए

तब मानवले पनि होस लिए ।।

रविको गति-चाल समान रह्यो

नढलो न छिटो गति एक भयो

नत एक दिनै गति रुद्ध भयो

अनि पो जगमा अघि नाम रह्यो ।।

तिमि आज कतै नभए जगमा

कुन चाल भई रहने पलमा

तर आज कृपा हुन गो रविको

सबका मनमा जग ज्योति छ यो ।।

तिमि छौ सहजै अरु शक्ति दिने

गरदै विनती अब श्राम लिने

भुलचूक भए पनि माफ मिलोस्

अब एक समान सज्योति दिनोस् ।।

उमा गौतम

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### तिम्रो खोजीमा

आशाका किरणहरू बटुलेर

सुस्त सुस्त आँसुका ढिका समेटी

तिम्रो खोजीमा बेताब यी नजरलाई

अब छेक्दैनन् अन्धकार बादलहरूले

रोक्दैनन् अग्ला टाकुराहरूले-

हराउने छैनौ तिमी निभेका बत्तीहरूबिच

मुस्कानको एउटै टुक्रा नभए के भो

तिम्रो खोजीमा हिँडेका यी विश्वास

मर्दैनन् बोतलका प्यासहरूले

काटिँदैनन् धारिला धारहरूले

तिमीबिनाको यो घायल दिल

कुनै लहरमा लहरिने छैन

तिम्रो अङ्गालोको खोजीमा

पलपल छटपटिएको यो दिल

अब चुपचाप बसोस् कसरी ?

प्राकृतिक रङ् फेरिएर के भो ?

यो धर्तीका प्रत्येक सम्झौताहरूले दिएको

झुट्टो सन्देशलाई म स्विकार्ने छैन

“तिमी कात्रोमा बेरियौ रे,

मलाई छोडी धेरै टाढा गयौ रे”

अहँ तिमी कात्रोमा बेरिएको छैनौ

मदेखि टाढा हुन म दिने छैन

खोज्नेछु अझ प्रत्येक कुना,

भीड, गल्ली, पाखा, र अन्धकार-

तिम्रो खोजीमा समर्पित यो शरीरलाई

ठिहिराउँदैनन् हिउँका थुप्राहरूले

जलाउँदैनन् आगोका मुस्लाहरूले

अब पोल्दैनन् धूपका चर्का किरणहरूले

अनि डुबाउँदैनन् सैयौं समुद्रहरूले

तिम्रो खोजीमा व्यतीत यो प्रेमलाई !

उमेश आचार्य

भर्मन्ट, अमेरिका

#### उ बेलाको म र यो बेलाको म

उ बेला यस्तो समय थियो

जाति बेला पेट भर्न भोक खानु पर्थ्यो

प्यास मेट्न आँसु पिउनु पर्थ्यो

त्यो पनि रगत मिसिएको।

नुन किन्न पैसा सापटी माग्दा

महिनौँ-महिना पुग्ने गरी

मन नै अमिलो-नुनिलो पार्ने

मुरीका-मुरी वचनका उपहार दिन्थे

मेरी आमालाई

मेरा मनकारी छिमेकीहरू!

मानवतालाई तिलाञ्जली दिएर

लुट अनि झुटको पुच्छर हुने शुभ-कार्यमा

बा अलिकता छिटो हुन नसक्दा

बाछिटोलाई गर्ल्याम्म अङ्गालो हालेर

न्यानो निदाउने आशा राख्दै

आफ्नै हातको सिरानी लगाएर ढल्नु पर्थ्यो

धर्तीको खाट ओछ्याएर ।

कपुरी “क” खरायो “ख” पढाउँदै

दिदीले माथि आकाशमा देखाएर

जब आशिष् दिनुहुन्थ्यो “तारा छुन सकेस्”

रित्तो पेटमा चट्याङ्ग पर्थ्यो

प्वाल परेको घरको छानोबाट

जिन्दगी यसरी बर्सिन्थ्यो कि मानौँ

उसलाई ममा भएको दुई-चार उत्साहका ज्वालाहरू निभाउनु छ

अनि मलाई ओस्सिएको सलाई बनाएर मिल्क्याउनु छ।

आफन्त भनौदाहरु दिनहुँ

सहयोगका बिउ रोप्थे मनको एउटा कुनामा

बदलामा

वर्षेनी हाम्रा सपनामा आगो लगाएर

हिउँद कटाउँथे

हामीलाई जाडो ताप्न बाध्य गराउँथे

अनि

थोरै रहेको हाँसो अनि खुसीको बाली उठाउँथे ।

दाइ दिनहुँ पसिनाको बिस्कुन फिँजाएर

आफ्नो आयु बेच्नु हुन्थ्यो

एक दिन आमाको हाँसो खरिद गर्ने सपना बुनेर।

बाबा,

दम, निमोनिया र टाइफाइडसँग “फाइट” परे

फोक्सोको एक भाग मन्साएर शान्त पार्नु हुन्थ्यो

चाडपर्वसँग युद्ध भए

खुसी अनि इज्जतको धूप चढाएर

देवी-देवता खुसी पार्नु हुन्थ्यो

हुँदाहुँदा अभाव र भोकसँगको युद्धमा

अभावहरूले मृत्युको मुक्का यसरी हिर्काएछन् कि

कहिल्यै नब्युँझिने गरी निदाउनु भएको थियो बा

परिवरको खुसीका लागि ।

त्यही दिन हो

खडेरीले खाएको रुखो खेतजस्तो

सुख्खा-सुख्खा आमाको मुहारमा

जूनको ज्योति टपक्क टिपेर

उज्यालोले भरिदिने प्रण गरी

जमिनझैँ चिरा-चिरा फुटेको आमाको भाग्य

इन्द्रेणी रङ्ग चोरेर सजाइदिने सपना बुनेर

दाइ परदेश हिँड्या थियो।

एक वर्ष नपुग्दै

दाइसँगै दाइका सपना

अनि मेरा जिम्मेवारीहरू बाकसमा भरिएर घर आएथे।

सम्झनाको तुइनबाट अलिकता वर

मेरा आँखा कोठाको एक कुनामा झुन्ड्याइराखेको

दाइको तस्बिरमा पुगेर ठ्याक्क अडिन्छन्

मिठो मुस्कानमा सजिएको दाइ

मलाई हाँसेरै जीवन काटेस् भन्दै गरेको भान हुन्छ

दाइको तस्बिर मास्तिर देख्छु

मेरा बाबाको फोक्सो जस्तै

प्वालै-प्वाल परेको बा’को कालो कोट ।

दाइको तस्बिर अनि बा’को कोट अङ्गालेर

आँसुको तलाउमा छप्ल्याङ्ग हाम फाल्छु

अनि आफैँलाई रित्याएर

आफैँलाई प्रश्न गर्छु

“कतै यो परदेशी जीवन स्वर्गीयको पर्यायवाची त होइन?”

उत्तम राई

ओहायो, अमेरिका

#### लाखे है !

हौ नानी !

कहाँ हो कता हो… ?

तिमीलाई देखेँ देखेँ जस्तो लाग्छ

कहीँ कतै तिमीसँग

पक्कै भेट भा’कै हो मेरो-

अँ !

आइतबारे हटियामा

सेकुवा र कोदोको जाँड दन्काउँदै गर्दा

चारो बटुल्दै आइपुगेकी’थ्यौ होइन ??

निक्कै बेर आँखा जुधेको हो

म हार्न चाहिनँ

तिमीले जित्न सकिनौ

गाला रातो पारेर अन्तै फर्केकी’थ्यौ…..

ए होइन…. होइन रहेछ !

त्यो गालामा यस्तो डिम्पल थिएन

तर… तिमीलाई कहाँ देखेकै हो मैले ??

लाखे है!

तल…. लिवाङटारमा

उँभौलीको बेला

ढोल-झ्याम्टाको तालसँगै

माङलाङ् केलाङ नाच्दा पो

भेट भा’को हो की ??

झुक्किएर ठोकिँदा पनि

खुब आँखा फुकालेर हेरे’थ्यौ

तर…..

होइन जस्तो लाग्यो मलाई

त्यो आँखा यस्तो नशालु कहाँ थियो र ??

कहाँ भेटेँ…… कहाँ भेटेँ

कहाँ भेटेको हो हौ नानी हामी ??

ए….. साँच्चि त

हाम्रो लुङ्गा धोजवीरको विवाहमा

लोकन्ते बनेर आउँदा

गलाले थाम्नै नसक्ने

तमर्केको माला लगाइदिएर

खोर्सानीको हुक्का तनाउँदै

सिस्नुको आसनमा बस्न लगाउने

तिमी नै त हौ त….

लु हो……. पक्कै हो….

हो हो तिमीलाई त्यहीँ देखेको हो मैले-

हेर सोल्टिनी !

आधा जिन्दगी खेर गै’गो

अब आधा बाँकी छ

मिठै खुवाउँला, राम्रै दिउँला

घर बसाउने आँट छ

सानो घर छ चिटिक्कको

कमाई खाउँला पाखैमा

आऊ बस काखैमा…

हिम्मत छ ??

एच्. पि. चम्लगाँइ

नर्थ क्यारोलाइना, अमेरिका

#### गौरवान्वित नास्तिक

म सानो थिएँ, सानो जस्तै सोच्दथेँ

अज्ञानी थिएँ, अशिक्षित थिएँ

तिमीले मेरो सानोपनको फाइदा लिएर,

तिम्रो आस्था र रीतिरिवाज मलाई सिकायौ

त्यसैमा रम्न र अँगाल्न सिकायौ

म रमे पनि, मैले अँगाले पनि

खुसी थिएँ, त्यही नै सत्य ठानेँ

प्रश्न नै नगरीकन, शङ्का नै नगरीकन

कति धेरै आस्था थियो, सानो नानीको आफ्नो आमासँग जस्तै ।

तर, जब म ठूलो भएँ

मैले लेख पढ गर्न थालेँ

मैले संसार देखेँ, मैले प्रश्न अनि शङ्का गर्न थालेँ

सृजनात्मक र समालोचनात्मक रूपमा सोच्न थालेँ

तब मैले सानो जस्तो सोच्न छाडेँ ।

तिम्रो धर्मले मेरो साथीलाई अछुत बनाउँछ

कसैको जीवनलाई अजात भन्छ ।

मलाई कुनै स्वर्ग जानु छैन जसको कुनै प्रमाण नै छैन;

मलाई पुनर्जन्म वा नर्कको पनि डर देखाउनु पर्दैन

म नैतिकता, इमानदारिता, शान्ति, दया, माया र करुणाका साथ जिउँछु

तिम्रो स्वर्गको लोभ वा नर्कको डरले पनि होइन,

मानवताको लागि गर्छु, चेतनशील प्राणी भएकोले गर्छु

म मानिसलाई धार्मिक विभाजनले होइन

केवल मानिसको रूपमा हेर्न चाहन्छु

मलाई अदृश्य र कल्पनाको साथीभन्दा पनि

आफ्नै साथी र परिवार प्यारा छन्

मैले आउँदो पिडीकोलागि, यही संसारलाई स्वर्ग जस्तो बनाउनु छ ।

तिम्रो वा संसारको जुनै पनि धार्मिक आस्थामा सत्यता र वैज्ञानिकता पाइन

झुटो आशा, आनन्द, भर, डर वा विश्वास पाएँ

केवल अन्धविश्वास, भ्रम, झुट, बेइमानी, विकृति, विभाजन,

असमानता, हेलाहोचो, दमन, भेदभाव, भ्रष्टाचार, र युद्ध आदि मात्र पाएँ

तिम्रो आस्थाले मानिसलाई प्रमाण बुझ्न

र नयाँ ज्ञान-विज्ञान र प्रगतिको बाटोमा हिँड्नबाट बार लगाउँछ

तिम्रो ईश्वरको नत कुनै प्रमाण छ,

नत कहिल्यै प्रार्थनाको जवाफ नै दिएको छ

नत कहिल्यै संसारलाई रोग, भोकमरी र प्राकृतिक प्रकोपबाट नै जोगाएको छ ।

मलाई ब्रमाण्डको अध्ययन गर्न, विज्ञान नै पर्याप्त छ

र ब्रमाण्डको व्याख्या गर्न विज्ञानलाई ईश्वरको आवश्यकता पर्दैन ।

त्यसैले मैले तिम्रो धर्म र भगवानलाई नै बहिस्कार गरेँ

साँचो र सत्यको बाटोमा हिँड्न चाहेँ

भलै तिम्रो बिचारमा धेरै समर्थक होलान्,

मेरो विचारमा पनि धेरै छन्; केवल खुलेर निस्किन सकेका छैनन्

तिम्रो विचार धेरै पुरानो होला,

तर त्यसको मतलब तिम्रो विचार साँचो हो भन्ने हुँदैन

असाधारण दावा गर्नेले असाधारण प्रमाण देखाउन पनि सक्नु पर्दछ ।

म गौरवान्वित अनि खुसी नास्तिक ।

एस्.पी. भण्डारी

सिड्नी, अस्ट्रेलिया

#### सत्य प्रेम

सुनौला सपना बोकी आएछौ लोकमा तिमी

सु-कार्यको बिचार् जागोस् धीर भै लम्किनु तिमी ।१।

वृद्ध बालक नारीको सेवा गर्नु निरन्तर

घमन्डी नहुनु कैल्यै श्रमजीवि हुनु तिमी ।२।

मान-सम्मानको रक्षा गर्दा सङ्कष्ट धेर् भए

नआत्तिनु बनि वीर लम्किनु लोकमा तिमी ।३।

ईर्ष्याको भाव त्यागेर मैत्री भाव बढाऊनु

जंजीर फाली हातैको चम्किनु लोकमा तिमी ।४।

अर्काको श्रम खोसेर खाने आशक्त हुन् भनी

यिनको सङ्गति देखि तर्किनु लोकमा तिमी ।५।

निन्दा,घृणा, कुकर्मादि गर्दा ठुलो भए पनि

नबढ्नु पछि नै सर्नु नचढ्नु अश्वमा तिमी ।६।

विरोध अरूको गर्ने ज्ञानी हुन्न सुपाठक

यस्ताको रमिता देखि तर्सिनु लोकमा तिमी ।७।

एकले अरूको जै’ल्यै कुभलो सोचने भए

नहिँड्नु उसको बाटो तर्किनु लोकमा तिमी ।८।

मिथ्या कुरा परै छाडौँ सत्य साबित भए पनि

नसुन्नु यिनको वाणी भड्किनु लोकमा तिमी ।९।

आफ्नो संझि पछि लागे बाधा पो पार्छ कि भनी

गन्तव्य अलगै गर्दै तर्किनु लोकमा तिमी ।१०।

ओम पोख्रेल

**क्यानडा**

#### तिमी बादलभित्र लुक्दा

तिमी बादलभित्र लुक्दा

म पहरा छाम्दै थिएँ

पाखो भिरमा कुटो गाड्दै थिएँ

टेक्ने खुड्किलो, समात्ने लहरो खोज्दै थिएँ

यौटा झुप्रो उभ्याउन म घडेरी सम्म्याउँदै थिएँ

डोब बनाउँदै किल्ला गाड्दै थिएँ

करेंसोबारी बनाउन पाटा बिराउँदै थिएँ

बर्खे धान रोप्न गरा हिल्याउँदै थिएँ

हिउँदे मकै छर्न ढाँडे बारी जोत्दै थिएँ

कोदो- मस्याम रोप्न प्रत्येक बोट कोट्याउँदै थिएँ

फोक्टा बनाउन आली चुल्याउँदै थिएँ

गाई ग्वाली र पाली बनाउन पूर्वतिर एउटा सुर्को खन्दै थिएँ

गैरी खेतदेखि घरसम्म पुग्ने एउटा गोरेटो खन्दै थिएँ

दाउराको भारी बिसाउने चौतारो बनाउँदै थिएँ

भरियाले पानी पिउने ढुङ्गे धारो बनाउँदै थिएँ

गाईलाई डाले काट्ने बिरुवाहरू लगाउँदै थिएँ

हिउँदे घाँस र पराल राख्ने एउटा माच बनाउँदै थिएँ

भिरालो पाखामा घर छाउने खर काट्दै थिएँ

बजार पुर्‍याउन बारीका कान्लाको अम्रिसो काट्दै थिएँ

बगानको सुन्तला बजार पुर्‍याउन घोडा लाद्दै थिएँ

वस्तु खर्क लैजान सामले पेरुङ्गो बुन्दै थिएँ

अगेनाको छेउमा बस्ने खोसेलाको पिरा तुन्दै थिएँ

यति बेला मलाई च्वास्स घोच्यो तिमी भइदिएको भए आज !!!

सायद तिमी मलाई एउटा फुरुमा मकै- भटमासको खाजासँगै

कालो चिया लिएर आउने थियौ

दाउराको भारी आँगनमा बिसाएर

पटुकीमा कसेर ल्याएको ठोट्ने त्यो खाजासँग दिनेथ्यौ

पोल्टोमा च्यापेको अलिकति टिम्मुर पिसी अचार बनाई दिनेथ्यौ

दाउराको भारी माथि बोकेको दुई वटा फुन्से झिकी खाजासँगै दिनेथ्यौ

गुल्फो फुटाएर राम्रो पाकेको रहेनछ भन्दै आधा-आधी बाँडेर दिनेथ्यौ

म थाकेको बेला मझेरीमा बसी म नि निकै गलेँछु भन्दै सँगै ढिँडो हुँडल्थ्यौ

गाईको दूध तताएर ढिँडोसँग मुछेर खान दिनेथ्यौ

तर तिमी बादलबाट चिहाएर मैले खायो-खाएन भनेर हेर्छ्यौ

केही भन्दिनौ केही सोध्दिनौ

म पल पल तिम्रा आकाङ्क्षाहरू रोप्दैछु

म तिम्रा इच्छाहरू फलाउँदै छु

म तिम्रा आशाहरू फुलाउँदैछु

म हाम्रा सम्झनाहरू जोगाउँदै छु

तिमी बस यसरी नै मुस्कुराउँदै बादल भित्रबाट चिहाइरहु

म तिमीलाई नियालेर जिउँदो रहने कोसिस गरिरहन्छु ।

कमल बजगाईं

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### अतीत

कतिलाई अतीत अतीत मात्र भइदिन्छ

कतिलाई सम्झनसाथ काँप छुट्छ

कतिलाई सपनामासमेत पछ्याउन छोडेको हुँदैन

किनकि त्यहाँ अस्तित्व, पहिचान, स्वाभिमान र सर्वस्व हुन्छ।

हाँस्नु र हाँस्न खोज्नुमा अन्तर छ

अन्तरमनको आभास मुहारले झल्काउँछ

हाँसोमा चित्कार हुन्छ

त्यसैले त मनको भावना पोख्छ

भनिन्छ नैराश्यको हाँसो फिक्का हुन्छ

अहिले क्षितिज त्यस्तै देखिन्छ

त्यसैले होला रुन्चे हाँसोको अवस्था छ।

कठै कसैले भनेन

वास्तविकता बुझ्न पनि खोजेन

यो स्वार्थी परिवेशमा

कसैले कसैको वास्ता पनि गरेन

काखबाट गलहत्त्याइनु पर्दाको पीडा

च्वास्स मुटुमा रोपिँदा

सहने क्षमता सकिएर होला

कता कता नैराश्य छाएकै छ

बा-आमाले आँसुमा पीडा टप्काएकै छन् ।

तर

तर.…. के गर्ने ?

बरा सहनुसिवाय

अरू पहुँच बाहिर छ

सके त अतीत उल्टाउने

महान् इच्छा र आकाङ्क्षा छ

अनि बदला नभएर

भाइचाराको सन्देश दिनु छ।

कर्ण गुरुङ

नेब्रास्का, अमेरिका

#### काचिन

चीनको दक्षिणतिर

चारैतिर पहाडले छेकिएको गाउँ

वन जङ्गलले घेरिएको ठाउँ

जनावरहरूको चरनभूमि

चराहरूको रनवन चर्ने ठाउँ

प्रकृतिले सजिएको त्यो गाउँ

मेरो गाउँ “काचिन”

जसको आँगनमा म जन्मेँ

चप्लेटी ढुङ्गामा भाँडाकुटी खेलेँ

गाई-भैँसी, भेडा – बाख्रा चराएँ

दुधेरोमा दूध बोकी

गोठदेखि घर आउँथेँ

खेतीपाती गरी पौरख देखाएँ

त्यो भूमि हो

त्यो कर्म भूमि

दोहोरी र सङ्गिनी गीत गाउँदै

तन मनले सिर्जिएको

बाटेर आफ्नो पन

बाँचेको त्यो गाउँ

मेरो “काचिन” गाउँ !

अहिले झैँ लाग्छ

२२ औँ वर्ष बितेछ

त्यो सुन्दर गाउँमा

कसैको आँखा लागेको

त्यो कर्म भूमिमा

सरकारी भूकम्प आएको

सुन्दर सृष्टिमा विनाश काल छाएको

घरहरू जलेर खरानी भएको

बाटा बाटामा लुटिएको

अहिले झैँ लाग्छ

टेन्डु, बिन्दु हुँदै

जीवन बँचाउन गाउँ छाडेको

राजनीतिबाट अचेत गाउँ

बाहिरी संसारले नदेखेको ठाउँ

पौरखी हातहरूले बनेको

मेरो प्यारो गाउँ

आफैँबाट खोसिएको

भक्खर जस्तो लाग्छ

२२ वर्ष बितेछ।

कसको लडाई कोसँग थियो

मलाई थाहा भएन

सोझा सिधा गाउँले

कहाँ के हुँदै थियो

अझैसम्म जान्दैन

केवल जान्दछ त्यो गाउँ

जहाँ आफ्नो रगत र पसिना बगेको छ

जहाँ मिहेनतको डोराले कोरिएको छ

गाई भैँसी भेडा-बाख्रा

खेतीपाती अनि हलो कोदालो !

चप्पल खोली गाडी चढेको

उत्रँदा चप्पल खोजेको आजै जस्तो लाग्छ

बिन्दुदेखि सिलिगुडी

सिलिगुडीदेखि काँकडभिट्टा

भए भारको बोकेको सामान बोकी

मेची पुल तरेको

सामान र नाम दर्ता गरेको

खैनीको बट्टामा रासन थापेको

भोक र शोकमा व्याकुल

अहिले जस्तो लाग्छ

शिविरमा बसी शिविरे भइएको

अन्ततः ….

खुदुनाबारी क्याम्प छोडेको

झिनो आशामा अमेरिकासम्म आएको

फर्केर हेर्छु दिन बिग्रिएका दिनहरू

बिना कारण लुटिएका दिनहरू

मार्ने धम्की र त्रास सहेर

रातारात गाउँ छाडी – ज्यान जोगाउन

यहाँसम्म आएको

सम्झी हेर्छु

अहिले जस्तो लाग्छ

२२ वर्ष बितिसकेछ

म सानो बालक थिएँ

गन्ती गर्दा २७ वर्ष पुगेँछु

लाग्छ आधा उमेर यस्तै बितेछ

गाउँ घरको याद र सम्झनाले

समय बितेछ

कास् चाल पाइएनछ !

लाग्छ अझै

म त्यहीँ छु

त्यहीँ सुन्दर वन जङ्गलमा

गोफ्ला , इन्द्रेणी टिपी

ठोट्ने नुनमा चोपी खाएको

भक्खर जस्तो ….

केवल जिउँदो सपना बनेको

मेरो गाउँ – प्यारो गाउँ

काचिन !!!

कृष्ण भण्डारी “काइँलो”

ओहायो, अमेरिका

#### एकादेशको कथा बन्दै छ

बिहानै न आमाले मोही पारेको सुनिन्छ

न बेलुकी पख ढिकी जाँतोको आवाज सुनिन्छ

“घिउ हालेर दुध्यारो ल्याओ त”,

बाले भन्ने गरेको त्यो वाक्यांश

कथा मात्र भएको छ ।

दिदीले टिनको होर्लाङ्गेमा मकै भुटेको

भारमा थन्काएको दाउरा

ढुङ्ग्रामा राखेको नुन र हर्पेको घिउ

माइलाले गाग्रो र कान्छाले धिरी

बोकेर हिँडेको बाटो

त्यही पधेरामा अन्त्य भयो ।

हलो जुवा खोल्मामा सिउरेर

“घाँस हाल है, गोरुलाई”

हल्लुँड राख्दै भन्ने गर्थे दाजुले ।

“खोइ ! खोले कता छ ?”

आमाको कान थर्किने स्वरमा

“911” र कामको व्यस्तताले

कर्कश स्वर नम्रतामा

बद्लिएको अवस्था छ ।

“ह ! तारे ह ! ह ! माले”,अनि बाँके र पुणे,

कण्ठे र काले हल राँगाहरू

आलीमा कुद्दै बिउ हाल्नेहरू

असारे गीतमा रमाउने रोपारेहरू

पाटा, दाँदे, फ्याउरी र कोदालाहरू

तल्लो गरा माथ्लो गरा

हिलो छ्याप्दै दोहोरी गाउनेहरू,

यी सबै सबै

उकाली ओराली र भञ्ज्याङ,

खाजा-चिया ल्याउने अन्तरीको स्वर

धान काटेर खले गरा भरेको

कुनिउँको चुच्चोमा हुने फूल

धानका बाला शिला खोजेको रमाइलो

एकादेशको कथा बन्दै छ ।

फ्याउरो कराएको र कुकुर रोएको

गोरुको डुक्राई अनि बाँ ! बाँ !

कोइली र झ्याउँकिरीको

मनोहर सङ्गीतभित्र सङ्गीत

कर्कश भ्यागुता र पठ्याङ्ग्राको स्वर

छिचिमिरा, भुसुना र मच्छडको युद्ध

अमरत्व नाम कमाएको जुनकिरी

कमलकोट्टि र पुतली अनि बारुलो

मौरी अनि खागो र बछियौं

यी सबै कलमका टुँडोले लेखिने

शब्द भण्डार मात्र बन्दैछन्

मात्र कलमको खेती भएर !

मात्र कलमको खेती भएर !!

कृष्ण ढुडंगेल (सङ्घर्ष)

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### मैले फेर्ने सास

चराचुरुङ्गीको मनमोहक सङ्गीत

पाखा पखेराका सुस्केरा सुसेली

झर्नाका निश्चलता

नागबेली झैँ कुना कन्दरा चाली हिँड्ने खोला नालाका गीतहरू

फरक होलान् तिम्रा नजरमा

उस्तै होला सागरको गहिराई, हावाको वेग

जूनको न्यानो स्पर्श

सूर्यको क्षितिजदेखि क्षितिजसम्मको यात्रा

सायद त्यतै होला

पारिजातको बैँस

रातमै फुली रातमै झर्ने

फरक केही नहोला तिम्रो आँखामा

तर

मभित्र-भित्रै आमूल परिवर्तनको छाल छल्किरहेछ

तिम्रो सन्देशमै

लुटिएको मुस्कान

मेटिएको खोटो तकदिर

काँचसरि फुटेका सपनाहरू

एकाएक जोडिँदैछन्

अझ

मनको बार्दली खोली

सप्तरङ्गी किरणलाई स्पर्श गराउन आतुर छ

हरेक बिहान मेरा आँखा खुल्नुअघि

प्रत्येक भित्तामा रङ्ग पोती

प्रतीक्षामा बसेको छ

सानो संसार सजाउन

हरदिन दिलको बगैँचामा

रङ्गीबिरङ्गी फूल खिलाई खुसी लुटाउन आतुर छ

साँझ ढल्नै हुन्न

झ्याउँकिरीसँग लुकामारी खेल्दै

कल्पनाको संसारमा हराउँदै

मिठा-मिठा सपना बुन्छ

माकुराको जाल जस्तै

यो जिन्दगी आजभोलि

जन्म वर्षदेखि प्रतीक्षाका घडी गन्दै पर्खिबस्थे

एक झल्को हेर्नलाई ।।

कुबिर शर्मा भुवानेटारे

मासाचुसेट्स, अमेरिका

#### ललिपप

मीठो स्वाद घुटुक्क मुखमा यूवा र बच्चा दुवै

निल्छन् यी रस त्यो चुसेर सहजै बोकेर चल्दा खुबै ।

वृद्धा-वृद्ध र बालकै सकलको इच्छा छ चुस्ने खुबै

राख्दै त्यो ललिपप् सुटुक्क मुखमा मक्खै परेका सबै ।।

नेताले ललिपप् दिएर जनमा भोटै फकाए खुबै

वाधाको भरमा विकास गरने भ्रष्टै त नेता सबै ।

देशैको ढुकुटी खरानि गरने मौका मिलाई सबै

लौ ख्वाऊ ललिपप् चुनावअघि यो मौका छ तिम्रो खुबै ।।

नारा, अन्सन, युद्ध आदि सब नै रोकिन्छ पैसा भए

मोर्चा, पार्टी, विरोध आदि सबको अन्त्य सजीलै भए ।

लड्डू त्यो मनमा थपेर जनको नारा सुखैको दिए

अन्त्यमा ललिपप् लिएर रणमा धोका सजीलै दिए ।।

नौलो त्यो सुरुवातको खुसपना बोकेर बाँड्दै गए

धोक्रोमा सहजै भरेर सपना नेता ती पैदा भए ।

झन्डा त्यो फररै शहीद जलिँदा सन्तान एक्लै अब

नेताले ललिपप् लिएर मुखमा ताला सजाए जब ।।

क्रान्तीमा बलिदानको पनि कुनै सम्मान हूँदैन त्यो

नेताको बदलिन्छ रङ्ग निजको मौका तलास्दै त त्यो ।

मौकामा जनको लिएर मत लौ नेता हराऊँछ त्यो

जन्तामा ललिपप् छरेर घर लौ नेता बनाऊँछ त्यो ।।

प्रेमीले ललिपप् दिएर निजको माया जनाए कतै

प्रेमीका ललिपप् लिएर मुखमा मक्खै बनेकी कतै ।

बाबाले ललिपप् दिएर सहजै बच्चा फकाए कतै

बैनीले ललिपप् लिएर दिनको पाठै सिकेकी छिटै ।।

भ्रष्टेले ललिपप् दिएर खबरी चुप्पै गरायो सबै

इन्साफ्मा ललिपप् घुसेर सहजै दोषी बचेका कतै ।

राजाले ललिपप् दिएर सहजै सत्ता बढाए अझै

रैती त्यो ललिपप् लिएर शिरमा ढोग्दै र भोग्दै कठै ।।

मौलायो ललिपप् बजार कलिमा भ्रष्टे सिपाही सबै

के खोक्रो ललिपप् सलाम सरमा सेना र फौजी बरै ।

कस्तो यो ललिपप् अचम्म सबमा लाल्चा थपेको अझै

यो पापी ललिपप् हजार रूपमा मन्छे बिगार्दै सबै ।।

कुमार सिवाकोटी

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### याद आयो

ढुङ्गा अनि झत्ताको नानी बनाई खेलाउँथ्यौ

पोल्टोमा लुकाई मलाई मिठाई खुवाउँथ्यौ

रोएँ भनेँ पनि अनेक गरी हँसाउँथ्यौ

गोठालोमा मकै अनि आलु पोली खुवाउँथ्यौ

आफ्नो थकाई बिर्सिएर, पसिना नओबाई

मेरो भोक सम्झेर चुलामा पुग्थ्यौ

छिचिमिराको हेलिकप्टर बनाइदिन्थ्यौ

मलाई खुसी पार्न सधैँ लागिपर्थ्यौ

पकाउन, खुवाउन, नुहाउन आदि सबै

आफ्नो पढाई छोडेर मलाई पढाउँथ्यौ

आज जाँचमा पास भएँ म खास भएँ

त्यही भएर दिदी आज तिम्रो याद आयो

हो दिदी ! तिम्रो याद आयो …….

अलिकति पनि बाँडेर खाने तिम्रो बानी

तिमीले बनायौ मलाई पनि धेरै ज्ञानी

बारीका फलफूल टिपेर खुवाउँथ्यौ

छुई डुम, चु कि बु, किर्किता, इर्कीमिर्की

साथीहरू भेला पारी खेलाउँथ्यौ

आफू नाची मलाई नाच्न सिकाउँथ्यौ

काम सिकाउन फुर्क्याउँथ्यौ

जहिले बिरामी हुँदा सुर्ताउँथ्यौ

आफू गाली खाएर मलाई जोगाउँथ्यौ

मलाई सिर्कनोले पिट्दा लुकाउँथ्यौ

तर दिदी आज बा’ले गाली गरे

म नि:शब्द भएँ तर

दिदी, आज तिम्रो याद आयो

हो दिदी ! तिम्रो याद आयो ……

के गर्नु दिदी,

आफ्नो घर छोडेर पराईसँग रमाउनु पर्ने

पराईकै चुलो, डाडु-पनिउँ समाउनु पर्ने

के होला ? कस्तो होला ? पराईको घर

बाध्यता पछि फुलाउनु पर्ने त्यही रहर

जन्म घर आउन पनि अनुमति लिनु पर्ने

कठिनाइका दर्दनाक पिडा लुकाएर

ओठमा कृत्रिम हाँसो देखाउनु पर्ने

माइतीलाई पिडा नदेखाउने

‘घरको कुरा नकाट्नू

समाज र संस्कार जोगाउनू’

आशिष् पनि यस्तै दिएका थिए

मैले कतै सुने आफ्नै मान्छेले

मापसे गरेर हेला गर्छन् रे

दुःख भित्र पनि हाँस्दै हौली

पुरानै चोली धोयौ होला

मलाई सम्झी रोयौ होला

आँगनीमा मखमली फुल्यो

थाहा पायौ होला तिहार आयो

दिदी, आज तिम्रो याद आयो

हो दिदी ! आज तिम्रो याद आयो ….

केशव काफ्ले

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### बस्ती चकमन्न छ !

अचम्म लाग्छ बस्ती चकमन्न छ

साँझ बिहान मध्यान्ह कुनै समय

यो मानव बस्ती चकमन्न छ ।

मानिस नभएर हैन

यहाँ हजारौँको सङ्ख्यामा छन् मानिसहरू

तर बस्ती चकमन्न छ !

हो म साँझ बिहान हिँड्ने गर्छु

यही मानव बस्तीको बाटो

तर चकमन्न !!

मन मनै भनेँ, यहाँ त सभ्य मानिस पो बस्दा रहेछन्

हिँड्दै धरै पर पुगेँ

शून्य बस्तीको सिमाना कटिसकेको थिएँ

अढाई कोरी नाघिसकेको एक मानिसलाई देखेँ

पाइला अलि छिटो चालेँ ,भेटेँ

मनको जिज्ञासा राखेँ

हजुर !! यो पल्लो बस्तीमा मानिस बस्दैनन् ?

अजनबी हतारिँदै भन्छन् बस्छन् तर सबै व्यस्त छन् ।

उत्तर दिने फुर्सद नै छैन …

मेरो जिज्ञासा छँदैछ मनमा

पछि भेट्ने आशामा ….

पुलुक्क फर्की बस्तीलाई हेरेँ

बस्ती चकमन्न छ ।

के.सी. सान्दाइ

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### प्रेम दिवसको सन्दर्भमा

हर साल मिली गरुँ प्रेम-पुजा

सब कल्मष ती गरुँ नास धुजा ।

जुटि साथ दुवै एकबद्ध बनौँ

जति यूग बिते पनि धीर बनौँ ।।

सँगसंगै गरौँ सब कार्यहरू

अनि प्रेम सुधा रस-राग भरूँ ।

बन फूल तिमी म हु मालि सधैँ

फुल बाटिकमा अति सुन्दर भै ।।

बस छेउ गई मन भन्छ प्रिया

सरसेवन गर् मन भन्छ प्रिया ।

बुझ यो मनको सब बात मिठो

नगरेर ढिला बढ सामु छिटो ।।

अब दील खुला गर छेउ सरी

कर बन्धनले कस राग छरी ।

मन घायल भो तिमि हाँसि दिँदा

तन वीलिन भो तिमि नाचि दिँदा ।।

गर नेत्र खुला किन बन्द भयो

अनि ओठहरू किन मन्द भयो ।

गर ख्याल कहाँ कमि के छ प्रिया

पुछ माथ भरी पसिना छ प्रिया ।।

अब सुस्तसँगै उठि ख्याल गर

सब ठिक्क गरी अनि राग भर ।

खिल सुन्दर ती अब फूल परी

सिँच अत्तर लौ सब अङ्गभरि ।।

बन सागर झैँ अति धीर हुने

सब मानवको अनि दील छुने ।

तनको धनको सबका मनको

गर ख्याल सधैँ सब सज्जनको ।।

सबका दिलको अब सारथि भै

गर बात मिठो रुप पारखि भै ।

शिव, ब्रह्म, हरी पनि सामु भए

सब मोहित छन् तिमि सामु गए ।।

भवमा नभमा सब मानवमा

तिमि राज हुने सबका दिलमा ।

कति सुन्दर त्यो रुपको महनी

मत भन्छु सधैँ रुपकी जननी ।।

दिन रात सधैँ तिमिमा मन गै

तनले त सबै दिल अर्पण भै ।

महनी रुपको गर खेति परी

दिलको तकियातिर ढल्कि वरी ।।

खगेन्द्र गौतम

क्यानडा

#### मित्रहरू

यता भाषा जलेर निस्किएको धुवाले आकाश ढाकिएको थियो

उता बिछोडको पीडामा झरेको आँसुले देश डुब्दै थियो

कतै पौरखी हातहरूमा नेल ठोकिँदै थियो

अनि काहीँ राष्ट्रप्रेमीहरू जिउँदै गाडिँदै थिए

यो हाम्रो देशको व्यवस्थाले दिएको पीडा हो

मित्रहरू!

जिउँदा आत्माहरू जमिनमुनिबाट चिच्याइरहँदा

आफन्तहरूलाई आतङ्कवादी बनाई सीमा कटाइँदै थियो

कयौँ दिनको थकित यात्रापछि,

लाखौँ नागरिकलाई खुला बगरमा शरणार्थी भनिँदै थियो

यो हाम्रो देशको व्यवस्थाले दिएको पीडा हो

मित्रहरू!

कुनै बेला गाँस, बास अनि कपास लुटिएको

भिखारीझैँ यो जिन्दगी,

कुट्दा कुट्दै सहन नसकी बेहोसिएको बन्दीझैँ थियो

रुँदारुँदै आँसु सुकेर थाकेको बालकझैँ थियो

यो हाम्रो देशको व्यवस्थाले दिएको पीडा हो

मित्रहरू!

त यता र त उता, त पहिला अनि ऊ पछाडि,

भनी अङ्ग बाडेझैँ,

आफ्ना सन्तानहरूको भागबन्डा हुँदा,

कति रोए होला ती आमाहरू

एउटै सन्तान कहिल्यै नभेटिने गरी ,

सातै दिशा छरिँदा, कति तड्पिए होला ती मनहरू !

यो हाम्रो देशको व्यवस्थाले दिएको पीडा हो

मित्रहरू !

खगेन्द्र भण्डारी “जन्तरे”

ओहायो, अमेरिका

#### मान्छे

बोकी घमन्डको भारी मान्छे सर्छ सधैँ पर ।

खुट्टा तानेर अर्काको भिड्ने गर्छ परस्पर ।।१।।

कमिलाबाट मान्छेले सिक्नुपर्छ परिश्रम ।

एकता मौरिमा हेर त्यागे हुन्न र शोषण ? ।।२।।

फूलमा भ्रमरालाई किन लाग्दैन शासन ?

दिँदै दृष्टान्त यो मान्छे दिन्छ खोक्रा ती भाषण ! ।।३।।

आफैँ सुगन्ध बोकेर कस्तूरी पनि अल्मल ।

मान्छे अल्मल गर्दैछ बिना कारण खल्बल ।।४।।

धन-दौलतले मान्छे मान-सम्मान किन्दछ ।

त्यही सम्मानको भारी मात्र संसार ठान्दछ ।।५।।

छिचोली भीड यो हेर, ‘जन्तरे’ अघि बढ्नुछ ।

फोस्रो सम्मानमा हैन, साँच्चै शिखर चढ्नुछ ।।६।।

यात्रा कठिन पक्कै छ खोला-जङ्घार तर्नुछ ।

तान्ने हान्ने र झार्नेको भीडमा पनि बच्नुछ ।।७।।

धारिलो त्यो छुरा बोकी रामराम जपे पनि ।

अहँ पत्यार लाग्दैन चारै धाम घुमे पनि ।।८।।

किन गर्दैछ यो मान्छे अहङ्कार लुछालुछ ?

कात्रोमा हुन्न है गोजी यो एक ध्रुव सत्य छ ।।९।।

पचाउँदैन अर्काको देख्नै सक्दैन उन्नति ।

उचालेर पछार्नेकै बुन्छ तानाबुना कति ।।१०।।

आफ्नै पदीय मर्यादा थेग्नै सक्तैन किन्चन ।

अन्तै दोष थुपारेर बाटो खोज्दछ उम्कन ।।११।।

वा! वा!! क्या गतिलो भन्दै आँखा झिम्क्याइ हाँस्दछ ।

दोषी चस्मा लगाएर अरुकै दोष देख्छ ।।१२।।

केके भन्दैन यो मान्छे केके सुन्दछ सुन्दछ ।

जङ्गली माकुरा जस्तो जालो सुन्दर बुन्दछ ।।१३।।

विष विज्ञानको ज्ञान मात्रै घोकेर के छ र ?

म-भित्रको ‘म’ को अर्थ बुझे जीवन सार छ ।।१४।।

खेम खनाल

ओहायो, अमेरिका

#### कर्तव्य बिर्सिसके

बुद्धी भ्रष्ट भएर हेर अहिले हिँड्छन् कुनै चालमा

साँच्चै मानिस बिग्रिए कुलतले देखिन्छ बेहालमा

हाम्रो सभ्य समाज नै अब कतै जाँदैछ की आखिर

ढल्छन् रक्सि पिएर दुर्बल भई भेटिन्छ बाटातिर ।।

हिँड्थे सङ्गतमा पिएर पहिले बढ्दै गयो तल्तल

कैयौँ मानिस यी फसेर अहिले गर्दै गए खल्बल

पैसा धेर सकाउँछन् दिनदिनै खाए नखाने कुरा

व्यर्थै रूप बिगारियो अपचले देखिन्छ ल्याङ्ग्रा लुरा ।।

गुट्खा पान नशालु खैनिहरुमा मान्दैन केही डर

गाँजा भाङ चुरोट खाइ मजले आनन्द के मिल्छ र ?

पाटी होस् अथवा ठुला सहरमा बाङ्गा भई हिँड्दछन्

आफ्नै आब्रुक नै गुमाउन पुगे सत्धर्म के चिन्दछन् ।।

अर्ती गर्न हुँदैन आज अरूले संस्कारको के कुरा

जे जे भेट्छ उडाइ दिन्छ सहजै राख्दैन केही कुरा

ठूलै मानिस नै फसेर यसरी आफैँ बिगारे मति

आँखा चिम्म गरी दगुर्दछ भने होला ठुलो दुर्गति ।।

मत्ता हात्ति सरी भएर अहिले भन्दैछ मै हूँ विर

राम्रो बात भने कटक्क अरूको सुन्दैन ऊ आखिर

डिस्को बार हटेल गाउँघरमा भेटिन्छ ऊ दिन्दिन

आमाबाबु सधैँ रुहाइ घरमा डुल्दै हिनेको किन ।।

पानी भुल्भुल उम्रिएर सिरमा बग्दैछ उल्टा तिर

हाम्रो जातिय धर्म कर्म सकिए ढल्ने छ आफ्नै शिर

ऐले यी अधिकारका पछि कुदी कर्तव्य बिर्सी सके

छोडी जानु अवश्य पर्छ सबले कुर्लेर नै हुन्छ के ।।

अर्काकै भर कुद्न तत्पर हुने मान्छेहरू छन् कति

फर्कन्छन् कि कतै खुवाउन सके मिल्ने भए ओखती

के होला पछि यो बुझिन्न अहिले सद्भाव देखिन्न खै

पूर्वेली इतिहास नै अब कतै फर्कन्छ फर्कन्न है ।।

खेम रिजाल

ओहायो, अमेरिका

#### प्रेमयुग

तिमीलाई हृदय दिन्छु

मलाई तिम्रो साथ चाहिन्छ

ता कि म तिम्रो मायाको गर्भिणी बन्न सकूँ

युगदेखि युगसम्म, अन्त्यहीन समयसम्म

तिम्रा अनेक रूपहरूसित प्रेम गर्न सकूँ ।

ती आँखाका भाकाहरू बुझ्न

दिलका भावहरू पढ्न

प्रेमिल आलापहरू गुनगुनाउँदै

एक आपसमा पोखिएर

प्रमाण साबित गर्न सकूँ

तिमीबिना म कहिले एक्लै बाचेको छु र !

तिम्रो   
आगमनको सङ्केतले

आँधी-हुरी लरखराओस्

ढुकढुकी भरभराओस्

अनि यो कोमल मनमा

चञ्चल तनमा

निश्चित पाहुनाले राज गरोस्

ता कि म रातकी रानी भएर

निर्वस्त्र घोलिन सकूँ ।

गणपति दाहाल

ओहायो, अमेरिका

#### अर्को गुगल संसारको खोजी

मेरा औँला

माउस नियन्त्रण गर्न

निर्धक्क अघि बढ्छन्

अचानक कर्सर

गुगल संसारमा

धेरै सिमानाहरू पार गर्दै

सफल अवतरण गर्छ

हजारौँ फाइलहरू डाउनलोड हुँदै

मेरा अघि तेर्सिन्छन्

देख्छु

भयानक युद्ध तस्बिर

स्वचालित र आत्मघातीका तस्बिर

टोप र गोला-बारुदको मुस्लोले

दिशाहीन भएर रुमल्लिएका

शान्ति सम्झौताहरू

युद्धविरामहरू

दस्ताबेजहरू

हस्ताक्षरहरू

शान्तिदूतहरू

एक दुई तीन …गर्दै

फाइलहरू पल्टँदै जान्छन्

असङ्ख्य

इराकी चीत्कारहरू

अफगानी पुकारहरू

रोइरहेका प्यालेस्टाइनी बस्तीहरू

लिटल ब्वाई र फ्याट म्यानको अणुले

जलेका जापानी आत्माहरूको हाहाकार

गोला र बमले चकनाचुर तोराबोरा पहाडहरू

भरिएका छन् समाचार शीर्षकहरू

आपसी आगोले सल्किएका

रुवान्डा र हेइटीका अनुहारले

गरिबीले पिल्सिएका अफ्रिकीहरूले

जति फाइलहरू पल्टाउँदै जान्छु

उति आउँछन्

युद्धले पोतिएका सिमानाहरू

युद्धले लेखिएका इतिहासहरू

युद्धले मितेरी लाएका जीवनहरू

युद्धले जन्माएका बस्तीहरू

रगतले बनेका मिसिसिपीहरू

खरानी बनेका सभ्यताका खम्बाहरू

किंकर्तव्यविमूढ

आफ्ना पन्जाबाट

माउसको दिशा बदल्छु

अचानक "यस" र "नो"को प्रश्न

“यस”को उत्तर फुत्कन साथ

विन्डोज सट डाउन

एक गुगल संसारको अन्त्य

एक युगको समाप्ति

हेर्दाहेर्दै

आँखा रगतले भरिन्छन्

हात रगतले पुरिन्छन्

कान आवाजले भरिन्छन्

हृदय घृणाले भरिन्छ

हृदय समवेदनारिक्त हुन्छ

त्यसैले

हामी मिसिसिपी र अमाजोन

भएर बाँडिनुभन्दा

गङ्गा र नाइल भएर

छुटिनुभन्दा

एसिया र अफ्रिका भएर

टाढिनुभन्दा

प्यासिफिक र एटलान्टिक भएर

हराउनुभन्दा

पेन्टागोन र ताज भएर

भत्किनुभन्दा

मिलाऊँ हाम्रा हातहरू

जुधाऊँ हाम्रा काँधहरू

टसाऊँ तक्मा छातीहरूको

अशान्ति र अविश्वासका रेखा मेटाएर

एउटा नयाँ गुगल संसार खोजौँ

ड,र भय र त्रास मुक्त गुगल संसार

शान्ति र समृद्धि को गुगल संसार

धौ शान्ति पृथ्वी शान्ति गुगल संसार

गोविन्द लुइँटेल

ओहायो, अमेरीका

#### मान्छे

मान्छे-

एउटा ढाकर भरीको सुन्तला जति

रिस-राग,

छल-कपट,

लोभ-लाभ,

कोड्याइँ -घमण्ड आदि बोकेर

सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रगति चाहन्छ

अरूको भलो नै आफ्नो भलो भन्दै हिँड्छ ।

मान्छे-

नराम्रो कुरा हावाले भ्याउन्जेल उडाउँछ

राम्रो कुरा बल गरेर सकेसम्म तुहाउँछ

ऊ असल बन्न खोज्छ अरूलाई सताएर

ऊ मानवसेवी हुँ भन्छ मानवलाई छक्क्याएर

कहिले गीत गाउँछ शब्द नचाउँदै

कहिले खुब नाच्छ ताल बजाउँदै

मन-मनै सोच्छ- संसारभन्दा मैँ ठुलो

किन कि हर्ताकर्ता मैँ हुँ

सीमा भित्रका मेरा हुन्छन्

अरू सबै तड्पिएर कुहुन्छन्

तर बिचरालाई थाहा छैन

सत्य र असत्य

जीवन र मरण

दैव, प्रकृति र मानव भिन्न छ भनेर !

मान्छे-

सुनमा सुगन्ध छर्छ  छलेर

पलाशमा बास्ना भर्छ  जलेर

खोइ कसरी र किन हो ?

जल, थल, नभ

आफ्नै सम्पत्ति भन्छ

स्वर्ग देखेको छु भन्छ

नरक जानेको छु भन्छ

आमाकै गर्भबाट जन्मेका

खोइ कसरी भिन्न ऊ ?

कसरी भिन्न म ?

गंगा अधिकारी

एडिलेड, अस्ट्रेलिया

#### मेरो प्यारो सन्देश

लैजाऊ पवन मेरो कथन, मेरो प्यारो सन्देश बोकी

सुस्त-सुस्त चलिजाऊ, ठेस कतै लाग्ने हो कि।

शीतल स्पर्श दिनू तिमी, उसको नजिक कतै लुकी

उसलाई बताऊ मेरो कथा, अनि सन्देश सबै बोकी ।।

उसको माया अनि याद, मुटु माझ छिपाइराखी

हरेक साँझ हर-बिहान, बस्छु उसकै नाम जपी ।

दोबाटोमा उसकै यादमा, दिन बिते आज कति

सुनाऊ पवन उसलाई मेरो, सम्झना र प्यार जति ।।

नसोचोस् है कहिल्यै मैँले, उसको माया लाएँ लात्ती

बिर्सेँ होला उसलाई कतै, पराइसँग मुटु साटी ।

सुम्पिदेऊ पवन उसलाई, चोखो मुटु मेरो दैव भाकी

फर्किआऊ पवन मलाई, उसको सन्देश सबै बोकी ।।

गङ्गाराम रिजाल

टेनेसी, अमेरिका

#### विपत्तिको बादलले ढाकिदियो !

भयो जाहाँ ताहाँ जगत सबमा त्रास बनियो !

अती कालो बादल सरी भुँवरी भै रोग खनियो !!

सबै ती निर्दोषी मनुजहरू रुन्छन् दिन-दिन !

अकस्मात् हा दैव ! बनिकन गयौ निर्दयी किन !

विनाशी कोरोना भईकन रह्यो नामकरण !

उनै ईश्वर जानुन् अब पनि कति हो नि मरण !!

जता फर्क्यो सारा त्रसित सब छन् छैन नि भर !

पुकार्दैछन् तड्पी जसरी अब रक्षा हरि गर !!

हुँदो हो यो ज्ञान समय अघि नै दैविक गति !

बनी संयम् हामी स्तुति गरी दिनेथ्यौं शुभमति !!

अनि बन्थ्यो होला सुदिन भवमा ज्ञान र कला !

कठै ! ती आत्माले रहिकन हुँदा हुन् कति भला !!

निकै पीडा चर्क्यो कठिनसॅंगले श्वास भरिने !

हुँदा यस्तै चाल क्षणपछि न वा ! हो कि मरिने !!

भनि गर्छन् बिन्ती कुशल जब ती वैद्य सबमा !

दिवाकरमा भर्छन् नयन अति कोमल ती नभमा !!

उता जुट्छन् वैद्य हरघडी सबै सेवक अनि !

गरौँ रक्षा चाँडै भनिकन दिने औषधि पनि !!

मलम् पट्टी गर्ने विपद घडिका दु:खि मनको !

नमन् गर्दै सारा भुवन भरका देवजनको !!

विपत्तीको बेला अति कठिन मृत्युसॅंग लडी !  
दिई जीवन नौलोपन थपिन गो लौ यस घडी !!  
सुखी हुन् ती वीर तन हृदयका सागर सरी !  
कृपा बन्दै जाओस् सुजनहरूको जीवन भरी !!

कठै कस्तो ! कस्तो ! तनमन सबै घायल भयो !

अकस्मात् हा दैव ! किन यति छिटै जीवन गयो !!

भए आधा कोही घरजन छुटे सन्तति अनि !

बन्यो घातक यस्तो कति हुन गयो लौ दुःख पनि !!

हुँदा सङ्कट जैले कति पनि नबन्नु विचलित !

खुसीले बोल्दीनू मनहृदय हाँस्दै सबसित !!

सहाराको झोली भरिकन दिनेछन् गुणी जन !

सबै हाम्रा ज्योति अति मृदुलभाषी धनी मन !!

गरी नित्यै वेद स्तुति पठन सारा हित गरौँ !

सबै रोगी मन्मा अमृतमय वाणी पनि भरौँ !!

तिनै डाक्टर गर्छन् मन वचनले मानव हित !

भयो यै हो धन्य परमहित गर्नु सबसित ।।

यही आशा हाम्रो रहिकन अहोरात्र तिनको !

नमन् गर्छु सेवा अविरल पुगोस् दु:खि मनको !!

दिवंगत आत्माको चिर सुखी बनोस् दिव्य गमन !

दिएँ भावुक बन्दै मन वचन श्रद्धाञ्जली !!

गंगा लामिटारे

ओहायो, अमेरिका

#### त्यहाँ के हुँदैन ?

त्यहाँ के हुँदैन ?

बन्दुक पड्केपछि रमाउँछ शान्ति

उग्र राष्ट्रवादको आगो ओकलेपछि

बग्छ राष्ट्रिय खुसीयालीको हुन्डरी

चाबुक हानेपछि

लुरू लुरू हिँड्छ वायु पनि !

ब्यारेकमा बुट बजेपछि

गाउँमा चर्किन्छ, कोलाहल,

हाहाकार र चित्कार ।

त्यहाँ के हुँदैन ?

चावासुमको\* पुल्ठो झोसेपछि

मौनतामा डुब्छ मानवता

सयपत्रीमाथि निर्दयी बुट बजारेपछि

जल्छन्, संस्कृति र स्वाभिमानहरू ।

त्यहाँ के हुँदैन ?

सत्ताले क्रूरता उगेलेपछि

त्यहाँ मच्चिन्छ,हिंसाको ज्वारभाटा

शान्तिको टाउकोमा बम वर्षाएपछि

रक्ताम्मे बग्छन्, नदी-नालाहरू

जनताको रगतमा होली खेलेपछि

निर्जन बन्छन्, गाउँ, बस्ती र सहरहरू !

वासनाका ओठबाट विषालु राल झरेपछि

लुटिन्छन्, दिन दहडै निर्माया र लच्छीहरू

जताततै सुनिन्छ,बलात्कारका चित्कारहरू !

निर्भय डुल्छन्, मानवताका भक्षकहरू !

त्यहाँ के हुँदैन ?

सिंहासनको गर्जन सुनेपछि

हुन्छ दानवताको महोत्सव

हुन्छ मानवताको चीरहरण

हुन्छ चिच्याहट, हत्या र हिंसाहरू ।

\* देश, जनता र सरकार

घनश्याम रेग्मी

ओहायो, अमेरिका

#### **गङ्गा-स्तुति**

 हे गङ्गे ! जब स्वर्गदेखि तिमिले आएर पृथ्वी तल

सारा मानिसलाई मुक्ति दिनमा गर्दै सदा तत्पर ।

तिम्रो दर्शन गर्न यात्रि जनले आएर गोता लिई

फिर्दामा पनि सम्झने हर बखत् मुक्ती दिने हुन् भनी ।।

राम्रो नाम छ दूर राष्ट्रहरूमा यी मातृ गङ्गा भनी

प्रातः काल उठेर स्नान गरिँदा सर्वस्व पाप् नाशने ।

जै गङ्गे ! भनि पूर्वजादि मुनिले तिम्रै शरण्मा परी

गर्थे दिव्य पुकार सुन्दर तिमी संसारकी सारथि ।।

झर्ना रूप पहाडको शिखर नै सर्वत्र ढाकीकन

छाडी स्वर्ग झर्‍यौ नि भूमितलमा देखेर पापी जन ।

धेरै ताप पर्‍यो भनी सगरमा राजा भगीरथ् सँग

आयौ श्री शिवका शिरोपर हुँदै भागीरथी भैकन ।।

प्यासी प्यास बुझाउने तरहले निस्की अनेक् धाममा

इच्छापूर्ण गरेर फिर्छ जनता पाएर नै सान्त्वना ।

शक्ती भारतको र देश सबको सम्झेर भित्री मन

सेवा खातिर धर्म राख्न नरको आयौ नदी रूपमा ।।

लज्जाको पनि ख्याल रत्ति नगरी दुर्गन्ध गर्छन् तर

उल्टो पाप पखाली शुद्ध गतिले बग्छ्यौ तिमी सल्सल ।

तिम्रो वेग त टुङ्गिँदैन बिचमा जान्छ्यौ तिमी सागर

गर्थे रे ऋषि मन्त्र सिद्ध तटमा तिम्रै लिई आदर ।।

तिम्रै नाम लिएर गर्छ जन जो यो काम गर्छू भनी

त्यस्लाई पनि शान्त हुन्छ दिलमा पापै गरोस्ता पनि ।

सानो काम बिचारी सिद्ध जनले हे मात मै हूँ सुत

भन्नेलाई सरक्क दान दिनमा हुन्छ्यौ सदा फुर्सद ।।

स्वर्गैमा पनि देवता मिलिजुली तिम्रो भजन् गर्दछन्

गङ्गा नाम सुनेर देश कति ता आनन्दमा पर्दछन् ।

देवी हौ तब दिव्य तेज बलले आएर पृथ्वीतल

यो नौकासरि देह पार गरने भारी लियौ गौरव ।।

नीलो बादल रड्ड धार बिचमा धारा प्रवाहीतको

नौका चालक देखि बुद्धिजनले चर्चा गरी धर्मको ।

सेता हंस ढलक्क तीरतलमा शोभा भएको कति

आमा हुन् सरि शान्त हुन्छ मनमा यो विश्व ब्रह्माण्डको ।।

टल्कन्छन् रवि मोतीझैँ किरणले मध्यान्हमा टल्टल

जो–जस्ता जतिमस्त छन् लहरमा स्नानादिका खातिर ।

जै–जैकार लगाई दर्शन गरी भन्छन् इ हुन् सागर

झट्टै पाप पखाली लोक सबको हे मात ! रक्षा गर ।।            

चरण बजगाईँ

भर्जिनिया, अमेरिका

#### मेरो टोपी नझिक

मैले महँगो किनेको ढाका टोपी यो

मेरा पूर्वजहरूको बलिदानको चिनो

कृपया नेपाली टोपी फुकाऊ नभन

मेरो भाषा र संस्कृति अपरिचित नगन

मेरा अग्रज नेपालीत्व लिएरै मरे

मेरा भावी पिँडीलाई चाहिन्छ यो भरे

त्यसैले म नेपालीबिच नभए को त ?

नेपालीत्व बचाउनै मेरो यो हाल भो त

आमाको महत्त्व काखमा बस्नेलाई के थाहा

छलिएर जङ्गलमा चिच्याउँदा महसुस हुन्छ जहाँ

त्यसैले ममा पागल पन नरोप वीर नेपाली

मेरो टोपी मेरै हो यसको स्वामित्व छैन खाली

सिमाना पारी पनि दाजुभाइ हुन्छन्

भिन्न कागजातमा पनि भाषा झल्किन्छन्

त्यसैले अब म को एउटै संस्कृति र भेष

नेपाली भन्नलाई संस्कृति-भाषा कि देश?

मैले गौरवशाली काम गरे नेपाली चिन्दछ

मैले दुर्नाम चलाए उही नेपाली जान्दछ

त्यसैले जोगिँदैनौ केही गरेर हैन भन्दैमा

तिम्रो रङ्ग रूप फेरिँदैन धनी बन्दैमा !

छत्र दंगाल

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### आँसु

कहिले बिछोडको जलनमा

कहिले वेदनाको रापमा

कहिले मनको वहमा

कहिले प्रेमील आलिङ्गनको न्यानोपनमा

कहिले मिलनको उल्लासमा

जीवनका हिम ढिक्काहरू पग्लँदा

बहन्छ आँसु ।

उदेकको नाता जीवनसँग जोडेर

हरपल साथ जीवनभर रहेर

मृत्युको विजयी घडीमा आफू

सुटुक्क प्रियजनको आँखामा बसाई सर्छ ।

कहिले हिमनदी जस्तै अविरल

कहिले खहरे झैँ क्षणिक

कहिले शान्त तलाउको निर्मल अविचलित जल झैँ

फरक परिवेशमा फरक आकारमा प्रस्तुत हुन्छ ।

निर्झर बनेर कहिले

झर्दै परेलीको मुहानबाट

छातीमा खस्दा

वेदनाका छालहरू हुत्तिन्छन्

फेरि ज्वालामुखीका लाभा भएर कहिले

बग्छन् मुटु जलाएर

भक्कानो फुटाएर

सायद

त्यसैले होला गह ताल

यत्ति गहिरो भएको

मरियाना ट्रेन्च जस्तै

सायद

त्यसैले होला आँसु

यत्ति नुनिलो भएको

विशाल जलधि जस्तै ।

छत्रपति फुएल

दोरोखा, भुटान

#### कटुसका काँडा !

हाम्रो प्रेम संसार मै उदाहरणीय थियो

अहारिसे छिमेकीले बिखै घोली दियो

खै के भनौँ !

तिमी! विवेकरहित दुर्बुद्धिले पिसिएका बेला

मैले पनि तिम्रो सान्निध्य चाहेको थिएँ हुँला ।

तर…

अब त मलाई

काँडाघारी हिँड्ने बानी परिसक्यो

तिमी कुचो लाऊ नलाऊ

कटुसका काँडा पैतालाले चिनिसक्यो ।

तातो फिलुङ्गो मुखमा राखेर मुस्काएको छु

चितामा पिसोल्टिएर जिउँदै फर्किआएको छु

लौ हेर !

मेरै भाग्यले मैसँग औधी कुक्कु खेलेको छ

सयौँ पटक मृत्युले धाकधक्कु लाएको छ ।

तर…

अब त मलाई

काँडाघारी हिँड्ने बानी परिसक्यो

तिमी कुचो लाऊ नलाऊ

कटुसका काँडा पैतालाले चिनिसक्यो ।

काँडा ओछ्याउँदैमा बाटो असजिलो हुन्न

पोखरीमा जमेको पानी गतिमान् हुन्न

किन होला !

हाम्रो प्रणय विकसित नहुँदै अवरोध आयो

निर्ममता मै ममता खोज्नु नियति भयो ।

तर…

अब त मलाई

काँडाघारी हिँड्ने बानी परिसक्यो

तिमी कुचो लाऊ नलाऊ

कटुसका काँडा पैतालाले चिनिसक्यो ।

तिमी मेरो बस्तीमा जति चिहान बनाऊ

बस्तीभरि नै गिद्धका बसेरा ठड्याऊ

म त !

टोर्नेडोलाई पनि चिरेर जान सक्ने स्वर हुँ

हत्केलामा फिलुङ्गो बोकिहिँड्ने समसेर हुँ ।

तर…

अब त मलाई

काँडाघारी हिँड्ने बानी परिसक्यो

तिमी कुचो लाऊ नलाऊ

कटुसका काँडा पैतालाले चिनिसक्यो ।

रोक्छौ भने तिम्रो कुत्सित जालोले रोक

सक्छौ भने आँधीको बिजुलीलाई छेक

मचाहिँ !

तिम्रो हरेक अवरोधलाई सहजै पन्छाएर

ठुङ्नेछु दुष्ट टाउकामा बञ्चरो उध्याएर ।

तर…

अब त मलाई

काँडाघारी हिँड्ने बानी परिसक्यो

तिमी कुचो लाऊ नलाऊ

कटुसका काँडा पैतालाले चिनिसक्यो ।

तिमी फूल निमोठेर काँडाको धराप थाप्छौ

फूल थाप्नुपर्ने थाप्लामा सराप थाप्छौ

याद गर एक दिन !

त्यही धरापले तिम्रा तिखा काँडा मठुर्नेछन्

धरापका ढुङ्गा खसेर तिमीलाई भकुर्नेछन् ।

तर…

अब त मलाई

काँडाघारी हिँड्ने बानी परिसक्यो

तिमी कुचो लाऊ नलाऊ

कटुसका काँडा पैतालाले चिनिसक्यो ।

एउटै फूलको मात्रै बगैँचा बनाउने तिम्रो सोच

इन्द्रेणीमा पनि एउटै रङ हुनुपर्ने तिम्रो बोध

ख्याल राख !

मानवको नजरमा बेफ्वाँकको हास्यास्पद भो

त्यही निर्णय तिम्रा लागि कुना पस्ने बाध्यता हो ।

तर…

अब त मलाई

काँडाघारी हिँड्ने बानी परिसक्यो

तिमी कुचो लाऊ नलाऊ

कटुसका काँडा पैतालाले चिनिसक्यो ।

तिम्रा हजार अवरोधले पनि बारीमा फूल फुलिरहे

बदल्न नसकिने प्रकृतिमा निर्धक्क भ्रमरा झुलिरहे

त्यसैले अब तिमीलाई !

हत्केलाले सूर्य छेक्न गाह्रो पर्ला प्यारे

प्रेमका अघि संसारका तानासाह त हारे ।

तर…

अब त मलाई

काँडाघारी हिँड्ने बानी परिसक्यो

तिमी कुचो लाऊ नलाऊ

कटुसका काँडा पैतालाले चिनिसक्यो ।।

जगेन गौतम

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### जीवन र भोगाई

आफू अलि पर उभिएर

आफैँलाई हेरेँ,

भोगाइ र सङ्घर्षको आँधीले

जीवन नै थकित भइसकेछ

तै पनि अझै अपुरो नै छु

दुई पाइला हिँड्नु

धेरै सङ्घर्ष होइन रहेछ

गुलाब टिप्दा

केही काँडाहरूले घोच्नु

त्यति अथक भोगाइ होइन रहेछ

मलाई त लग्थ्यो,

भोगाइ र सङ्घर्षलाई अङ्गालेर

धेरै टाढा पुगेँ भनेर

तर,

ती सबै सोचाइ र भावनाहरू

निरर्थक भए

ऐले त लाग्छ,

जीवनको अन्तिम अवस्थामा पनि

म मेरो लक्ष्यसम्म पुग्दिन कि ?

कता-कता भय र त्रासको आँधीले

मन कटक्क खान्छ

तर,

मन फेरि दह्रो भएर आउँछ

अनि सान्त्वना दिन्छ

“निडर भएर आफ्नो कर्तव्यमा

लागि पर्,

तेरो जीवनको शब्दकोशमा

भय र त्रास भन्ने शब्द हुनु हुँदैन ।”

अनि,

नौला सङ्कल्पहरू

बिचारहरू

अनि लक्ष्यसम्म पुग्ने बाटाहरूको

पुनर्जन्म हुन्छ मेरो मस्तिष्कमा…..!

जय हुँमागाई

क्यानडा

#### कलम

हेर्दामा राम्रो कलम मेरो, प्यारो छ मलाई

लर्तरो छैन यो होचो होइन, घुमाउँछ मलाई ।

छातीमा बस्छ सटको टाँक मास्तिर सजाउँछु

गोजीमा बोकी छातीमा टाँसेँ उत्तिकै रमाउँछु ।।

सानु छ आकार हल्का छ बोक्न किन यो नबोक्ने !

बोकेर हिँड्दा साथमा जहिले क्यै भारी नपर्ने ।

ठाउँमा परे इज्जत बढ्छ, धन धेरै नचाइने

सुन्दर राम्रो शोभा नै दिन्छ, मन त्यसै रमाउने ।।

सानुमा सानु कलम मेरो हातले चलायो,

औँलाले च्याप्छ कागज माथि अक्षर बनायो ।

हातमा कलम चलेको देख्दा मन मेरो रमायो

यी तिनै अक्षर जोडेर मनले कविता बनायो !!

राखेर हात छातीमा आज यो बोली बोल्दछ

गोलीलेभन्दा भरपर्दो काम कलमले गर्दछ ।

मुस्किलले थमाई जोडेको सन्धि गोलीले तोड्दछ

कलमले गरे त्यै कामलाई सम्बन्ध जोड्दछ ।।

बलकोभन्दा कलमको तागत तेजिलो देखिन्छ

मनको कुरा कागजमा ल्याई भन्न नि सकिन्छ ।

पहिलेको जस्तो शासन होइन स्वतन्त्र चाहिन्छ

शान्तिकोलागि बन्दुक होइन कलम नै चाहिन्छ ।।

सामाजिक विकाश देशको माया कलमले जोड्दछ

गरिबी घेरा सामाजिक भेदभाव यसैले तोड्दछ ।

कलम बोकी स्कुल जान त्यो बाटो देखाउँछ

शिक्षाको ज्योति छरेर सुन्दर नाम त्यो लेखाउँछ ।।

खान र लाउन झुपडी बास यतिले पुग्दैन

सुन्दर जीवन यापन गर्न कलम लुक्दैन ।

यो कलम वीर शिक्षा हो शिर अन्धकार हटाउने

जगाउँछ सारा जगतलाई विश्वलाई चिनाउने ।।

जलन भण्डारी

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### मरुभूमिको यात्रा

भूटान, भारत, नेपाल र अस्ट्रेलियासम्मको

लामो यात्राको अथाह थकान मार्न

एड्लेड ओभलको प्राङ्गणमा बस्दा

मैले यो बजारलाई रित्तो र मरेतुल्य पाएँ ।

मेरा हरेक यात्राहरूपछि

यसरी नै यो मैदानमा पुग्छु

आउने-जाने, आउने-जाने क्रम जारी छ

लाखौँ हजारौँको भिडमा मलाई एक्लो पाउँछु ।

यो मरुभूमि बिचको भ्यागुते कुवामा

म सङ्घर्षरत बाँच्न खोजिरहँदा

थापेको रित्तो अँजुली

कोनि किन हो रित्तै फर्कन्छ ।

हो, म सङ्घर्ष गरिरहेछु

आशा र उमङ्गलाई मरुभूमिमा रोपिरहेछु

अनि आशा र उमङ्गका पखेटालाई

कल्पनाको धागोले गाँसेर जिउन खोजिरहेछु ।

म मेरो थकानपछिको प्यास मेट्नलाई

मरुभूमिको यात्रा पूरा गर्नलाई

हरेक आँसुका कथा व्यथाका साथ

एउटा असम्भावित अनुरोध गर्छु ।

कुवा ! म त जीवन सङ्घर्षमा हिँडेको

यो मरुभूमिको एक्लो यात्री हुँ

मलाई तिम्रो एक प्याला पानी पिलाएर

मेरो यात्राको दुरीसम्म साथ देऊ ।

जितेन खड्का

टेक्सास, अमेरिका

#### मान्छेको मन !

मान्छेको मन

धमिलो खोलाको

उर्लेर बग्ने

भेल जस्तै हो ...

कहिलेकाहीँ स्वच्छन्द बाडी भएर

भत्काउन र पुर्न सक्छ मनको बाँध

बुलन्द आवाज गर्छ

थर्काउँछ सेरोफेरो

उन्मादको झरी लागेसम्म ........

मान्छेको मन

धमिलो खोलाको

अनपेक्षित गहिराई जस्तै हो ....

कहिलेकाहीँ मनको अन्तस्तललाई

भित्र-भित्रै खोल्न र खोतल्न सक्छ

क्लेश र द्वेषलाई

एक-आपसमा अक्षुण्ण जुधाएर

बुलन्द आवाज गर्छ

थर्काउँछ सेरोफेरो

आवेगको झरी लागेसम्म.........

मान्छेको मन

धमिलो खोलाको

सतह जस्तै हो.....

कहिलेकाहीँ मनको किनारामा अवस्थित

संवेदना र वेदनाका थुम्काहरूलाई

स्नेहको छालले घरीघरी चुम्छ

बुलन्द आवाज गर्छ

थर्काउँछ सेरोफेरो

अनुरागको झरी लागेसम्म.........

मान्छेको मन

धमिलो खोलाको

वेग जस्तै हो....

कहिलेकाहीँ मन भँगालिएर एक्लै बग्छ

छोड्दै जान्छ पुरानो बाटोको यादहरू

कहिलेकाहीँ फेरि समेटिएर बग्छ

मनदेखि मनहरूसम्म

पुग्नलाई एक प्रस्थान बिन्दु

बुलन्द आवाज गर्छ

थर्काउँछ सेरोफेरो

जीवनको झरी लागेसम्म.........

जितेन ‘मुस्कान’

झापा, नेपाल

#### बन्दीको डायरी

म बन्दी भएको बेला,

अखबारको आँगन हुँदै,

गुगलको गाउँसम्म उदांगिएको थिएँ,

अनुहारमा पोखिएको थियो आरोपहरूको औँसी,

चारै दिशा पिरामिडझैँ उभिएका थिए उजुरी पत्र ।

प्रश्नै प्रश्न लिएर,

तीरझैँ आएका थिए प्रहरी प्रशासन,

छातीमा बुट थापेर,

चट्टानझैँ उभिएको थिएँ,

भिजेर रगतले लाल-लाल, भएको थियो शरीर ।

मुड्कीले रोटीझैँ फुल्लिएर,

डाँडा भएको थियो चेहरा,

जीवनको एकाध पन्नामा,

हनाइयो अन्धाधुन्ध ल्याप्चे,

स्विकार्दै अपराधी अभियोग,

यसरी हिरासतबाट बनाइयो खुँखार अपराधी,

र, चलाइयो मुद्दा ।

बिना सूचना, बिना पक्राउ पुर्जी,

बनाइयो बन्दी, अपराधी गिरोह, विद्रोही,

र अझ बनाइयो आतंकारी !

प्रहरी भ्यानबाटै हुत्त्याइयो कैद-कक्षमा,

उफार्दै उपियाँ रातभर टोकाइयो,

गलामै रेटियो दर्दनाक चित्कार ।

शासकहरूलाई छाडा छोडेर,

मेरो जीवनको ढोकामा तरबारझैँ उभिए न्यायालय,

आत्महत्या गर्न उकास्दै आए सुरक्षालय,

मृत्यु अलाप्दै आए आपत्ति,

सजाय फलाक्दै आयो बकपत्र,

थुन-छेक हुँदा इजलासमै भेटाएको थिएँ,

पुर्पक्षको आँधी र पठाएको थियो कारागार ।

जिन्दगीले बाटैमा हराएको थियो धरौटी,

अदालतमै गुमाएको थिएँ उज्यालो न्याय,

यसरी फैसलामा आजीवन कारागारको दण्ड भेटाएर,

गुमनाम गुमनाम भएका थिए जीवनका जिजीविषाहरू ।

यो न्यायाधीश किन नाक हेरेर बर्साउँछ दण्ड,

किन सुकुम्वासी बनाउँछ हरण गरेर पसिना सम्पत्ति,

अदालतले किन जफत गर्दै हिँड्छ,

मेहनतले कमाएको जिन्सी,

यही समयमा मलाई कारागारमै सुनाइयो,

बाबाको सुसाइडल नोट,

बलात्कृत आमाको अन्तिम पत्र,

र देखाइयो कुमारी बहिनीको,

नग्न नग्न तस्बिरहरू !

अपहरण गरेर कुमारी सपना,

डल्लै जीवन फिरौती माग्दै हिँड्थे,

ब्ल्याकमेलिस्टका हुलहरू ।

मलाई कारागारमा अलपत्र छोडेर जाने फूलहरू,

बर्खे झरीले ठटाएको कर्कटपाताझैँ,

गल्ली गल्लीमा हल्ला मच्चाउँथे ।

क्याबिनमा यौवन किनेझैँ,

खुलेआम प्रहरी किन्दथे !

यही पल कारागारमा तनाव लिएर आएको सूर्य,

भोक छाडेर अस्ताउँथ्यो ।

गोधुली साँझ नहुँदै,

अन्धकार वर्तमान बिथोल्थ्यो ।

रातभर सपना बिगार्थ्यो ।

प्रियशीले पठाएको हिक् हिक् बाडुली,

जीवनको मरुभूमिमा खुसी हराएझैँ हराउँथ्यो ।

यही दिन हो भीडहरूमा,

मैले आफन्त खोज्दै बगेको,

यही दिन हो मेरा साथीहरूको हृदयमा,

सहानुभूति हराएको,

यही दिन हो प्रियजनहरू,

हेर्दा-हेर्दै बेखवर बेखबर भएको,

यही दिन हो मैले दुनियाँको,

असली अनुहार भेट्टाएको,

यही दिन हो मैले,

पीडाको पर्वत बोकेर छापामार कवि भएको !

जे एन दाहाल

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### बन्द ढोका

पूर्णिमाको एउटा रात

ऊ घर अगाडिको बलेँसीमा उभिएर

आकाशमा मध्यरातको जून हेर्छ र भन्छ:

एउटा ढोका पूर्वमा सधैँको लागि

बन्द भएको छ

सम्भवतः खुल्दैन फेरि कहिल्यै ।

म उसको भावको गहिराइमा डुब्दै

उसकै सामुन्ने उभिन्छु

र ठिक विपरीत दिशा लक्षित गरेर हेर्छु

जूनको प्रकाशमा

म त्यस्तै अर्को ढोका खुलिसकेको देख्छु

खोइ कुन्नि किन ऊ बन्द ढोका मात्र देख्छ !

ढोका

त्यो ढोका..

ऊ बरबराउँदै गर्दा म सोच्न लाग्छु

सायद यस्तो दृश्य

उसको आँखाले नदेख्दो रहेछ

मनले नटिप्दो रहेछ ।

ऊ अझ छटपटाउनु अघि

बेचैन भई थप तड्पनु अघि

त्यहाँको परिवेश बदल्दै

म उसको आँखाको चस्मा फुकालिदिन्छु

र त्यही आकाशतर्फ इसारा गर्छु

हँ… ऊ त्यो दृश्य हेर्दै आँखा मिच्छ

र भन्छ:

किन म पूर्वकै ढोका मात्र पछ्याउँदो रहेछु !

झगेन धिमाल

मेलवर्न, अस्ट्रेलिया

#### गुनासो

जति हार गुहार गर्नुहोस्

जति आँसुका खोला बगाउनुहोस्

अझै चिच्याउनुहोस्, अझै कराउनुहोस्

गुनासो शब्द नै काफी छ,

तपाईँ सुनाउनुहोस्, म नसुने झैँ गर्छु

अझै पीडा देखाउनुहोस्, म नदेखेझैँ गर्छु

मलाई तपाईँको गुनासो सुन्ने र पीडा हेर्ने फुर्सद छैन ।

ती काखहरूमा पौडिने मेरा ती रहर

ती अँगालोहरूमा बेरिने मेरा ती चाहना

सँगै हिँड्ने, सँगै खाने, सँगै खेल्ने मेरा ती सपना

त्यो बेलाका ती सपना, त्यही बेला बिपना भइदिएको भए

म कति भाग्यमानी हुन्थेँ होला !

तर, तर ती मेरा अधुरा सपनाहरू

कसरी म आज पूरा गर्न सकूँ ?

ती छातीमा धड्किने धुनहरूमा निदाएझैँ गर्ने बहाना

काँधमा बसेर टाउकोमा ठुँग हान्ने मेरा चाहना

घुर्क्याउने, दंग्याउने, जिस्काउने मेरा ती सपना

त्यो बेलाका ती सपना, त्यही बेला बिपना भइदिएको भए

म कति भाग्यमानी हुन्थेँ होला !

तर, तर ती मेरा अधुरा सपनाहरू

कसरी म आज पूरा गर्न सकूँ ?

हो, हो त्यो बालापनमा यी सब सोच्न सकिन

मन त च्वास्स घोचेकोथ्यो, तर देखाउन सकिन

त्यो माया पाउनबाट ठगिएको मान्छे म

जबरजस्ती सम्बन्ध टुटाइएको मान्छे म

तर, तर सक्दैन यो मन त्यही काण्ड दोहोर्‍याउन

म जस्तै मेरा सन्ततिलाई रुवाउन ।

सम्बन्ध के हो तपाईँले छुट्ट्याउन सक्नु भएन

भगवान को हो तपाईँले चिन्न सक्नु भएन

तर मलाई यति गर्व छ कि

म कहिल्यै ‘तपाई’ बन्न सकिन

किनकि.. किनकि मेरा निर्दोष सन्ततिलाई

मेरै पीडाको खोल ओढाउन म चाहन्न ।

मलाई, मलाई एक दिन यी सब सुनाउनु थियो

दिन सबको आउँछ भन्ने महसुस गराउनु थियो

तपाईँले हिँडेको बाटो म हिँड्न सक्दिन

साँच्चै हो, म कहिल्यै ‘तपाई’ बन्नै सक्दिन

त्यसैले, त्यसैले म सधैँ तपाईँको सेवा गर्छु

विश्वास गर्नुहोस् म सधैँ तपाईँको पूजा गर्छु ।

थाहा छैन तपाईँलाई कतिको याद आउँछ

तर बाबा ! मलाई हजुरबाको साह्रै याद आउँछ ।

जब हजुरबाले मलाई देख्न परैबाट चियाउनु पर्थ्यो

म वहाँको आँखाभित्र मेरो तस्बिर प्रस्ट देख्थेँ

वहाँका हातहरूले मलाई सुमसुम्याइरहेको भेट्थेँ

अनि वहाँको आत्माले मलाई बोलाइरहेको सुन्थेँ ।

हो बाबा, तपाईँकै कारण म वहाँ नजिक हुन सकिनँ

मैले त्यो क्षण वहाँसँग बिताउन सकिनँ

सबैका नाति(नी)हरू आफ्ना हजुरबासँग रमाउँदा

मैले त्यो पल वहाँसँग बिताउन सकिनँ

अनि जब यी सबको बाधक तपाईँ भन्ने बुझेँ

मैले म जतिको अभागी कसैलाई सम्झनै सकिनँ ।

त्यसैले बाबा… मलाई माफ गरिदिनुहोस्

तपाईँले देखाएको बाटो म हिँड्न सक्दिनँ

आवेगमा केही गल्ती बोले माफ गर्नुहोला

चित्त सबैको दुख्छ, सायद दुख्यो होला

पोखियो शब्दहरू मनमा थाम्न सकिनँ

फुट्यो भक्कानो आँसु रोक्न सकिनँ ।

त्यसैले जानुहोस् बाबा… जानुहोस्

नाति तपाईँलाई पर्खिरहेको छ ।

हो बाबा ऊ तपाईँ कै प्रतीक्षामा छ

ऊ बाटो हेरिरहेको छ ।

टि.आर.राई (आँशु)

मिसौरी, अमेरिका

#### जीवनको एकक्षण

कहाँ-कहाँ के के काफी बोलेँ

नाना थरीका कुराहरू स्पष्ट बोलेँ

धेरै भाषण गरेँ, गफ छाटेँ

गीत गाएँ फेरि कविता पनि बाचेँ

भएको-नभएको मिलाईकन सबै नै समेटेँ

यस्तै के के धेरै नै गरेँ

रङ्गमञ्चमा नाटक खेलेँ

शेक्सपियर र मार्लोको कामलाई सलाम गरेँ

एक्लै गुनगुनाएँ, तनावमा उत्तिकै मुरमुराएँ

खरीपाटी, मार्कर, कलम र कापीहरू समातेँ

सूत्रहरू र सम्बन्धहरूको बथानमा हात हालेँ

कैयौँ रसायनहरू र भौतिक उपकरणहरूसँग खेलेँ

कैयौँ तिनीहरूको बारेमा अलापेँ

विद्युत जडानदेखि डिजाइन र कम्प्युटरको

प्रोग्रामिंग भाषाहरूलाई एक-एक गरी सम्हालेँ

ठट्टा गर्दै अरूलाई हसाएँ

प्रशासक हुनसम्म भ्याएँ

फेरि कसैलाई पटक पटक रुवाएँ

यस्तै समयानुसार, अनुशासनानुसार बुझाएँ

तर्क र विवादहरूको पैरोमा उभिएँ

चट्टान भएर प्रकोप हुनबाट जोगाएँ

आफ्नै ढङ्गको काम कर्तव्यहरू सम्हालेँ

त्यसको लागि प्रशस्त तर्कहरू जगाएँ

जन्म-मरणको औधी कार्यक्रमहरू भ्याएँ

कुनै बेला आफ्नै परिवारको खट्पटिमा उभ्याएँ

जीवनको कति रमाइलो क्षणलाई हराएँ

कहिले बिमारीको सिकिस्तपनलाई अङ्गालेँ

सन्ततिहरूलाई घरी-घरी उपदेश फलाकेँ

फूल रोपेँ, फुलाएँ र सुगन्ध बाँडेँ

अरूलाई टिपी शिरमा लगाइदिएँ

जीवनको रङ्गिन सपनाहरू पनि सजाएँ

कसैको मनमा अनावश्यक शङ्का जमाइदिएँ

अरूमा मान-सम्मान र कदरको बोट रोपिदिएँ

कसैको प्रीतको तृष्णा मेटाइदिएँ

अनि त मायाको सागर जमाइदिएँ

कतिको भविष्य पनि बनाइदिएँ

अरूकैलागि पनि गाली खानुसम्म खाएँ

धेरैको गाली खानु नै मैले अम्मल बनाएँ

तसर्थ गाली नखाँदा म नरमाएँ

आफैलाई के खाइनँ के खाइनँ झैँ पाएँ

जीवनको आँधी तुफानी यात्राहरूलाई सम्हालेँ

सरलता र सत्यतालाई सधैँ नै अङ्गालेँ

यस्तै अरू धेरै के के गरेँ के के गरेँ

मेरो मस्तिष्कमा सधैँ रसहरू प्रशस्त बगाएँ

थोरै हाँसेँ, धेरै रोएँ

यसै आँसुले मनलाई धेरैपल्ट धोएँ

टि.आर. रेग्मी

ओहायो, अमेरिका

#### फुकोसीमा

फुकोसीमा,

हो तिमीलाई धेरै दुखेको छ

तर,

तिमी नकराऊ, नचिच्याऊ

गाली नगर, नउर्ल कसैसँग

जे हुनु थियो भइसक्यो ।

अब धेरै विकिरण नफाल वायुमण्डलमा

मानव सभ्यतालाई धेर त्रसित नपार ।

यतिखेर,

तिमी एकलो भने छैनौ दुनियाँमा

तिमीसँग लिविया, इराक, अफगानिस्तान

ओमन, बहराइन, भूटान आदि पनि

दुखिरहेका छन्

तानासाहको पन्जाबाट उन्मुक्तिको लागि,

नारा घन्काउँदै, झन्डा फरफराउँदै मानिसहरू उठिरहेका छन्

गोली, बारुद र बमको निसाना बनिरहेछन्

लासको पहाड उठेको छ,

त्योभन्दा ठुलो त्रासको पहाड उठेको छ

स्वतन्त्रका नाममा, उन्मुक्तिका नाममा

भागाभाग र चित्कारहरू छन्

गोला-बारुद र मिसाइलहरूका हुङ्कारहरू छन्

युगौँ अघिदेखिको आफ्नै भूमि छाडेर

मानिसहरू सिमाना पार भागिरहेछन् राता-रात

तर,

फुकोसीमा

क्षतविक्षत भए पनि

तिमीसँग आफ्नै प्यारो गाउँ छ

आफ्नै भूमि र स्वतन्त्र अस्तित्व छ,

हो म मान्छु-

तिम्रो पीडा अरूकोभन्दा बढ्ता नै होला

भूकम्प र सुनामीको

त्रासदीका कथा कति छन् कति,

तर तिमीसँग प्रविधि र शिक्षा छ

चेतना र जाँगर छ,

हामी जस्तो जूनको प्रकाशमा

अभाव, गरिबी र पीडामा

आर्जेको शिक्षाको प्रमाणपत्र डस्विनमा हुत्त्याएर

दुनियाँको गुलाम गर्नु पर्दैन,

ढिलै भए पनि,

मण्डेला, गान्धी, मार्क्स र लेनिनका

अनुयायीहरू जन्मँदै थिए,

वर्षौदेखिको निरङ्कुशता ढाल्न,

तानासाहहरूको साख झार्न

यद्यपि,

यी सब सपना पारिदियो कसैले… धुजा धुजा

नचाहँदा–नचाहँदै पनि हामीले

जूनको ज्योतिमा आर्जेको शिक्षा

दुनियाँको गुलाम गर्दै छ

मानवीय समस्याको समाधान र सहायताका नाममा

केवल एक पेट खानका लागि,

एक धरो कपडाका लागि,

अथवा सुख प्राप्तिको महत्त्वाकाङ्क्षाका लागि,

परन्तु,

फुकोसीमा-

तिमीसँग स्वाभिमान छ, स्वतन्त्र अस्तित्व छ

म तिम्रो आणविक ऊर्जा सङ्कट टार्ने

साहस र इच्छाशक्तिलाई सलाम गर्दछु,

अनि विपत्तिमा सहानुभूति प्रकट गर्दछु

तर,

फुकोसीमा तिमीलाई

संसार विनाश गर्ने अधिकार छैन !

टि.एन्. निरौला

बेलायत

#### यातना

सरर सरर कोर्दै लेख्न लागेँ कविता ।

फरर फरर आयो जेलको त्यो रमिता ।।

हरर हरर  गर्दै फुर्न थाले विचार ।

सकिन सकिन हेर्न दुर्गुणीको मुहार ।।

टक टक टक गर्दै पस्दथ्यो जेलभित्र ।

छिछिछि छिछिछि भन्दै कुट्दथ्यो हाय मित्र ।।

टन टन टन बाँधी हात-खुट्टा कसेर ।

टुलुलु टुलुलु हेर्थ्यो आफु माथि बसेर ।।

तरर तरर झर्दै बग्दथे आँसु-धारा ।

झटपट गरि आई हान्दथ्यो लात सारा ।।

गलल गलल गर्दै हाँस्दथ्यो त्यो घुमेर ।

पर पर पर पर्दै पन्छिने त्यो डुलेर।।

सकिन खपन मैँले ढाड फुट्यो कुटेर ।

थर थर थर काँप्दै मर्न लागेँ लडेर ।।

चिरिरि चिरिरि गर्दै भन्न थालेँ हजुर ।

विनति सब छ हेर्नोस् के छ मेरो कसुर ।।

कटकटकट गर्दै किट्न  नै थाल्छ दाह्रा ।

बर बर बर गर्दै भन्छ ङोलोप सारा ।।

गजब छ सबलाई पार्छ घायल् घुमेर ।

थकित गलित पार्दै मार्न लाग्यो थुनेर ।।

डा. गोविन्द रिजाल

बेल्डाँगी, नेपाल

#### बेलडाँगी

**लामो थियो परिचय**

**बिर्सनलाई गाह्रो पर्ने**

**परिवर्तन धेरै आएछन्**

**सम्बन्धमै चारो छर्ने**

**घुमी जगत् सम्झी फिरेँ**

**समर्पित उसकै लागि**

**भोकै दुब्लै हाहाकारमा**

**बाँचेको छ अझै मागी**

**अन्तिम शैय्यामा छटपटाइरहेछ**

**मेरो इतिहास, प्रिय बेलडाँगी ।**

**कोलाहल घटेछ, वितृष्णा बढे जति**

**रिस क्रोध पश्चात्तापमा फलाकिने**

**शब्दहरू अङ्कुराउने मति**

**हार नैराश्यमा प्रस्फुटन हुने**

**साहित्य मौलाएको गति**

**भण्डारण हुँदैछन्**

**शब्दकोशमा नअटाउने जति**

**तिनै अप्रिय शब्दहरू ओकल्दै**

**अन्तिम शैय्यामा छटपटाइरहेछ**

**मेरो इतिहास, प्रिय बेलडाँगी ।**

**त्यै शैय्यामा लम्पसार छ**

**एक सभ्यताको इतिहास**

**जातिको एक पहिचान**

**चटपटाइरहेछ**

**छटपटाइरहेछ ।**

**बेतुकका छन् सलामीहरू**

**हतारमा छन् मलामीहरू**

**उता**

**चिता झोस्ने हतारमा छ क्यमोफ्लेज र खागी**

**यता**

**अन्तिम शैय्यामा छटपटाइरहेछ**

**मेरो इतिहास, प्रिय बेलडाँगी ।**

**यो जन्मँदै सुर्जेको रगतले सिँचिएको**

**भिन्न दीक्षित हुन्थ्यो कसरी**

**कति मारेको कति मरेको**

**पसिना र रगत दहभरि**

**फुलेन कमल, उडेन कलरव**

**मृगहरू ओरालो झरे**

**देशप्रेमी एकलव्यहरू**

**मूर्ख ठहरे, एक्लो परे ।**

**हाँसो छैन, चैन छैन**

**अन्यायका आँसु आँसु**

**कति सुके कति झरे**

**वेदना छोपी सङ्घर्षी**

**बहिस्कृत एक्लो परे ।**

**जन्तीहरू मानोको पछाडि**

**मलामीहरू छानोको पछाडि**

**दिनेहरू ठग**

**लिनेहरू लोभी भएछन्**

**आशालाग्दा कर्णधार**

**अर्कै मुलुक चलान भएछन्**

**इतिहास रच्नेहरू**

**लक्ष्य छोडी पलायन भएछन्**

**वृद्ध-वृद्धा लम्पसार छन्**

**बाँझो क्षितिजमा आशा टाँगी**

**अन्तिम शैय्यामा छटपटाइरहेछ**

**मेरो इतिहास, प्रिय बेलडाँगी ।**

**कुण्डलिनी नजागेको योगी भएछ बेलडाँगी**

**एकान्तमा छोडिएको कुष्ठ-रोगी भएछ बेलडाँगी !**

**आउने छैन, जाने मात्रै**

**हात पसारेको पसारेकै**

**सिर्फ बाँच्नको लागि**

**न जोत्छ,**

**न रोप्छ,**

**न मलजल, न गोडमेल**

**न काट्छ बाली, न चाख्छ नुवागी**

**दीन दयामै एक युग बाँचेर**

**भोगी भएछ बेलडाँगी**

**अन्तिम शैय्यामा छटपटाइरहेछ**

**मेरो इतिहास, प्रिय बेलडाँगी ।।**

डा. लक्ष्मीप्रसाद ढकाल

भिक्टोरिया, अस्ट्रेलिया

#### ड्रयागनको गर्जाई

एक्कै चोटि रिसाएर

गर्जिन थाल्यो ड्रागन

सधैँ मिल्ने

सँगै खेल्ने

साथी कालो बादल

आतुर हुन्छ अनि

भन्छ:

स्तब्ध भयो जीवन ।

पहाड तोड्दै बग्ने खहरे

रोकियो एक्कासि ठिङ्ग,

बग्ने कता अनि,

सुसाउने कता

भन्छ:

अलमल्ल भयो जीवन ।

आकाश चिर्दै बिजुली फार्दै

धर्ती चिर्ने चट्याङ-

वाक्य बस्यो,

तेज घट्यो

भन्छ:

निरर्थक भयो जीवन ।

रुख-रुख उडी उडी

गीत गाउने लाँचे

स्वर बस्यो,

सातो उड्यो,

भन्छ:

भारी भयो जीवन ।

चेप्टे ढुङ्गामा

तबल उद्याउने

त्रसित हुन्छ किसान

नाडी चलेन,

तबल उठेन,

भन्छ:

भयावह भयो जीवन ।

झन्नै धेरै रिसाएर

गर्जिन थाल्यो ड्रागन,

साहस आयो,

उमङ्ग बढ्यो,

भन्छ:

खुसी लाग्यो रित्तो हुँदा गाउँ ।

डा. लक्ष्मीनारायण ढकाल

केन्टकी, अमेरिका

#### ग्रस नेसनल ह्यापिनेस !

तिमी न देखाऊ हरित सिमाङ्कन

तिम्रो देश रक्ताम्मे छ, उजाड छ

देशप्रेमीका रक्तले द्रवित ती धर्तीले

नसकी सहन उकुसमुकुस पीडाहरू

ज्वालामुखीको प्रसव वेदनामा

व्यथित छ,तर पनि डकार्छौ

सन्तुष्टिको आलाप

ग्रस नेसनल ह्यापिनेस !

चाउरिएका ती गालाहरू

हा, बुम्थांग र टासिगांगका कन्दराहरूमा

भोका भोकै, नाङ्गा नाङ्गै छन्,

सिँगान पुछेको त्यो लागेमा

कटकटिएका पाप्राहरू लिएका

तिम्रा आफ्नै भनाउँदा रैतीहरू

रोएका छन्,अरूको कुरै छोड

कालो अक्षर भैँसी बराबर

तर पनि भन्छौ

ग्रस नेसनल ह्यापिनेस !

जनताको रगत पिएर

मजदुरहरूको पसिना चाटेर

कीर्नो झैँ मोटाएका तिमी

प्यान्टे भुँडी हल्लाउँदै

स्वघोषित मुकुट भिरेर

भन्छौ म सबैभन्दा स्वच्छ

सबैभन्दा चोखो, सबैभन्दा प्यारो

अनि शान्त रोल मोडल

ग्रस नेसनल ह्यापिनेस !

धिक्कार छ तिम्रो त्यो हुँकारलाई

जसको स्वर गरिबको समाधिबाट उम्रिएको छ,

धिक्कार छ तिम्रो त्यो दादागिरीलाई

जो खोर भित्रको जन-चित्कारबाट टुसाएको छ

मरुभूमिको मरीचिकामा सुकेको खर झैँ,

अब उदांगीए को छ

तिम्रो बक्खु भित्र लुकाएको

ग्रस नेसनल ह्यापिनेस !

डिल्लिराम रेग्मी

ओहायो, अमेरिका

#### पाँच सय पच्चीस

एकाबिहानै रिम-रिम उज्यालोमा

मन परेर भनौँ या

बाध्यताले

न्यानो-न्यानो सिरकको नरम-नरम वासना

चटक्क त्यागेर उठ्नै पर्ने !

आफ्नै घरको झ्यालबाट बाहिर हेर्दा

एकतमासले दौडिरहेको सडकमा

केही राता, केही काला, केही हरिया

हरेक बहाना आ-आफ्नै

दौड धूपमा व्यस्त देखिन्छन्

तर मेरो पर्खाई भने

हरेक दिन, हरेक बिहान

पाँच सय पच्चिसको हुन्छ ।

यही पाँच सय पच्चिसको

काँचको झ्यालबाट

हरेक दिन, हरेक बिहान

म बाहिर नियाल्छु,

रुख, बिरुवा, झार, पात,

ढुङ्गा, माटो, सडक, कालोपत्र,

आकाश, पाताल, क्षितिज सबै

मेरा लागि साधारण साबित हुनेछन्

तर फरक यति मात्र छ

यही पाँच सय पच्चिस भित्रको

सम्पूर्ण जनसङ्ख्याले भने

मलाई असाधारण देख्छ ।

यही पाँच सय पच्चीसले मलाई

हरेक दिन, हरेक बिहान

मेरो भविष्य कोर्ने,

मेरो वर्तमान फोर्ने

गन्तव्यमा पुर्‍याएर छोड्छ

जहाँ सबै

आ-आफ्नै पाइला कोर्न विवश देखिन्छन्

जहाँ सबै

आ-आफ्नै तकदिर लेख्न व्यस्त देखिन्छन्

अनि सबै साधारण देखिन्छन्

फरक मात्र यही छ कि

उनीहरू मलाई असाधारण देख्छन् ।

मेरो खेल क्रीडालाई

उच्छृङ्खल ठान्ने तिनीहरू,

उनीहरूको संसार मेरालागि उच्छृङ्खल हुन्छ

भन्नेमा उनीहरू अनविज्ञ छन् ।

सहपाठी, सहचारी, सहहितको

खोजीमा भौँतारिएको म र

मेरो साधारण संसारलाई

छेवैबाट बुझ्ने कोसिस गर्ने

केही स्रष्टाहरू बिच

केही समयकालागि

सामीप्यता बढ्छ, सहचारिता बढ्छ

तर

यिनै स्रष्टाहरूले

मेरै नाममा, मेरै बारेमा

सिकायतको व्याकरणसहित

व्याख्या गरेको मेरो व्यवहार

अनि कोण नमिलेको मेरो भविष्यवाणी

मेरी आमाले गहभरि आँसु पारी

पढेको देख्दा मेरो मन लाचार हुन्छ ।

यही पाँच सय पच्चिसमा सवार भएर म

आफ्नै सपना र सुविचारहरूलाई

पाइतालामा कुल्चिएर

आफ्नै धरातल नाप्न खोज्छु

ताराहरू हराएको मेरो आकाशमा अनि

घाम डुबेर अलकत्रा पोतेझैँ मेरो दिनमा

थाहा छैन कहिले चमक उत्रेर आउला !

आवाजभित्र आफ्नै सक्कली पहिचान हराएको म

त्यही पहिचान खोज्न

आवाज चिरेर लागिपरेको म

कपासका त्यान्द्रा भन्दा हलुका भएका

मेरा अन्तर्निहित आकाङ्क्षाहरूलाई जीवित पार्न

अनि मेरो जुनसुकै कुरालाई

तिखो बाँडको हौसला दिनेहरूलाई

उनीहरूले सोचेजस्तो म पटक्कै छैन

भन्ने दरिलो विश्वासको पर्खाल बनाउन

हरेक दिन, हरेक बिहान म

पाँच सय पच्चीसमा सवार हुन्छु

म साबित गर्न चाहन्छु

म आफैँ एक अग्निपरीक्षा गरिरहेछु

म आफैँ एक शान्त पुनर्निर्माणमा लागेको छु

म एउटा निस्स्वार्थ पानीको फोका झैँ

पारदर्शी बन्न चाहन्छु

मलाई तिम्रो हातेमालोको खाँचो छ

मलाई तिम्रो हौसलाको खाँचो छ

अनि मलाई एउटा

तेजिलो प्रकाशको खाँचो छ

जसले मलाई सही पाँच सय पच्चीसमा सवार गराओस्।

डिल्लीराम शर्मा आचार्य

नर्वे

#### कर्मभूमि

नर्वेको रसरङ्ग, रूप रसिलो हेर्दा जतै झल्मल

वृक्षै रङ्-रङका पहाडहरु छन् चट्टान छैनन् ठुला ।

मान्छेको मुख हुन्छ नित्य हँसिलो मस्तिष्क राम्रो गरी

खेती छैन किसान छैन नत छन् श्रम् कारखाना भरी ।।

राजा छन् जन प्रेमका सुररसिला प्रजाहरुका धनी

सत्तामा जनता रमेर विधिको स्वाराज गर्छन् थरी ।

दक्षिण्देखि लिएर उत्तरतिरै हेर्दा ठूलो पोखरी

घेरेको छ समुद्रले र टुकुरा देखिन्छ नाना थरी ।।

त्यस्माथि प्रतिविम्ब झैँ छ हिमको छेमाससम्म यहाँ

दण्डित् भैकन बाँच्नु पर्दछ अहो वृक्षै पशुले जहाँ ।

वर्षीँदा हिमको कठोर रसमा मूनाहरु मर्दछन्

पानी जाम्दछ काँच झैँ त्यस बखत मुर्छा अरु पर्दछन् ।।

पंक्षी औ पशुको विहालत हुने वृक्षैहरुको पनि

पत्ता झर्दछ शुन्य भै रुखमहाँ यस्तै छ है जीवनी ।

झूप्राको घर छैन भव्य महलै बत्ती हजारौं बली

देशै झल्मल हुन्छ फूलहरुले शोभा दिएको फुली ।।

यस्तो यो छ विशाल राष्ट्र यसमा मान्छे छ जा–जातको

धातूले परिपुर्ण छ प्रकृतिको हो देन, वर्दान  यो ।

तोडी शैल पहाड मार्ग गतिला सुरुङ भित्री पनि

बत्तीले झलमल्ल पारि सहजै गुड्दो छ गाडी मुनि ।।

खानी तेल र सून ग्यासहरुले धप्धप् छ धर्ती यहाँ

थोरै हुन्छ जति बखान गरियो यो कर्मभूमी महाँ ।

राजाको बल तेजले धनसबै लूटी लखेटे पनि

पायौँ प्रेम छ,धन्य आश्रय दियौ चल्दै छ यो जीवनी ।।

डिपि दुलाल

टेक्सास, अमेरिका

#### ए नानु !

तिम्रो आँखाको शून्यता

अनुहारको मौनता

आवाजको लचकता

लाग्छ,

मैँले तिमीलाई

मन पराउनुको विशेषता हो ।

तारा चुनेर यो भूमिमा

रोशनी बनेर मेरो जीवनमा

यतिका वर्ष पछाडि

तिमी आयौ र ममा

म हुनुको रौनकता छायो

तिम्रो दिव्यता महसुस गरेर

आज आफैँलाई

पूर्ण हुनुको आभास भयो ।

लाग्छ,

घरको सुनसान र शून्य कोठामा

तिमी पनि

छटपटाएकी छ्यौ

म जस्तै

डिप्रेश भएर

एउटा आजीवन साथ खोज्दै ।

लाग्छ,

यतिका वर्ष पछाडि

मेरा यी दुई नयनमा

तिमीले जीवन भेटाएकी छ्यौ

र त तिमी तर्किन्छ्यौ

मेरो घेराबाट

अनि डराउँछ्यौ

लजाउँछ्यौ

मेरा

नजरमा, नजर जुधाउन

आवाजमा आवाज मिलाउन ।

सम्झी हेर त

गोधूलि साँझमा

तिम्रो घरको अगाडि

हाम्रो जम्काभेट भएथ्यो

तिमी पनि बोलिनौ

म पनि बोलिन

केवल बोलिरहेँ

हाम्रा प्रेमिल मनहरू

अनि मोडिए हाम्रा

शिथिल पाइलाहरू

फरक गोरेटोतिर

हो नानु….

त्यसताका,

तिम्रो अनुहार

मैँले तिमीलाई माया गर्नुको

अर्थ भेटाएको थिएँ ।

तर आज

यस्तो लाग्छ

यो कृत्रिम समाज र

वर्ण व्यवस्था रहुन्जेल

म तिम्रो

सिउँदोको सिँदुर

अनि

गलाको पोते बन्न सक्दिन होला ।

डी. एन्. काफ्ले

एड्लेड, अस्ट्रलिया

#### शहीद र म

उसले माटो पियो

माटोमै रोप्यो जिन्दगी

र निर्भय

फुलायो जिन्दगी भित्रका

हजार सपनाहरू

अपार मुस्कानहरू ।

म नाथु !

जिन्दगीको लालचमा फसेर

स्वप्नभित्र स्वप्न रोपेँ

र बाटा लागेँ

म पलपल मरेर बाँचिरहेँ

-एकादेशको नागरिक भएँ

ऊ मरेर पलपल बाँचिरह्यो

-पुण्यभूमिको शहीद भयो ।

डेञ्जोम साम्पाङ

टेक्सास, अमेरिका

#### बिचरा कवि !

कवितामा निष्कर्ष

ननिस्किएपछिको

विश्रृंखलित मस्तिष्क,

शब्दहरूको रिणले टुप्पीसमेत

डुबेको मन,

अर्थ खोज्न पल्टाउँदा पल्टाउँदा

च्यातिन लगेको तन,

म हेरिरहेछु

घण्टाघर छेउको रेलिङमा

ढेसिएर उभेकोछ

सेता बादलले ढाकेको

ताराविहीन त्यो जुनेली रातमा

म सम्झन्छु

उसले बाँच्नको निकास खोजिरहेछ

त्यसैले,

जीवन भुलाउने बहानामा

फेरि जल्छ

अर्को एउटा सिगरेटसँग

फुर्र फुर्र धुवाँमा

हात नपरेको जिन्दगी

रवि नपुग्नेमा पनि पुग्ने

महान् तर बिचरा कवि……!

डेभ सिवा

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### नातिनीलाई अर्ती

विदेशको ठाउँ अनि नौलो परिवेश

अलपत्र अनि अन्योल पर्‍यो भाषा र भेष

यो अन्योल र अलपत्रले ल्यायो यहाँ त्रास

त्यसैले त भनिदिएँ नातिनीलाई

अब देखि सधैँ नेपाली बोलेस् ।

भेष-भूषाको त कुरै नगरौँ यहाँ

यत्रतत्र अलपत्र धुजा-धुजा भई फाटेका

ठुला अनि साना, मासु देखिने दुला

केही भन्यो कि, फेसन हो भनी बाझेका

त्यसैले त भनिदिएँ नातिनीलाई

तैँले चैँ नाक जोगाएस् ।

मौलायो यहाँ जात, यो ठुलो त्यो सानो

भाषा त गयो भाँडमा तर, जात होइन

जातीय पहिचान त रहनु पर्‍यो नि यहाँ !

को छुत को अछुत मानिस सबै बराबर होइन र ?

त्यसैले भनिदिएँ नातिनीलाई

अधिकार आफ्नो सधैँ लडेस् ।

रोजगारको कष्ट एकापट्टि,

घर भाडा र लोन अर्कोपट्टि

छोरा, बुहारी, नाति दिनरात व्यस्त हुन्छन्

छाडी मलाई केवल एउटा लाठी ।

महिना मर्छ, सुन्छु विवाद

बुहारी सोध्छिन् कमाइ गयो कतापट्टि ?

छोरो सर्छ सिटिङ रुममा, बुहारी घुँक्क घुँक्क

म अचम्म अनि नाति गोरी साइँलीको भट्टी

त्यसैले त भनिदिएँ नातिनीलाई

तिमी चैँ क्यासिनो न छिरेस् ।

डोना आचार्य

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### बिलखबन्द म !

म

पटक-पटक सोचिरहेछु-

मेरा पुर्खाको

अटल आस्था र लगन

पाखण्डहरूको

धनी बन्ने होडमा

कतै निमिट्यान्न हुन लाग्या हैन ?

म

विश्वस्त छु

मेरो संस्कार

मेरो पहिचान

ध्रुव जस्तै अटल रहनेछ

पाखण्डहरू जे सुकै गरुन् ।

एकथरि

स्वत्व रक्षकहरू

अनर्गलको खेती लगाएर

सुसमाचार ढाँटिरहेछन्-

आफ्ना कुरा

सही ठहर्‍याउन

अर्काको आस्था

तोड्नु पर्दैन

नयाँ ठाउँमा

बाँच्नलाई

मखुन्डो नै

धड्नु पर्दैन

एउटा यात्राको

भाडा तिर्नलाई- आत्मा बेच्नेहरू-

भिरको चिन्डो उँधो न उँभो

हुन लागेको देख्दा

टिठ लाग्छ

आफ्नोपन

सम्हाल्न नसक्नेहरू!

आफूलाई सम्हाल्न सक्दैनन्-

म

टुलुटुलु हेरिरहेछु

आलुहरू

सड्दै जाँदा

दुर्गन्धको डर छ ।

डम्बर घिमिरे

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### अतीतसँग नमिठो बिछोड

फिक्का- अन्धकार मनभित्र

छाँद हालेपछि,

जीवनको गोरेटो

ऊ….पर बिचैमा हराएर

छताछुल्ल पोखिनुको आहत

यदाकदा कर्णपटमा गुञ्जिरहेको

आज पाइलाहरू खोजिरहेछन् ।

हरपल

यथार्थ मसँग सोध्छ-

वास्तविकता मसँग अनगिन्ती प्रस्तावहरू तेर्स्याएर

मलाई धर्मसङ्कटमा पार्छ

म वशीभूत हुन्छु

म हारेको हुन्छु

म विवशतासँग नजिकिएको हुन्छु

अनि म प्रश्नको घात-प्रतिघातको

छालसँगै बगिरहेको हुन्छु ।

जब म विगत सम्झन्छु

जब म अतीतका मूर्च्छनाहरू अँगाल्छु

जब म आफ्नै अर्थ खोज्छु

मौनताले मलाई खोतल्न चाहन्छ

इच्छाहरू मलाई बदल्न चाहन्छन्

म समयको बगाइसँगै

तिम्रो आकृति ठम्याउन खोज्छु तर,

निश्चित आकार भेट्दिन

म अन्योलमा रुमलिएको छु

मलाई माफ गर प्रिय अतीत

मलाई माफ गर म रणभुल्लमा छु

म अन्योलमा छु

मलाई अब दिक्क लाग्यो

तिमी मलाई पच्छ्याउन छाडिदेऊ

मलाई अब फेरि तितो कहानी र

तिम्रो परिवर्तित आकृतिले

मलाई तर्साउन थालेको छ

मलाई डरले गाँजेको छ

फेरी उही अत्यासलाग्दो

अस्मिताको लडाइँ दोहोरिने पो हो कि ?

म बिन्ती गर्छु

तिमी अब कहिल्यै नफर्क

तिमी आफ्नो बाटो लिएर जाऊ

मलाई मेरो आफ्नै संसारमा छाडिदेऊ ।

मलाई अत्याधुनिक परिवेश चाहिन्न

चाहिन्न मलाई अत्याधुनिक सभ्यता

आधुनिकताको नाममा म

नग्न हुन चाहन्न

मलाई मेरो अस्मिता फर्काइदेऊ

मेरो अस्तित्व बन्धकी राख्न चाहन्न

म भ्रमित छु या तिमी अतीत ?

म तिमीदेखि आशक्त छैन

त्यसैले तिमी

मलाई भविष्यको नाममा नडस

आदर्शको नाममा नटोक

म आफ्नै गतिले बाँच्न चाहन्छु

म आफ्नै रीतमा रमाउन चाहन्छु

म आफ्नै परिवेशमा फुल्न चाहन्छु

अतीत

म तिमीसँग बिदा माग्छु ।

तिलक राई

बेलडाँगी, नेपाल

#### माङ्मा लुङ रिसाउँछ

उकालो चढ्दा

पसिनाले जीउ लुथ्रुक्कै भएको बेला

थकाइको सुस्केरा

सुटुक्क खुईया मुखबाट निस्कियो भने

फलाँटको रूखहरूले कानमा

कानेखुसी गर्छन्

ए …! मनुवा हो

यसरी आवाज ननिकाल

यहाँ त अनिष्ठ हुन्छ

र

माङ्मा लुङ रिसाउँछ ।

डाँडा चढ्नेहरू

खुसी भएर रमाउनु हुँदैन

स्वतन्त्र भएर हिँड्नु हुँदैन

प्रगतिको कुरा गर्नु हुँदैन

हाँसी रहेको आकाश रिसाएर

एक छिनमा कालो बादल भएर

हुस्स कुहिरोले छोप्ने छ

सबैको उत्साहमाथि अङ्कुश लगाउँदै

डर पैदा गरेर

माङ्मा लुङ रिसाउँछ ।

माङ किन रिसाउँछ

ती किबुहरूलाई थाहा छैन

तर

बिलाउनेहरू तिनै पोथ्राहरूमाथि

आरोप लगाई रहेका छन्

छिलिएर फुल्नु र फल दिनु

कालिजहरूका हल्लालाई प्रशय दिनु हो

भोका पेटहरू अगाएर

आनन्दित भएको देखी सहँदैन

सिरेटोहरू मुटुमा खिल गाड्दै

मुख अँध्यारो पारेर

माङ्मा लुङ रिसाउँछ ।

भोको पेट पेटारो कसेर

भक्ति गानमा लिप्त हातहरू देख्दा

कहिले कहीँ खुसी देखिने

लाटोकोसेरोको चिच्याहटलाई थुनेर

वर्षौँको कैदपछि

कानमा थुरिनु पुग्छ उन्मुक्त रूपमा

ढोल, झ्याम्टा र स्तुतिको कचिलो आवाज

अनि सोच्न बाध्य छ कि

डालामा कैद बुवाले

यो सुनसान वन थर्कने आवाजले

फेरि माङ्मा लुङ रिसाउँछ ?

तिलारूपा आचार्य (अधिकारी)

ओहायो, अमेरिका

#### गौरव गर्छु नारी हुनुमा

लिङ्ग भेदको विष ओकल्छ

मेरो भूगोल आज पनि

चेतनाको अभाव या

पुरुष-प्रधान समाज

वितृष्णा केवल नारीप्रति निकाल्छन्,

छोरा भए हर्ष उल्लास

छोरी भए ???

तर.....

मलाई त गौरव लाग्छ

नारी भएर जन्मन पाउँदा

छोरी हुनु,

घरको सौभाग्य हो

संयोग हो

सफलता हो

अहोभाग्य उदाउँछ र भाग्य फुल्छ

जब जब छोरीलाई

हिम्मत र साथ दिएर हुर्काइन्छ

हो,

म त्यही साहस हुँ

त्यही आँट हुँ

भरोसा र हौसला हुँ ।

बिर्सिएर हर कर्कश

मुस्कुराउँछु एउटा खुसी

फक्रने आस बोकेर

लछारेर बाधाहरू

पछारेर काँडाहरू

फुली दिए, एउटा फूल

मेरो घरको बगैँचामा ।

म त्यसरी फुलिरहँदा

मलाई लाग्छ,

धर्तीको सुन्दर उपहार हो छोरी

गौरव लाग्छ छोरी हुनुमा ।

अहोभाग्यमा

सौभाग्य भिरेर

जब म संस्कारमा भित्रिए

तब म बुहारी भएर मुस्कुराएँ

घरको सौन्दर्य हो बुहारी

संस्कार हो बुहारी

मान-सम्मान हो बुहारी

मर्यादा र इज्जत हो बुहारी ।

नयाँ पहिचान, नौलो संसारमा

दायित्व र कर्तव्यका

पाइला जोखी-जोखी

गन्तव्य भेट्नु पर्छ

साँच्चै, सुशासन हो बुहारी

समृद्धि अनि सफलताको सिँढी हो

सद्भाव र सहिष्णुताको गहना भिरेर

परिस्थिति र परिवेशले

मन्थन गरी बनाएको

सुन्दर आकृति हो बुहारी

त्यसैले मलाई

बुहारी हुनुमा गौरव लाग्छ ।

बुहारीबाटै म आमा भए

पदोन्नतिको क्रम जारी रह्यो

माया ममता र स्नेहबाट

धेरै माथि,

सृजना र शक्तिको

महसुस गर्न थालेँ

सृष्टिको अर्को रूप

म आमा भएर बाँचे

सन्तानको सुरक्षा संरक्षणकोलागि

बारबार अचानो हुन्छन् आमाहरू

सम्पूर्ण नारीत्व रित्याएर

हाँसीहाँसी मर्छन् आमाहरू

म आमा हुनुमा गौरव मान्छु

त्यसैले म

गौरव गर्छु नारी हुनुमा ।

तुम्बेहाङ् लिम्बु

बेल्डाँगी, नेपाल

#### उत्तरे खोला

मेरो गाउँमा एउटा खोला छ

जो दक्षिण नभएर उत्तरतिर बग्छ

र त्यसको बगाइको बिब्ल्याँटो दिशा देखेर

मानिस चकित हुन्छन्

बटुवाहरू अचम्म मानेर हेर्छन्

सबैले त्यसलाई 'उत्तरेखोला' भन्छन् ।

वास्तवमा त्यो खोला

रहरले कहाँ उत्तरतिर बगेको हो र !

मन त त्यसलाई पनि समुद्र भेट्ने नै थियो

विशाल सागरमा समाहित हुने नै थियो

तर जब त्यसको बाटोमा गजधम्म

एउटा निरङ्कुश पहाड बसिदियो

एउटा अटेरी थुम्का बसिदियो

कालो सालघारीले एकछत्र राज चलायो

अनि त त्यसले उल्टो बाटो रोज्यो

विपरीत आयामबाट सोच्यो

र एउटा फरक धार बनायो ।

फरक दिशाबाट बग्ने हुँदा

उत्तरे खोलाको पहिचान फरक छ

महत्त्व फरक छ

र जब त्यो अलिक माथि पुगेर

हँडियाखोलासँग मित लाउँछ

र हँडिया खाएर मात्छ

अनि अँगालो हालेर दुवै खोला

विद्रोहको गीत गाउँदै बग्छन् फाँटतिर

तिनीहरूलाई कसैले छेक्दैन

कसैले रोक्दैन

किन कि तिनीहरू मातेका हुन्छन्

ठुलो–ठुलो आवाजसित बुर्कुसी मारिरहेका हुन्छन् ।

वास्तवमा हाम्रो उत्तरेखोला

हाम्रोलागि एउटा विश्वविद्यालय रहेछ

जीवनदर्शनको एउटा अमूल्य निधि रहेछ

जसले जीवन बँचाइको काइदा सिकाउँदो रहेछ

सुल्टो सोचले नभएमा

उल्टो सोच्न उत्प्रेरित गर्दो रहेछ

शान्त र शालीनताको सुर–तालसँगै

बेलाबेला विद्रोहको गीत गाउन पनि

सिकाउँदोरहेछ

र सोझो बाटो अवरोध भएमा

घुमाउरो बाटो हिँड्न पनि सिकाउँदोरहेछ ।

अचेल म भर्खर बुझ्दैछु

उत्तरे खोलाको महत्त्व र शान

अचेल म भर्खर पढ्दैछु

उत्तरे खोलाको दर्शन र ज्ञान

उत्तरे खोलाको सिको गरेर शनैः शनैः

मैले पनि जीवनमा धेरै सफलता हात पारेको छु

अझ धेरै हात पार्न बाँकी छ

जीवन खोलाको हरेक मोडमा

थुम्काहरू आउन सक्छन्

पहाडहरू खस्न सक्छन्

आपद्–विपद् ल्याउन सक्छन्

त्यस बखत उत्तरेखोलाको पाठ सम्झिए पुग्छ

उत्तरे खोलाको बाटोमा हिँडे पुग्छ

जीवन बँचाइको ज्ञान मीमांसा हो उत्तरेखोला

यसको सुर–तालमा नाचे पुग्छ ।

तेजमान रायका

अस्ट्रेलिया

#### इतिहास र सन्तती

सात समुद्र पारिको भूगोलमा

बादल पारिको देशमा !

जुन देशको मानचित्रमा

मेरो एउटा गाउँ छ

त्यो देश, त्यो गाउँ, म चाहेर पनि भुल्न सक्दिन ।

सपनीमा पनि त्यही गाउँको, त्यै देशको झझल्को आउँछ,

हरेक साँझ सुत्नअघि

मेरी छोरी त्यही ‘गाउँको कथा’ सुनाउनुस् न डेडी भन्छे !

अन्तहीन झैँ लाग्ने त्यो गाउँको कथा-

‘महासुर क्षेत्री’ र ‘सीता मोथे’का कथासँगै सुरु हुन्छ

शासक र प्रशासकहरू

मुख्य नायक र सहनायकको भूमिकामा रहेको चलचित्रझैँ

हत्या र हिंसाका शृङ्खलाबद्ध पटकथाहरू

नारीहरूको अस्मिता लुटिएको

सिँदुर खोसिएका परिघटनाहरू

म सुनाउँदै जान्छु ।

“अनि के भो ?”

छोरी निदाउनु विपरीत

मैले बिर्सन खोजेको विगत झन् आलो बनाइदिन्छे

छातीमा बजारिएको बुट सम्झाइदिन्छे-

“छोरी आज सुतौँ, अरू कथा भोलि भन्छु है”

“नाइँ ! अझै भन्नुस्, अनि सुत्छु”-

यसरी म कथाका अध्याय अघि बढाउन बाध्य हुन्छु !

कथाको शृङ्खला अघि बढ्छ

म छोरीले बोल्ने बोलीमा भन्दै जान्छु

“एक दिन गाउँमा आर्मी आउँछ

सबै केटा मान्छेलाई

लाठी र बुटले बेस्सरी हिर्काउँछ

कतिलाई बन्दुकको गोलीले मार्छ

कतिलाई पाता फर्काएर बाँध्छ

अनि जेल लान्छ

केटी मान्छेलाई नराम्रो व्यवहार गर्छ !”

“आर्मी भनेको राक्षस हो डेडी ?”

हँ ?….अँ !….उस्..तो !!…उस्…तै हो छोरी !!!

एउटा त्यस्तो देशको इतिहास

जहाँ दुई राजा, पाँच रानी छन् !

एकादेशमा भनेर सुरु हुने दन्त्यकथा भन्दा

कैयौँ गुणा काल्पनिक झैँ लाग्ने कथा

“आर्मी भनेको राक्षस हो ?”

त्यही कथाको जीवित पात्र भएर पनि

म छोरीको यो प्रश्नको जवाफ दिन असमर्थ हुन्छु !

“बिरे दादाको बाउ नि जेलमा छ, अँ?, याँ’ कैले आउँछ ?”

हो छोरी, बिरेको बाउ जेलमा छ !

अबोध छोरीसँग म झुट्टो बोल्न बाध्य हुन्छु

बिरेकी आमा, जो सोह्रौँ वसन्त पार नगरी

कुमारीत्व लुटाएर जीवन बँचाई

बलात्कृत हुनुको तनावसँगै

पापीको नासो गर्भमा बोकेर

देशबाट लखेटिन पुगी ।

न बिर्खेले आफ्नो बाउ कहिल्यै देखेको छ

न बिर्खेकी आमाले नै छोरोलाई यथार्थ बताउन सक्छे-

“तेरो बाउ तँलाई धेरै पापा र नाना लिएर आउँछ”

यो झुट्टो आश्वासन

बिर्खेले अब त बुझी सकेको हुनुपर्छ !

एउटा यस्तो कटु सत्य जसलाई लुकाएर

सिङ्गो समाजले आफ्नो इज्जत बँचाएको ठानिरहेको छ-

यो एउटा त्यस्तो देशको कथा हो

जहाँ वनस्पतिलाई बेर्नामै निमोठिन्छ

प्रकृतिको फक्रनै नपाई कोपिलामै हत्या गरिन्छ

जहाँ रूखहरू टुप्पाबाट उम्रन्छन्

जहाँ चितुवा र बाघ भेडीगोठको सुरक्षार्थ खटाइन्छन्

जहाँ भुस्याहा कुकुरहरू खुसीले हाँस्छन् तर मान्छेले रुनुपर्छ

एउटा त्यस्तो माटोको कथा

जहाँ गुम्बाका सङ्कीर्ण घेराभित्र

बुद्धलाई कैद बनाइएको छ

तर त्यहाँको माटोसँग हाम्रो नाता जोडिएको छ

त्यसैले यो कथा, यो इतिहास

हाम्रा छोरा नातिलाई सुनाउनु पर्छ

हाम्रा दर-सन्तानले सधैँ सम्झनु पर्छ

त्यसैले यो कथा, यो इतिहास सन्ततिलाई सुनाउनुपर्छ ।।

तोयानाथ क्षेत्री

ओहायो, अमेरिका

#### आस्था मरेको छैन

पदार्थ र चेतनाको सम्बन्धमा

चेतनालाई प्रधानता दिएर

आदर्शवादी ढोँगी बौद्धिक बनी

समाज विकासका वस्तुगत नियम

र पद्धतिहरूलाई

झूटको पहाडले थिच्नु परेको छैन;

त्यसैले ढुक्क नबन,

मेरो आस्था अझै मरेको छैन !

घोषित प्रतिबद्धता, अस्तित्व

र वर्गचेतनालाई

पानीका फोका बनाई

तिम्रा सीमित खोक्रा विलासिताका

वस्तु र भुलभुलैयाले,

सपनाको मेरो बृहत् परिधि

मिच्नु परेको छैन-

त्यसैले ढुक्क नबन

मेरो आस्था अझै मरेको छैन !

शान्ति, विकास, भ्रातृत्व, भाइचारा-

विश्व बन्धुत्व जस्ता

उच्च मानवीय गुण एवं

न्यायका चुचुरा मुठारेर

रङ्ग-रोगनले सजिएको

तर, भित्र भित्रै वर्गीय,

जातीय, आर्थिक, लैङ्गिक विभेद

र, असमानताको रणनीति

शिरोधार्य गरी पेट पूजक

सङ्कीर्णताको घेराभित्र

सृजनशील मस्तिष्कलाई कैद गरी

शोषक, वर्गीय पलाँस फुल्ने बगैँचा

सिँच्नु परेको छैन,

त्यसैले ढुक्क नबन

मेरो आस्था अझै मरेको छैन !

जहाँ पुग्यो त्यहीँ चुहुनु परेको छैन

हिजो हाँसेर आज रुनु परेको छैन

त्यसैले म, म नै हुँ, तिमी हुनु परेको छैन

मेरो आस्था नै मेरो मुक्ति हो

मेरो सोच मेरो अस्तित्व हो

यो लुट र डकैतीको यन्त्र सज्जित

कृत्रिम स्वर्गमा, सुख सम्पन्नता र

सुविधाको भूत चढेर

आत्मसन्तुष्टि र स्वाभिमान मार्दै

भौतिक विलासीताका पाङ्ग्राले

मेरो वीरतालाई किच्नु परेको छैन

त्यसैले ढुक्क नबन,

मेरो आस्था अझै मरेको छैन !

झूट थिएन मेरो विगत आफ्नो वर्तमान झैँ

फेरिँदैन स्वप्न र लक्ष्य मेरो

पुऱ्याऊ मलाई जाहीँ ताहीं-

त्यो गौरवपूर्ण विगतलाई तिमीलाई झैँ

थुक्नु परेको छैन मैले

यो झूटो सुखलाई तिमीले झैँ

सलामी दिनुपरेको छैन !

सङ्घर्षको मूल अझै सुकेको छैन

बीज अझै आँकुरिँदैछ !

मुक्ति अभियानको जालो भित्र-भित्रै माकुरिँदैछ

यी यावत सत्यप्रति बनी गैर-जिम्मेवार

निभाई दियो आस्थाको बत्ती जिउँदो लास

इतिहासकै कुरूप आकृति खिच्नुपरेको छैन

त्यसैले ढुक्क नबन, जीवित छु

मेरो आस्था अझै मरेको छैन !

त्रिविक्रम अधिकारी

केन्टकी, अमेरिका

#### फूलबारी र मान्छे

कोही बेस्सरी ढोल पिट्छन्

र नि कसैले सुन्दैनन्

सुने पनि बिर्सिदिन्छन् ।

कोही ढोल नै नबजाई

होनहार काम गर्छन्

अनि हाई-हाई कमाउँछन्

समय यादगार बनाइदिन्छन् ।

कोही वितृष्णाले छटपटाइरहँदा पनि

लालचकै कुरा गर्छन्

कसिएको सम्बन्धनै तोड्न खोज्छन् ।

कोही जीवन रहुन्जेल सधा-सधा

अमृत बोली गर्छन्

टुटेको सम्बन्धलाई जोडेर बिदा लिन्छन् ।

एउटा साझा फूलबारीका फूलहरूजस्तै

कोही सप्रेका

कोही फक्रेका

कोही गोडमेल गरिएका

कोही मलजल नगरिएका

कोही ढलेका

कोही वासनासहित

कोही वासनारहित

कोही गलत मल परेका

अनेक-अनेक रङ्ग मिसिएका

अनेक आकृति भएका

फूलहरू जस्तै

मान्छेको झुन्ड

अनि

यहाँको चलन ।।

थुत्तेनदोर्जी ड्रुक्पा

डेनमार्क

#### देशविहीन हुनुको दुखाइ

सबै थोक छ

र म फिक्का छु

हेरिरहेछु त्यो निलो आकाश,

सम्झिरहेछु साथीहरू

बाटो-घाटो र आफ्नो समाज

आफ्नो पनमा रमाएका ती मनहरूलाई

मलाई आजसम्म बाँच्न प्रेरित गर्ने ती क्षणहरूलाई

त्यसैले,

म चाहन्छु म पतन हुँ

तर म चाहन्न

ती मेरा सम्झनाहरूको हत्या होस्,

म माटो सम्झँदै

बाटो काटिरहेको छु,

यसो ठेस लागे पनि हुने

‘आइय्या आमा’ भन्ने थिएँ,

कसैले मेरो भाषा नबुझे पनि

अव्यक्त मनको कुरा प्रस्फुटन हुने थियो

सायद !

जमातबिचको एक्लोपनको पनि

अन्त्य हुन्थ्यो कि !

एक छिनको लागि भए पनि ?

म

म एक्लो छु,

हराइरहेछु, डराइरहेछु

दुखाइरहेछु मन

देशविहीन हुनुको पीडा

खोजिरहेछु आफन्तहरूलाई

खोजिरहेछु आफ्नोपन

देशफिर्तीका आशाहरू

बुनिरहेछु सपनाहरू,

विस्थापित भूटानी समाजको पुनःनिर्माण !

दिपक थापा

भर्जिनिया, अमेरिका

#### तिमीले पनि सम्झ है

आज मैले फेरि सम्झेँ

तिमीले त सधैँ झैँ

भुल्लकड बनी भुलिसक्यौ होला

हाम्रो स्कूल डाँडा अनि रमाइला पल

एक पल सम्झ त-

हाम्रो मित्रताको मुना त्यहीँबाट सुरु भाथ्यो

ताते-ताते एउटा अबोध बालकसरह

चप्लि ओछ्याई चिसो चौरमा बस्ता

कोदालाको घण्टी बज्थ्यो त्यो समय

पिसाब छुट्टीमा धानको सुत्ली टिपी

कसले ठुलो बजाउने भन्दै फुकेको याद आउँछ-

अनि छुट्टी हुँदा बोराभरि खाँदी खाँदी

सुकेका सालको पत्ता भरेको कहिल्यै भुल्दिन म !

अरूको सिको गर्दै आछामेको पत्ता बेरेर खाएको

बिँडी सम्झँदा अझै पनि मुख खिर्‍याउँछ परर…

अँगेरी यो यति झ्याङ मेरो भनी रिजाब

गर्ने आँट आज पनि हराएको छैन मेरो

होमवर्क नगर्दा क्लासबाट भागी ठुला-ठुला

सखुवाका रुख छानी छानी मलाई लुकाउने साथीहरू

आज खै कहाँ छौ ?

अङ्ग्रेजी सरले कन्सिरी उखेल्दा सँगै सराप्थ्यौँ

कहिले यो सर नपरोस् भनी …

अनि गन्ती गर्थ्यौँ प्रत्येक मिनेट एक एक सेकेन्ड

गणित सरको फर्मुला सोध्ने पालो आउँदा

अझै पनि सम्झेनौ ?

हेडसरको भाटाको चुटाइ

एक चोटि आफ्नो छेपारी छाम त…

त्यहीँ देख्छु हाम्रा एक अर्काका आँसुका

छिटाहरू नमिठा पीडादायक !

स्कुल भाग्दा बेराबाट खाता किताब

पालै पालो अनि छिटोछिटो

सरले देख्छन् कि भनी छिराएको

अनि चौरमा गएर लगाएका गफ-

हाउडे जोक्सहरु..थोरै अश्लीलहरू पनि

एक एक सम्झिरहेको छु म अझै पनि

त्यो ठुलो लाबरको रुख ….अनि हाम्रा गफ-

ब्रेकमा पिठो पालै पालो खाएको बेला

एक अर्काको जुठोले बनाएको हाम्रो नाता

प्रत्येक सुरूपसँग अगि बढेथ्यो बिस्तारै

अनि खै किन हो ? कसको आँखा लागेर हो

एसएलसीमा साटी-साटी

सरको आँखा छल्दै चिट चोरेपछि

हामी कहिले पनि एकसाथ रहेनौँ

बिछोडिएको प्रेम झैँ हामी किन हो एक्लै किन रम्यौ ?

मलाई त कुनै शङ्का छैन

तिम्रै पालो अब सबै पलहरू सम्झिएर मलाई

फेरि मित्रता गाँस है !

अनि म तिमीलाई फेसबुकमा याद गर्न पाउँदा

कत्ति रमाउँदो हुँला झनै

स्काइप र याहुमा हेरा हेर गर्दा …

कसम म तिमीलाई सधैँ टेक्स्ट गर्छु

मलाई फेरि पनि साथी बनाऊ है !

कहिले नछुटिने गरी …सदा सदाको लागि !!

दिल भूटानी

बेल्डाँगी, नेपाल

#### एउटा देश

सिङ्गो पृथ्वी

एउटा देश होस् ।

सिमानाले

तेरो-मेरो अलगअलग

देश

पटक्कै नभनोस् ।

मेरो जन्मभूमि

तेरो जन्मभूमि

एउटै होस्

फरक फरक सिमानाले नदेखोस् !

उत्पत्तिदेखि

तँ जुन हावा र पानी पिउँछस्

म पनि त्यही हावा

त्यही पानी पिउँछु

तर किन

सिमानाले भूगोलचाहिँ अलगअलग ?

सिङ्गो पृथ्वी

एउटा देश होइन र !

जब सीमाहरू उभिएर

विदेशी घोषित गर्छन्

जब बहिष्करण बोकेर सीमाहरू जन्मछन्

तब मान्छेले मान्छेलाई शरणार्थी बनाउँछन्

अनि सीमाहरू

किन चाहिन्छन् मानिसलाई ।

जब कि

हामी पृथ्वीका एउटै मानिस हौँ ।

आकाश साझा हो

अनि देश किन अलगअलग ?

सिङ्गो पृथ्वी एउटा देश हो

जहाँका हामी नागरिक हौ ।

दुर्गा आचार्य

टेक्सास, अमेरिका

#### मैले आज चाबी बुझाएँ

जीवनको बागडोर थियो कि

भविष्य खुलाउने त्यो चाबी

उकासेर परिपूर्णतामा पुर्‍याउने

वा

जीवनको अन्त्य बनाउने

लछारेर, पछारेर

सबै सामु नङ्ग्याउने !

हो, त्यही चाबी

त्यही चाबी मैले बुझाइदिएँ

आजै मात्र बुझाएँ

म नाङ्गिएको थिएँ

मैले लुटाएको थिएँ आफैँलाई

म कुटिएको थिएँ कता कता

जसलाई म खुलाउँथेँ

फूलाउने थिएँ, बँडाउने थिएँ भन्थेँ

कटुतालाई सत्यतामा

सत्यतालाई यथार्थतामा

र, त्यही यथार्थतालाई

प्रयोगात्मक परीक्षणमा ढाल्दै थिएँ

अभाग्यवश,

त्यो चाबी मेरो रहेन अब

जिम्मा दिएँ- जसको थियो उसैलाई ।

चिप्लो बाटोमा

चिप्लिएर “छत्तिस” पल्ट लडे पनि

चाबी साथै थियो

हराइनँ त्यसलाई

“सात अन्तरिक्ष यात्रा” मा

घामको तापले नगलेको

त्यो चाबी

विश्वास गर्दथेँ

जसले मेरो अतीत

मेरो तिक्तता

मेरो रिक्ततालाई

ओझेलमा पारी, नौलो यथार्थता

सपना र,

सानो चाहना पुरा गर्ने थियो होला ।

त्यो फलामे चाबीको

धेरै ठुलो अनिवार्यता

आवश्यकता

पटक्कै थिएन मलाई

बाङ्गिएकै भए नि, थोत्रो

मैलो चाबीमा सन्तुष्ट त थिएँ

उदाउँदै गरेका ताराहरू

स-साना जुनहरू

खसाल्नु थिएन

न कि मैले

“मिल्किवे”मा

समुन्द्र खडा हुन खोजेको नै थिएँ ।

मेरो चाबी के ठुलो थियो र !

भोटे ताल्चा

फलामको लाहाले बनेका

ती

ती वास्तविक बलिया ताल्चाहरू

मेरो सानो चाबीले

के, खुल्ने थियो त !

- असम्भव ।

एउटै ताल्चा बनाउने त भन्दथे

मलाई सुइँको नै थिएन

ताल्चाको उपयोगिता

र, त्यसको प्रयोग

थाहा थिएन वास्तवमै

अनि

“दश” चाबीहरू एक्कठ्ठ गरी

सिङ्गो

धेरै ठुलो र बलियो

एकीकृत गर्ने इच्छा थियो

अन्तत:

ओझेल परेको छाया

अझ शीतल खोज्दै जाँदा

ठूला रुखमुनि

बादलले धमिलो भएको बखत

त्यो छाया बिलायो

अनि, सोचेर

मैले आज चाबी बुझाएँ ।

दुर्गा रिमाल

अल्बरी, अस्ट्रलिया

#### साँच्चै, देशको सिमाना कहाँसम्म हुन्छ ?

देश भनेको भूगोल हो कि

देश भनेको माटो हो कि

देश भनेको क्षेत्रफल हो कि

देश भनेको पर्खाल हो कि

देश भनेको के हो .. ?

मेरा हजुरबाले एउटा देशमा राजाको चाकडी गरे

मेरा बा’ले अर्को देशमा शरणार्थीको उपमा पाए

म तेस्रो देशमा आप्रवासी भएर बाँचिरहेको छु

जीवनले धेरै बुझायो तर एउटा कुरा कहिल्यै बुझ्न सकिनँ

साँच्चै, देशको सिमाना कहाँसम्म हुन्छ ?

देशको अस्तित्व कति हुन्छ ?

भूगोलको क्षेत्रफल कति हुन्छ ?

माटोको माया कति हुन्छ ?

समयको पर्खाइ कति हुन्छ ?

जातिको आयु कति हुन्छ ?

म जहाँ जन्मेँ, त्यहाँ पनि देश थियो

जहाँ शरणार्थी भएँ, त्यहाँ पनि देश थियो

आज जहाँ बाँचिरहेको छु, त्यहाँ पनि देश छ

तर पनि एउटा कुरा मैँले कहिल्यै बुझ्न सकिनँ

साँच्चै, देशको सिमाना कहाँसम्म हुन्छ ?

मैँले तीन वटा जीवन तीन वटै देशमा बाँचेको छु

लाग्छ, मेरो आयु अरूकोभन्दा तेब्बर हुनु पर्ने हो

लाग्छ, मेरो देश एउटाभन्दा धेरै हुनु पर्ने हो

तर यो सम्भव भएन र अझै पनि बुझ्न सकिनँ

साँच्चै, देशको सिमाना कहाँसम्म हुन्छ ?

देउकी ढकाल

भिक्टोरिया, अस्ट्रेलिया

#### म फुलेको दिन

झलझली याद आउँदछ

म सानु हुँदाको दिन

केटाले खेल्ने अम्फी

लुकी-लुकी मैँले खेलेको दिन

आमैले लगाउने हार

दिदी र मैँले पालै-पिलो लगाएको दिन

अनि बाबाले लगाउने टोपी

दिदीले लगाउँदै उत्ताउलो गरेको दिन ।

सानै थिएँ म

सानै छु पनि म ठान्दथेँ

थाहा भएन म हुर्केको

म अग्लो भएको

अनि मेरो रूप

अनि ममा परिवर्तन आएको

अनि म फुलेको ।

प्रश्न गर्दछन् मलाई

हिमाल,

अनि पौवा-पाटी

म हिँड्ने गोरेटा अनि

मैँले पानी भर्ने पँधेराले

म फुलेको कथा ।

उत्तर ममा किन हुनु

जवाफ प्रश्नका

अनि म फुलेका

जन्म फेरि भए

फेरि फुल्ने अवसर मिले

भन्ने थिएँ सायद

म फुलेको कथा ।

देव लामा

जर्जिया, अमेरिका

#### ऊ - हिमनदी, बग्छ हिमशिखरदेखि महासागरसम्म

ऊ - हिमनदी

पहाडको शिखरबाट जन्मेर

उचालिँदै, थेचारिँदै, पछारिँदै

लड्दै, पढ्दै

पहाड पहरासँग अजम्मरी साइनो गाँस्दै

कहिले सुनकोस, मानस

कहिले अरुण, सप्तकोशी

कहिले गङ्गा अनि ब्रम्हापुत्र हुँदै

बगिरहेछ निरन्तर, निरन्तर

ऊसित छ

कहिले भँगालो हुनुको पीडा त

कहिले दोभान हुनुको आनन्द

अनेकौँ चुनौतीहरूको सामना गर्दै

दुई किनारासँग माया लगाउँदै

उष्ण बगरले निल्छ कि भन्दै

अनिश्चितताभित्र निश्चित गन्तव्यको खोजीमा

अँध्यारोभित्र ज्योतिपुञ्जको खोजीमा

ऊ

पूर्व, पश्चिम

उत्तर, दक्षिण हुँदै

कहिले प्राकृतिक प्रकोप

कहिले राजनीतिक अस्थिरता त

कहिले रोजगारीको खोजीसँगै

जीवनको यात्रा –

निरन्तर, निरन्तर गरिरहेछ

अनादिदेखि अनन्तसम्मको यात्रामा

हिमशिखरदेखि महासागरसम्म

उसलाई देख्दा यस्तो लाग्छ

उसले बाँचेको भूगोल र परिवेश पटक्कै उसको होइन

त्योभन्दा धेरै पर, धेरै पर

ऊ महासागरको अँगालोमा हराउन चाहन्छ

किन भने

ऊ विशाल भूगोलको खोजीमा छ

ऊ विशाल छातीको खोजीमा छ

जहाँ भ्रातृत्वप्रेम सलबलाओस्

जहाँ मानवता ढकमक्क फुल्न सकोस्

जहाँ हर्के, बिरे, बहादुरे आदिले आनन्दले बाँच्न सकून्

जहाँ हरिमाया र रनमतिले निर्धक्क हिँड्न पाऊन्

जहाँ क्याक्टस काँडाहरू गुलाफ भएर मुस्कुराउन सकून्

देवीभक्त भट्टराई

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### यी हातहरू

इतिहास लेख्ने यी हातहरू

बन्दुक बोक्न पनि पछि पर्दैनन्

अघि बढ्छन्, चौतर्फ फैलिन्छन्

बिदाइमा हल्लिन्छन् यी कलात्मक हातहरू

कहिले वीरत्व कमाउँछन्

त कहिले अन्धकारमा फस्छन्

हारे पनि चलिरहन्छन्

भाषा नबुझ्दा सङ्केत गर्छन्

कहिले आवाज भर्छन्

यी तेजस्वी हातहरू

लेख्छन्, मधुर धुन निकाल्छन्

शृङ्गार भर्छन्

कलात्मक प्रस्तुति छ यिनीहरूको

संसारको संरचना गर्ने

वैज्ञानिक आविष्कारको ढोका खोल्ने

विकासका बाटोहरू खन्ने

प्रतिवादमा उठ्ने यी हातहरू

कति स्वच्छ छन्

जाल, कपट, दुष्टताको

केही सोच छैन यिनीहरूमा

निश्चल छन् निर्मल छन्

यी कोमल हातहरू ।।

देवी पोखरेल

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### स्मार्टफोन

अमेरिका बस्ने एक नातेदार काकाले

फेसबुकको म्यासेन्जरमा –

‘हेलो! भतिज के छ ?’

भनेर म्यासेज पठाउनु भयो

मैले मेरो स्मार्टवाचको स्क्रिनमा देखेँ ।

अफिसको कामले व्यस्त भएकाले

पछि जवाफ दिउँला भनेर

त्यस म्यासेजलाई त्यतिकै छाडिदिएँ ।

‘बा-आमालाई कस्तो छ, भतिज ?’

भन्ने अर्को म्यासेजको पनि जवाफ नदिँदा

काकाले खै के सोच्नु भयो कुन्नि

र जङ्गिँदै लेख्नु भएछ –

‘त्यहाँ स्मार्टफोन हुँदैन कि कसो ?

छैन भने म यहाँबाट पठाइदिऊँ ?

आई फोन त यही बन्छ नि

कि जानिँदैन चलाउन ?

मेरो आई टी पढेको नाति छ – सिकाइदिन्छ’

त्यसपछि त काममा ध्यानै गएन

मनमा कुतकुती लागिरह्यो,

असिनपसिन हुँदै सोचमग्न भएँ ।

साठी वर्षीय त्यो चुनौतीलाई सहज रूपमा लिनै सकिन

मलाई कताकता पोल्न थाल्यो

हाँस पनि उठ्यो के भन्या होला काकाले त्यस्तो,

साथै रिस पनि झनक्कै उठ्यो

मेरो घोर उपहास गरेकोझैँ लाग्यो

एकै क्षण आँखा चिम्लिएर सिलिङतिरफेर्कें

काकाको त्यही अनुहार देखेँ जो मलाई

स्मार्टफोनकै विषयमा नाना थरी कुरा गर्दै

निरन्तर खिसी गरिएको थियो

सूचना-प्रविधिको युगमा पनि

ढुङ्गेयुग मै रहेको भन्दै गिज्याइरहेको थियो,

दक्ष प्राविधिकले झैँ अब्बल ज्ञान सिकाइरहेको थियो ।

निरीह म, मेरो आफ्नै माया लागेर आयो

लाज लागेर आयो

आँखा खोल्ने बित्तिकै

ती सबै म्यासेजहरू डिलिट गरिदिऊँझैँ लाग्यो

हैन! फेरि जवाफ फर्काइदिऊँ

अनि जवाफमा मेरो स्मार्ट फोनको फोटो नै खिचेर

पठाइदिऊँ जस्तो लाग्यो

फेरि साठी वर्षीय काकासँग

के प्राविधिक युद्ध लड्नु होला र जस्तो लाग्यो ।

त्यस लज्जास्पद घटनाबाट अन्यत्र ध्यान केन्द्रित गर्न

‘एस्प्रेसो’को चुस्कीसँगै

झ्यालबाट बाहिर हेरेँ

तल बगैँचामा दुई-चार युगल जोडी अङ्कमालमा

आलिन हुँदै सेल्फी लिइरहेका थिए

कोही फलैँचामा बसेर फोन थिचिरहेका थिए त

कोही फोनमा कुरा गर्दै, कसैको कानमा हेडफोन

रोडमा दौडिरहेका गाडीका हुलमा

उबर चालक यात्री टिप्न वा झार्न दौडेका देखिन्थे

यी सबै दृश्यहरू अवलोकन गर्दै

कल्पनामा मस्त भइरहँदा

काकाको बेजोड बम रुपी चुनौतीलाई सम्बन्धमा जोड्दै

ती म्यासेजको जवाफ

हृदयको सफा पानामा कोर्न थालेछु ।

प्रिय काका !

हो स्मार्टफोन त साधारण फोन मात्र नभएर

फेसबुकको फिड, म्यासेन्जर, स्टोरी, लाइभ

ट्विटरको लघु ब्लग ट्विट – रिट्विट,

इन्सटाग्राममा फोटाको ह्यासट्याग,

स्न्याप च्याटको क्षण साटासाट,

गुगलको खोज, विश्वमानचित्र आदि,

युट्युबको भिडियो र मुद्रीकरण,

टिकटकको ओठे कला,

स्पोटिफाइको गीत-सङ्गीत,

जस्ता अनेकौँ सञ्जाल र प्राविधिक मेला हो ।

क्याण्डीक्रस र पबजीको खेला हो ।

साथै विश्वलाई सानो ग्राममा परिणत गर्ने जादुको छडी

जीवनलाई ठुलै हदसम्म सरल पार्ने यन्त्र,

सारा संसार अटाउने सौर्य मण्डल नै हो

एउटा बटनका भरमा ब्रह्माण्ड नै

प्रत्यक्ष प्रसारण गर्ने अनुपम आधुनिक आविष्कार ।

परन्तु काका !

यस आविष्कारले हाम्रो

फुर्सदलाई दासी बनाएको छ

समयलाई घुँडा टेकाएको छ

तनमा लागूपदार्थभन्दा कडा नसा चढाएको छ

मित्रतालाई जुटाउनुभन्दा फुटाएको छ

पाहुनालाई चिडियाएको छ

शरीरमा आलस्य थपेको छ

निन्द्रा हराम गरेको छ

अध्ययन लेखनको बानीलाई शून्य पारेको छ

पारिवारिक सन्तुलन खलबल्याएको छ

घरलाई सुनसान तुल्याएको छ

डिनर टेबलमा हुने गफगाफलाई सिद्ध्याएको छ

चुलोचौकोमा माकुराको जालो लगाएको छ

कति बा-आमाका छोरा-छोरी भोकै राखेको छ

सबै उमेर र पुस्तालाई गाँजेको छ

प्रतिष्ठित सभ्य समाजलाई असभ्यताको सङ्घारमा पुर्‍याएको छ

सामाजिक वैभवलाई बिटुलो बनाएको छ ।

त्यसैले काका मलाई यो मेरो स्मार्टफोन

निल्नु न ओकल्नु भएको छ

जाने पनि नचलाई, समुद्रमा मिल्काइदिऊँ जस्तो लागेको छ

र स्मार्टफोन मात्र हैन

मोबाइल फोन पूर्वको समयमै फर्कने रहर लागेको छ

काका ! यस घाँडोविहीन सरल जीवन जिउन मन लागेको छ ।

दैफामे जेठो

ओहायो, अमेरिका

#### सम्झनाहरू

सम्झनाको अखनेले

तितरबितर छरिएका

विगतका त्यान्द्राहरू

सिला सङ्लो गर्दै

हिँड्यो जेठो बटुको बोकी

‘टकुमि’तिर डलर छाप्नलाई

दमकको बिल्डिङमा इँटा छापे जस्तै ।

आङ्ग्रा खोल्साको उकालो र

भोर्ला पोखरीको एकान्त ।

बेलडाँगीदेखि सिन्सिन्नाटीसम्म

कतै पत्ता लागेन, खोजेँ अत्यन्तै ।

हिरो साइकल र टोयोटा क्याम्रीभन्दा

नाङ्लाको बिट तेज दगुरे जस्तो

जाम्पानीको डुबुल्की र कान्छा महाजनको चर्को स्वर

यी मेरा विगतका मीठा सम्झनाहरू

धमिलिँदै गए

मेरो जवानी र सृजना-शक्ति बिलाए जस्तै ।

धर्मेन्द्र तिम्सिना “क्षितिज”

ओहायो, अमेरिका

#### चिठी

एकताका मैले चिठी लेखेको थिएँ

कतै रगतले पोतिएको चिठी

त कतै आँसुले भिजेको चिठी

सायद चिठी खोलिएन होला

सायद चिठी पढिएन होला

र त समस्या झन् जटिल बन्दै गइरहेछ

र त समस्या अझै समस्या नै बनिरहेछ ।

मेरो रगतको चिठीले

कसैको पाप पखाल्नु थिएन

कसैको घरको बत्ती निभाउनु थिएन

थियो त मात्र

समाधान खोज्नु थियो

लाखौँ मान्छेको आँसुलाई

खुसीमा बदल्नु थियो

मुस्कानमा परिणत गर्नु थियो ।

म रोएको थिएँ

सयौँ पटक

त्यही चिठीलाई हेरेर

मैले लेखेको एउटा चिठीलाई हेरेर

कहिले रुखमुनि बसेर रोएको थिएँ

कहिले खुल्ला आकाशको छहारी लिएर रोएको थिएँ

मेरो पीडा मिसिएको चिठी थियो त्यो

मेरो इतिहास मिसिएको चिठी थियो त्यो ।

कहिले आगोमा पिसोल्टिएर लेखेँ चिठी

कहिले जाडोले काँप्दै लेखेँ चिठी

कहिले आधा पेट खाएर लेखेँ चिठी

कहिले भोकै बसेर लेखेँ चिठी

अनि पठाएको थिएँ

उसैको नाममा

उसैको घरमा पुग्ने गरी

तर सायद खोलिएन

सायद पढिएन

र त अझै समस्या जिऊँका तिउँ छ

र त समस्या जटिल बनिरहेको छ ।

अहिले त चिठी च्यातियो होला

अहिले त चिठी हरायो होला

सायद अब भेटिन्न पनि

त्यसैले मजस्तै अर्को चिठी लेख्ने जन्मनुपर्छ

त्यसको घरभित्रै

जसले चिठी सबैलाई पढेर सुनाउनेछ

जसले लङ्गडालाई हिँड्ने बनाउनेछ

आँखा नदेख्नेलाई देख्ने बनाउनेछ

सुतेकालाई ब्युँझाउनेछ अनि

लाटालाई बोल्ने बनाउने छ

अनि हुनेछ समाधान

सधैँका लागि,

सदा सदाका लागि ।

**निमेश भूटानी**

**सिड्नी,** अस्ट्रेलिया

#### स्वर्गको सम्झना

ठूलो पार्न पर्‍यो कठीन कति यो बिग्रेर जाला भनी

हुर्कायौ पिरलो सहेर कति हो घुर्क्याइ चुस्ता पनि ।

आफ्नो सन्ततिको भविष्य बनिने चिन्ता लियौ हर्दम

पाएनौ सपना पुरा नहुने भो तेर्स्यो बडो बन्धन ।।

सुर्ता लाग्छ सधैँ चसक्क मनमा बिझ्दैछ त्यो सम्झँदा

पोल्छ भित्र मूटु सकिन्न सहनै माया बडेको हुँदा ।

तिम्रो कोख बिसे लुकेर कति हो खेल्थेँ म सानो छँदा

रम्थे पो बनका चरा पनि सँगै आएर ती सर्वदा ।।

बस्ता हुन् कति पात शुद्ध वनका मेरो सु-स्वागत् गरी

रूँदा हुन् पशु ती विरक्त बनिँदै आमा हराए सरी ।

खोज्दा हुन् वनका जनादि सबले मीलेर खेल्न भनी

कुर्दै पो छ कि त्यो बगाल वनको छोडेर पक्षी पनि ।।

बाख्रा बस्तुसँगै बगाल वनमा खेल्दै गएको पनि

आयो याद सधैँ पिरोल्छ मन यो कस्तो रुखो जीवनी ।

टाट्नामा पशु थे कति भोकसँगै सङ्घर्ष होला सधैँ

पानी मिल्न सके बरा घिडघिडो बच्ने थियो कि कतै ।।

पाखा खेत भरी पराग बनिँदै झुल्दै छ की पावन

ल्याई बासन त्यो भरेर वनको डुल्दै छ की आँगन ।

मेरा ती रस राग लिप्त मनका प्यारा परेवा पनि

घुर्दा हुन् घरका बसेर सिँढिमा देला र खाने भनी ।।

नवीन प्रभात

**क्यानडा**

#### वा ! उसको आत्मबल

खै कसलाई भनौँ कसलाई सुनाऔँ

कति लेखौँ आखिर लेखेर

कसले पो पढ्छ र !

कसले पो मनन गर्छ र !

उसको निर्धक्कताको वर्णन

उसको आत्मबलको व्याख्या

अनि उसको सरमविहीन अभिव्यक्ति

उसमा आजभोलि एक किसिमको

आत्मबल बढेको छ

ऊ निर्धक्कसँग भन्ने गर्छ

हो म विपक्षमा थिएँ

म विरोधमा थिएँ

मलाई मन परेको थिएन

मलाई कुनै चाहना नै थिएन

म इच्छुक थिइनँ ।

म सिर्फ बहाना बनाउँथे

मलाई लोकाचार राम्रो थाहा थियो

मलाई कस्तो ठाउँमा

कस्तो नाटक रच्नु पर्छ भनेर

त्यसैले सोही अनुसार

आफूलाई नचाएँ

ऊ प्रस्टसँग भन्न सक्छ आज

प्रस्ट वक्ता भएको छ आज

अनि फेसबुकमा बहसहरूमा

निचोरिँदै, निमोठिँदै आउँछ

अनि लेखन गर्छ निर्धक्क

हो, म विपक्षमा थिएँ

म विरोधमा थिएँ

मलाई मन परेको थिएन

मलाई कुनै चाहना नै थिएन

म इच्छुक थिइनँ ।

हो म उही मानिसको

कुरा गर्दैछु

उसको चरित्रको कुरा गर्दैछु

जसलाई दुखेको थिएन

जसको चित्कार सुन्ने

कान थिएनन्,

जसले आफ्नो सन्तानका

लासहरू खेतहरूमा देखेको थिएन

जसलाई बलात्कृत चेलीहरूका

नाङ्गा शरीर हेर्न कुनै अपसोच थिएन

हो जो देश फिर्तीको विपक्षमा थियो

र भन्ने गर्छ निर्धक्क

हो म विपक्षमा थिएँ

म विरोधमा थिएँ

मलाई मन परेको थिएन

मलाई कुनै चाहना नै थिएन

म इच्छुक थिइनँ ।

उसलाई अनाहकमा जेलमा

कोचिएका आफ्ना दाजु – भाइ

माथि गरिएको क्रूरताप्रति

कुनै गुनासो छैन

बरु ऊ खुच्चिङ मार्छ अनि

भन्ने गर्छ

मुलाहरू लु गर आन्दोलन

खायौ होइन

हो, म उही विद्वानको कुरा गर्दैछु

जो स्वदेशफिर्ती विरोधी थियो,

न्यायको विपक्षी थियो

निर्वस्त्रता विरोधी थियो

उसलाई माटो चाहिएको थिएन

बाटो चाहिएको थिएन

र भन्ने गर्छ निर्धक्क

हो म विपक्षमा थिएँ

म विरोधमा थिएँ

मलाई मन परेको थिएन

मलाई कुनै चाहना नै थिएन

म इच्छुक थिइनँ ।

उसले प्रत्येक अभियानको

विरोध गर्‍यो ,

कयौँ पटक भाँजो हाल्यो

वृद्धहरूले चलाएको सत्याग्रह

अनि मेची पुलको धर्नामा

अल्लारेहरूको भिड जम्मा गरेर

उपद्रो गर्न सिकायो

आज ऊ खुलेर भन्छ

मूर्खहरू अझै नर्कमै छन्

भूटान जाने पो भन्छन्

बस कुहिएर

स्वर्ग आउन छोडेर

भोटेको देश जान तातिएका

मूर्खहरू

अनि भन्ने गर्छ निर्धक्क

हो म विपक्षमा थिएँ

म विरोधमा थिएँ

मलाई मन परेको थिएन

मलाई कुनै चाहना नै थिएन

म इच्छुक थिइनँ ।

सायद उसले नसोचेको

स्वर्ग पाएर होला

दुई छाककोलागि सोच्ने

अवस्थाको व्यक्ति

दिनमा दस पटकसम्म

खान पाएर होला

कयौँ साल नफेरिएका कपडा

आज दैनिक फेरिएर होला

उसलाई हिजो पनि दुखेन

अस्ति पनि दुखेन

अनि भोलिको त के चिन्ता होला र

उसलाई त सिर्फ खान पाए पुग्यो ।

हो म उही वरिष्ठको कुरा गर्दैछु

जो पुनर्वासपछि

अत्यन्तै खुसी छ

स्वर्ग पाएको बयान गर्छ

ऊ देश भन्ने, भेष भन्ने

भाषा र साहित्य भन्ने

इतिहास भन्ने, सहिद भन्ने

सबै मूर्ख मानिन्छन्

उसको नजरले

उसको परिभाषाले यस्तै

यस्तै भन्छ

अनि भन्ने गर्छ निर्धक्क

हो म विपक्षमा थिएँ

म विरोधमा थिएँ

मलाई मन परेको थिएन

मलाई कुनै चाहना नै थिएन

म इच्छुक थिइनँ ।

नेत्रप्रसाद आचार्य

       पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### भानु

न नेपाली भाषा सत रहन सक्थ्यो उनि बिना

न हुन्थ्यौँ मालामा सब भव उनेका उनि बिना ।

न गाउँ या बस्ती, घर सहर रामायण बनी

दियालो झैँ बल्दै हर मुटु समाते कण बनी ।।

अहो घाँसी तिम्रो कुन गगन भूमा उदय भो’

भयो पक्का साँच्चो जगत रज हुँदा उदय भो’ ।

जहाँ तिम्रा थोरै वचन पनि आत्मा हुन गए

भए सारा तिम्रै, जल थल र प्राणी पनि भए ।।

बिना तिम्रो गाथा न त छ कविता सार्थक यहाँ

बिना तिम्रो आत्मा न त छ सरिता पावन यहाँ ।

छुने भित्रै कस्तो सरस रचना पर्वत सखा

दियौ अँध्यारोमा झलमल दियो लोचन सखा ।।

नमान्ने को होला, अमर निधि हौ पुस्तक तिमी

बगेका छौ हर्दम रगत धमनी अक्षर बनी ।

जमानाले कोल्टे खुब कुशल फेर्‍यो तर यहाँ

तिमी उस्तै बाँच्यौ अमर यश उस्तै वशु यहाँ ।।

म उर्वीको छाया र नवरत तारा निर बसूँ

र गङ्गा तिम्रो नै अनुचर सदा भै बगिरहूँ ।

हुनेछन् औँला तत्पर नमनका खातिर सधैँ

रही भाषाको त्यो शुभ चरणमा खातिर सधैँ ।

नैनसिङ मगर (सारु)

न्यु योर्क, अमेरिका

#### हामी एक हुनुपर्छ

बाबाआमा सबप्रति नयाँ प्रेम गाँस्नै लगाऔँ

हामी-हामीबिच रिस सबै छोड्न आजै सिकाऔँ ।

हातेमालो गरिकन उठी आज देशै बचाऔँ

नेपालीको तनमन छुने आँट्न गर्ने बनाऔँ ।

टाढा-टाढा कति पर भए हर्ष नाता बनेका

हामी नै हौँ दिलदिल सधैँ देशगाथा भरेका ।

ठुला आशा जति पनि यहाँ धेर बाच्ने भनेका

नेपाली हौँ कमल दिलमा चोट बोकी हिँडेका ।

काला-काला वरपर भए बादलै छेडि पस्नू

साह्रो गाह्रो जति-जति भए आउ नेपाल बस्नू ।

नाता गोता सब जति भए मिल्छ हाम्रा थलामा

हामी एकै घरभित्र थियौँ जन्म पाई धरामा ।

टाढा छैनन् तनमन हुने एक आत्मा मिलाई

फुट्ने छैनौँ परिश्रम गरे हात साथै दिलाई ।

हामी जागौँ अब पवन त्यो वेग जस्तो बनाई

भाषा लेखौँ कलमलिइ यो प्राण आँखा उठाई ।

हाम्रा नाता सबतिर भए हेपिने छैन आमा

राँको बाली वनतिर पुगे छेकिने छैन बाबा ।

मर्ने छैनन् बगरतिर हामी चनाखो भएमा

हार्ने छैनौँ सहरतिर नाता विशाल गरेमा ।

पुजन राई

ओहायो, अमेरिका

#### चित्र

ऊ बेला

परीक्षामा

पाँच मार्ककालागि

एउटा सफा

कागजमा

कोरेको

मेरो देशको नक्सा

अहा!

कस्तो मेहनत

कहिले

छुखातिरको

भूभाग मिल्दैन थियो ।

मेटायो,

फेरि कोर्‍यो

कहिले गेलेफू

कहिले पारो…

..अन्ततः बन्थ्यो

एउटा सिङ्गो देश,

मेरो देश ।

आज

पश्चात्ताप,

यहाँनिर लाग्छ

कि !

ऊ बेला

म “म” नै

नअटाउने

एउटा देशको

कति साँगुरो

चित्र

कोरिरहेको

रहेछु..!!

प्रकाश धमला

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### आमा र तस्बिरहरू

पहिले पहिले मेरी आमा

थालभरि ममताका राता अक्षता

आस्थाका फूलपाती

निश्चलताका अम्खोरा बोकेर

मन्दिर धाउनुहुन्थ्यो

र

हरेक बिहानी शिला पुज्नु हुन्थ्यो

सायद आमालाई ढुङ्गा भगवान् भनी सारै विश्वास थियो ।

म देखिरहन्थेँ पूजा कोठाको दायाँपट्टि

एक निर्जीव तस्बिर

एक अपुरो तस्बिर

एक अपूर्ण तस्बिर

आमा

उही तस्बिर छुनुहुन्थ्यो

र भन्नु हुन्थ्यो-

“नानी मन्दिरमा बाबाको दीर्घायुको कामना गरिर’छु

तिम्रो प्रगतिको कामना गरिर’छु

बहिनीको सफलताको कामना गरिर’छु ”

फेरि छुनु हुन्थ्यो तस्बिर र भन्नुहुन्थ्यो-

“हामी सबैको कामना यिनले पुरा गरिबक्सन्छन्”

सायद आमा महाराजालाई विष्णुको अवतार मान्नुहुन्थ्यो ।

पोहोर सालको आगलागीमा घर जल्यो

लुगाफाटा जले

बाख्रापाठा जले

भगवान् कृष्ण, भगवान् राम, लक्ष्मी, सीता

सरस्वती माताको तस्बिर पनि जले

यति मात्र होइन

मेरी आमाको सौभाग्य पनि जलेछ

तर आमाले जतन गरी राखेको उही तस्बिर

जल्नबाट बचेछ

आमासँग अहिले उही तस्बिर छ

अलि फाटे जस्तो

अलि दोब्रे जस्तो

अलि पुरानो जस्तो

तर चिनिने जस्तो ।

मेरी आमा तस्बिर हेर्दै, अतीत सम्झेँ भन्नुहुन्छ

मेरो पुरानो घाउ सम्झेँ भन्नुहुन्छ

साँच्चै

एउटा कहालीलाग्दो इतिहास सम्झेँ भन्नुहुन्छ

मेरी आमा यो समय

तस्बिर सार्वजनिकरणको पक्ष लाग्नु भा’छ

फोटोकपी गरी

बाटा बाटामा तस्बिर छर्नु भा’छ

रुख रुखमा तस्बिर झुन्ड्याउनु भा’ छ

खोला नालामा बगाउन व्यस्त हुनुहुन्छ

अनि बरबराउनु हुन्छ कि

“म तस्बिरको सामूहिक हत्यामा छु ।”

तर तस्बिर रुख रुखबाट हराउँदै छन्

खोला नालाबाट बटुलिँदै छन्

बाटा बाटाबाट समालिँदै छन्

छिमेकी दाइ तस्बिरको खोजीमा व्यस्त छन्

ओरिजिनल कापीको बार्गेनिङ गरी रा'छ

म्युजियममा राख्नु पर्छ भनी रा'छ

डिमोग्राफिक इम्ब्ल्यान्सको प्रसङ्ग उठाई रा'छ

आमा मौन हुनुहुन्छ

नि:शब्द हुनुहुन्छ

आमा ऐतिहासिक स्तम्भ झैँ एकोहोरो हुनुहुन्छ

सायद आमा स्तम्भ नै हुनुपर्छ

इतिहासको

अतीतको

पीडाको

अनि वीरंगनाको ।

म पहिले पहिले जस्तो देखी रा'छु सबै सबै

तर आमामा किन किन सधैँ सधैँ

तस्बिरको जस्तो शालीनता पाउँदिन

आमा र तस्बिर किन हो किन

म शतप्रतिशत फरक पाउँदैछु ।

प्रतिमान सिवा

ओहायो, अमेरिका

#### मान्छेहरू मान्छेजस्ता देखिँदैनन् आजकाल

अक्सर,

मान्छेहरू मान्छेजस्ता देखिँदैनन् आजकाल ।

सतही भावनामा हेलिएर

प्राप्ति र सफलताको आकाङ्क्षाहरूमा जेलिएर

कतै तिलस्मी कतै तरलतरल लाग्ने

अप्टिकल डिस्टोर्सनका सिकार बनेका,

बहकिने इलुसिभ वक्र-रेखाहरू

भ्यानगग, पिकासोका क्युबिजम  र अमूर्त चित्रकला झैँ

एक आकारमा अनेक प्रकार देखिने मान्छेहरू

अक्सर मान्छेजस्ता देखिँदैनन् आजकाल ।

विनिर्मार्णवादले प्रेरित अभिप्रायहरूमा रमाउँदै

विना सर्तका सर्तहरू टाँसेर

अति उत्तर-आधुनिक युगका आदिम प्राणीझैँ

टुटफुटमा रमाउने

तोडफोडमा रमाउने

मान्छेहरू आजकाल जुट्न छोडेका छन्

कुकुरहरू आजकाल भुक्न छोडेका छन्

तिमी हाँस्छौ

म हाँस्छु

तर मान्छेहरू आजकाल हाँस्न छोडेका छन्

अक्सर,

मान्छेहरू मान्छेजस्ता देखिँदैनन् आजकाल ।

कहीँ बुख्याचाहरूजस्तै

कहीँ मूर्तिहरूजस्तै

कहीँ खिच्चाहरूजस्तै

कहीँ सैतानहरूजस्तै

कहीँ मसिहाजस्तै

कहीँ महात्माजस्तै

कहीँ सन्तहरूजस्तै

कहीँ भुस्याहाजस्तै

अनेक अनेक देखिन्छन् मान्छेहरू यहाँ

तर मान्छेहरू,

अक्सर मान्छेजस्ता देखिँदैनन् आजकाल ।

इमानी हुँदाहुँदै बेइमानी बनेका

मान्छेहरू मान्छेजस्ता देखिँदैनन् आजकाल ।

बादल थापा

नेब्रास्का, अमेरिका

#### आमा–बाबु !

आमा–बाबुलाई

लिपेर–पोतेर सकभर झुन्डाएर

भित्तामा राख्नु भए पनि

टाँसी राख्नु जस्तो !

हप्तै पिच्छे भुक्तानी

महिनै पिच्छे भत्ता

आमा–बाबुलाई त

टाँसी राख्नु जस्तो !

घरमा खाना–पिना, सरसफाइ, नानी गोठालो

तिनै बा–आमा

जन्म दिने र कर्म दिने मात्र नभएर

आज डलर दिने पनि तिनै बा–आमा

सम्भव भए पनि खासादेखि

ठूलो भित्ते–टाँस मगाएर

टाँसी राख्नु जस्तो !

छोराछोरी क्यासिनो र डान्स बारतिर

उसले बा–आमालाई कहिल्यै हेरेको होइन

सकभर देख्नु नपरे पनि हुन्थ्यो जस्तो गर्छ

भुक्तानी त डाइरेक्ट बैङ्कमा डिपोजिट

कसलाई के थाहा

बा–आमा त अचम्मको चिज भो, यार !

भित्तामा राख्नु भए पनि

टाँसी राख्नु जस्तो !

सबैको घरमा झगडा छ आज

बा–आमालाई हेर्न

खुवाउनु पनि पर्दैन, स्याहार्नु पनि पर्दैन

नानीहरू तिनै बा–आमाले स्याहार्छन्

फेरि हप्तै पिच्छे भुक्तानी

महिनै पिच्छे भत्ता, यार !

आमा–बाबुलाई

लिपेर–पोतेर सकभर झुन्डाएर

भित्तामा राख्नु भए पनि

टाँसी राख्नु जस्तो !

आजभोलि

सबैले बा–आमालाई टस लगाएर हेर्छन्

उमेर नपुगे भत्ता नपाइने

बिराम नभए केयरगिभर नपाइने

तपाईँको उमेर पनि भरखर साठी !

खुट्टा के भएर दोब्रिएको, नचल्ने बनाउन सकिँदैन ?

बाबु–आमा हरेक जुक्ति छ आज

सम्भावनाको मुहान भनेकै बाबु–आमा हो

त्यसैले

आमा–बाबुलाई

लिपेर–पोतेर सकभर झुन्डाएर

भित्तामा राख्नु भए पनि

टाँसी राख्नु जस्तो !

जीवन चर्खा कति अचम्म छ, है !

आज फेरि बाबु–आमाको महत्त्व

बुझ्न थालेछन्

आफ्नो कर्तव्यलेभन्दा पनि स्वार्थले, आवश्यकताले

आमा–बाबुप्रति सबैको लगाव छ

बा–आमा त अचम्मको चिज रहेछ

टाँसी राख्नु जस्तो !

घरमा पन्ध्र–बिस पाउन्डको नानी बोक्छन्

दश पाउन्डको बोराको चामल खन्याउँछन्

जब घरदेखि बाहिर निस्किन्छन्

चस्मा अनिवार्य, हातमा लौरी

कहिले त सर्भिस कोअडिनेटरले भेट्छन्

हृदयाघात भए जस्तै गरिदिन्छन्, यार !

कहाँ दुख्यो आमा भन्नुपर्छ,

टाउको पनि मसार्छ, घाँटी पनि छाम्छ

दुखेको चाहिँ कहाँ हो ? भन्यो

यता–यता गर्छ, कता हो कता !

आमा–बाबुलाई

लिपेर–पोतेर सकभर झुन्डाएर

भित्तामा राख्नु भए पनि

टाँसी राख्नु जस्तो !

बि.पी. शर्मा

नेदरल्याण्डस्

#### फोछु - मोछुका गीतहरू !

फोछु र मोछुसङ्गमका शान्त सुमधुर गीतहरू

गुन्जिरहेछन्

म उभिएको राइन नदीको एकान्त किनारहरूमा

यस्तै म चुपचाप सुनिरहेको छु ती लम्पसार गुञ्जनहरू

कहिले सडकवारि उभिन्छु, कहिले सडकपारि उभिन्छु

तर मौन उभिन्छु

बगरभरि अतीत बिछ्याएर उभिन्छु

किन टोहोलाउँछन् मैले टेकेका पाइलाहरू मलाई हेर्दै

किन खलबलिएर बग्छन् यी मनहरू बेलगाम

राइन नदीका बगरहरूमा

सायद स्मृतिका वेगहरू, खोज्दा खोज्दै हिँडिरहेको हुन्छु

नदीका बहावसँगै बगिरहेको हुन्छु,

म भित्रभित्रै उभिएर भए पनि

हिँडिरहेको हुन्छु ।

आउन त आउँछन्

पिरोलिएर, अमिलिएर, थिचिएर, दबिएर यादहरू

केही जीवन्त भएर आउँछन्

केही मरेर आउँछन्

केही प्रतिबिम्बित भएर आउँछन्

तर

केही रुँदै आउँछन्, मतिर दश-हात फैलाउँदै आउँछन्

ॐ  मणि पद्मे हुँ मन्त्र जप्दै आउँछन्

र त म

यहाँ कहिलेकाहीँ ‘नर्थ सी’को किनारमा

बालुवामाथि उभिएर आँसु दुहुने गर्छु ।

मेरा बा सुनपानी निल्नुभन्दा पहिले नै

धानका बाला छाम्दै मरे

मेरा बा खेतबारीका कान्लामाथि उभिएर

कोइलीका मिठा गीतहरू गाउँदै मरे

मेरा बा मखमली र गुराँसका थुँगाहरू टिप्दै मरे

मेरा बा उनको जन्म स्थलको धुकधुकीहरू छातीमाथि

सुमसुम्याउँदै

बौद्ध राजाबाट दसैँमा आफ्नो निधारमा टाँसिएका

टीकाहरू पुछ्दै मरे

र

यस्तै धेरै बाहरू सुसाउँदै मर्दैछन्

विगतको सम्झनाको आगोमा जलेर मर्दैछन्

समुद्रवारि

समुद्रपारि

त्यसैले -

ए फोछु-मोछुहरू !

उर्ल अब पहिरो लिएर आऊ, समानताका गीतहरू गाउँदै आऊ

मेरा बाका घाउहरू पखाल्दै आऊ

तिम्रा गीतहरू प्रत्येक छोर्तेन र गुम्बाका पवित्र  आँगनहरूमा

गुञ्जायमान भएर गाउँदै आऊ

तिम्रा गीतहरू धामधुम, सुनकोश र मानसका भन्ज्याङहरूमा

गुन्जाउँदै उथलपुथल पार्दै आऊ

एउटा नयाँ दिन, एउटा नयाँ गीत गाउँदै

नयाँ मौसमको वर्षा भएर आऊ

ॐ मणे पद्मे हुँ हुँदै आऊ !

1. जोङ्खा भाषामा 'फो'को अर्थ पुरुष र 'मो'को अर्थ महिला हो । त्यस्तै 'छु'को अर्थ पानी हो । फोछु र मोछु भूटानको पुनाखा जिल्लामा पुनाखा ऐतिहासिक दरबार नजिकै फरक फरक दिशाबाट भेट हुने दुई नदीका नामहरू हुन् । एउटा शान्त भएर बग्छ, अर्को धारिलो भएर वेगसँग बग्छ ।
2. धामधुम, सुनकोश र मानस पनि भुटानका नदी हुन् ।
3. राइन नदी स्विट्जरल्याण्डबाट सुरु भएर जर्मनी, नेदरल्याण्डस् हुँदै ‘नर्थ सी’मा मिसिन्छ ।

बि.बि. पौडेल (भूटानी)

ओहायो, अमेरिका

#### लुटिएको मान्छे

हो म हजारौँ चोटि पटक पटक लुटिएको मान्छे

अनि सयौँ पटक ठगिनसम्म ठगिएको मान्छे

भिडमा, गन्दागन्दै गन्तीमा हराएको मान्छे

बोल्दाबोल्दै कैयौँ पटक बोली भासिएको मान्छे

बस्दाबस्दै बसेकै ठाउँबाट लखेटिएको मान्छे

हो, म आफ्नै देशबाट निकालिएको मान्छे

रोग, भोक अनि नाङ्गो शरीर बुझेको मान्छे

देशमा सुनगाभा र सुनाखरी रोप्न खोज्दै गर्दा मन फाटेको मान्छे ।

साँच्चै हो, म आफ्नै देशबाट लखेटिएको मान्छे

गाँस, बास र कपासको भिख तिमीसँग माग्ने मान्छे

पक्का हो, धेरैसँग हात फिँजाई मागी खाएको मान्छे

हो, म त असजिलो समय र परिवेशमा भिजेको मान्छे

पीडा, माया ममता अनि दुःख सुख सबै बोकेको मान्छे

तर, अझै पनि आकाश छुने लक्ष्य बोकेर अघि बढेको मान्छे

देशमा परिवर्तन हेर्ने, भिखको ऋण तिर्ने जोस भएको मान्छे

पछाडिबाट छुरा रोप्ने साथीभन्दा अगाडिबाट

छुरा रोप्ने दुस्मन प्यारो मान्ने मान्छे।

त्यसैले शान नदेखाऊ तिमी, म बिना कसुरको मान्छे

हो, म आफ्नै देशबाट निकालिएको मान्छे

साँच्चै हो, म आफ्नै देशबाट लखेटिएको मान्छे ।

बुद्धमणि ढकाल

केन्टकी, अमेरिका

#### हामी गोवर्द्धन उठाउँछौँ

पश्चिम आकाशको पहेँलो घाम

खरको छानाभरि पोखिएको बेला

गोधूलिमा वन चरेर फर्कन्थे

तिलकु, गोल्मु, तार्कु र गोठु

पहेँलपुर निहुरिएका बालासँग

सयपत्री हाँसेको हुन्थ्यो

नाङ्लाभरि थुपारेर

गाँसिन तयार हुन्थे, थुँगाहरू

त्यो उन्माद

मादल-च्याब्रुङसम्म घन्केको हुन्थ्यो

हाम्रो गाउँमा

तिहार पसेको होला फेरि ।

खोइ यहाँ त,

सयपत्री फुलाउन सकिएन,

हरियो गोबरले आँगनभरि

स्वागत ओछ्याउन सकिएन

सहरमा मुर्झाएका थुँगाहरू

बेचिँदा रहेछन्, यहाँ

सडक छेउका पसलबाट

हाम्रो वैभव किन्न

आफ्नो अस्मिताले दिएन

अन्तरात्मा छचल्किएर पोखिन खोज्छ,

खोइ देउसी भट्ट्याउन

यहाँ आँगनको चार कुना मिलेन,

भैलिनीको आशिष् थाप्न

एक नाङ्लो दीपशिखा बाल्न सकिएन

मादल-च्याब्रुङ ठोकेर

एक फेर नाच्न पनि त

प्रकृति चाहिँदो रहेछ

यहाँ त साक्षात्कार गर्न सकिएन

प्रकृतिको त्यो अथाह भण्डारसँग

जहाँ हामीले

हातमा हँसिया लिएर

सुनौला बाला बटुलेका थियौँ

छुपुछुपु हिलोसँग रसिया गाएका थियौँ,

मियो गाडेर

मङ्सिरमा दाइँ गरेका थियौँ,

थोपा थोपा फुलेको थियो

हामीले जिलाएको माटो

साँच्चै उर्वरा भूमि बनेको त्यो ।

अब हामी गोवर्द्धन उठाउन

देशभरि छरिएका छौँ,

औँसीको कालरात्रिलाई चिर्न

खिनौरा मोमहरू जोडेर

भोलि राँको सल्काउने छौँ

भ्रातृत्वको शङ्खनाद

बहिराहरूलाई सुनाइछाड्ने छौँ

धनसिरी, जलढक्का बाँधेर

कुलागांग्रीको चुचुरोमा,

अनि फर्फरिनेछ, एउटा झन्डा

जसले युग-युगान्तर वकालत गर्नेछ

नागरिकहरूको पक्षमा ।

बृजेश गौतम

डेनमार्क

#### म हराएको सूचना

मलाई थाहा छ यो कुनै खबर बन्दैन

आफू हराएको विज्ञापन छापेर

आफैँलाई खोज्ने जाँगर पनि म गर्दिन

म छु तर छैन !

म हुँ तर होइन !

गुगलमा मेरो नाम खोज्दा

०.४ सेकेन्डमा १००० नतिजा देखिन्छन्

मेरो फेसबुकबाट स्थिति सम्प्रेषण भइरहेकै छ

मेरो स्मार्ट फोनले

हरेक पाइलाहरूको गणना गरिरहेकै छ

सडकभरि यत्र तत्र छिपाइएका

गुप्त क्यामराहरूबाट

मेरो चालको विश्लेषण हुँदैछ

मेरा रुचि अनुसारको विज्ञापन मेरो स्क्रिनमा

ठिक्क पुर्‍याउन विज्ञापन एजेन्सीहरू

मेरोपछि लागेका पनि छन्

कृत्रिम!!!

अचेल आफूलाई आफैँ खोज्छु,

भेट्छु पनि तर मैँले भेटेको म, म होइन,

को हो ? त्यो पनि उत्तर छैन मसँग !

एक कुरा पक्का थाहा छ,

म हराएको छु,

नभेटिने गरी!!

कृत्रिमता वास्तविकताभन्दा मीठो छ,

किन खोज्छु म सत्यता ?

बेनु मैनाली (इट्टाघरे)

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### मलाई भिक्टोरिया क्रस चाहिएको छैन

इतिहासको पानामा स्वर्ण अक्षरले

भिक्टोरिया क्रस पाएको लेख्दा-लेख्दा

गोला बारुदको धुवाले निसासिएर

क्रान्तिका झिल्का र लप्काहरू उकेल्दै

दुस्मनका ताता राता सिर्काहरूले

सिञ्चित हुँदा हुँदै

अब त आफूलाई थाकिसकेको

केस राशि पाकी सकेको

आभास भइरहेछ ।

त्यसैले अब म कसैको छोरा खोस्ने छैन

कसैको सिउँदो पुछ्ने छैन

भोलि जन्मिने सन्ततिलाई अनाथ बनाउने छैन

मलाई कसैको भिक्टोरिया क्रस चाहिएको छैन ।

युद्ध भूमिमा निसासिँदै

कसैको ज्यान लिनु छैन

अर्काको भूमिका लागि म लडी सकेँ

अब यो भन्दा धेरै लड्नु छैन

पैसा र वीरताको लागि युद्धभूमि रोज्नु छैन ।

म त आफ्नो भूमि फर्की सकेको छु

कोकिलको मधुर स्वरलाई

बमको आवाजले रोक्ने छैन

वर्ष भरिको भाग्य खनिरहेका किसानको

भाग्य खोस्ने छैन

पाखाका तरुलहरूको बिउ मासेर

पहाडबाट झर्ने झरना रोकेर

खोलाहरूको खाजा पानी मास्ने छैन

एउटा योद्धा भिक्टोरिया क्रसको पछाडि परेर

गोला र बारुदको आवाजमा नाच्ने छैन

पराइको वीर गतिमा हाँस्ने छैन ।

माया !

के हो यो माया भन्ने बस्तु ?

युद्ध भूमिमा लड्दा- लड्दा

दुस्मनलाई पराजित गरेर अघि बढ्दा- बढ्दा

माया ममता सबै सबै भुलिसकेछु

वीरताको अहम्ताले मातिसकेछु ।

मलाई कुनै सम्मान चाहिएको छैन

पैसाको रासमा ज्यान राखेर

बाजी जितिसकेको छु

अब पैसा र सम्मानका खातिर

आफ्नो ज्यानको बाजी थाप्नु छैन

मलाई त अब बिहानी उषा झैँ

हाँस्ने हिमाल चाहिएको छ

पहाडबाट निरन्तर बग्ने झर्ना छुनु छ

युद्ध भूमिको होइन, खेतबारीमा

असारे गीत गाउँदै धान रोपेको

हलो कुटो बोकेर मकै छरेको

आफ्नै पौरखमा बाँचेको किसानको

जीवन दृश्य चाहिएको छ ।

अब मलाई सृजनशील कलम चाहिएको छ

रोदी घरमा बसेर आजादको सास फेर्दै

चौतारी र देउरालीमा ढल्केर

जीवन रमाउनु छ

भो अब मलाई कसैको भिक्टोरिया क्रस

चाहिएको छैन !!

बैरागी माइलो

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### विगत सम्झेर वर्तमानबाट

जुन देश जहाँ

परिश्रमसँगै मस्किरहेका हुन्थे घामका किरण

त्यो टारी खेतले बर्सेनि

धान फलाउँथ्यो वा मेरा बा आमाको पसिना

मोतीका लहरा लहराउने ती फाँटभरि

सम्पन्नता देखाउँथे वा सुसाउँथे दुःखका सुस्केराहरू

ती  झरना, ती हिमालहरू

हाँस्दछन् वा रुन्छन् सम्झेर मलाई अझैसम्म

जसरी माटो रोइरहेछ सम्झेर आज पनि ।

किन उठ्यो विद्रोहको सुनामी  र

हिर्कायो हाम्रो खुट्टा, ढाड र घाँटीसम्म

त्यसपछि !

न त हामी हिँड्न सक्यौँ आफ्नै गोरेटो

न त पुग्न सक्यौँ आफ्नै गन्तव्य

सोच्छु हिजोआज

कति लाटो पो रहेछ

कति सम्म सोझो पो रहेछ

मेरा पुर्खाहरूको इतिहास

मेरा पुर्खाको बलिदान

आज पछुताई रहन्छु सम्झेर आफ्नै विगत ।

त्यो राज्य सत्ताको वधशाला भित्रबाट

हराए अनायासै कति

वर-पिपलको छहारी  ताप्ने बटुवाहरू,

बिरानो बने असङ्ख्य देवीथान र देउरालीहरू,

विक्षिप्त बने कति चीरहरणपछि देवीहरू

कति टुहुरा भए कलिला आँखाहरू

कसरी चिन्नु  बुढा “बा”ले

भुईँमा सुस्ताई रहेको छोराको लास ?

किन बाध्य भए कलिला भाइहरू

टेकेर दौडन आफ्नै दाइहरूको लास

र त गुञ्जिरहयो विरहको एकोहोरो अन्तरा

क्रुद्ध समयले यसरी नै  घिसार्दै ल्यायो

यो रित्तो बाटोसम्म र त

खाली पैतालाले तय गरे यहाँ सम्मको यात्रा ।

अझै ती बारीका कान्ला भरि

फुल्दै होलान् अझै फूलहरू

मिसाएर हाम्रै अलिकति आँसु

मुस्कुराउँदा हुन् हाम्रै सम्झनामा

टिप्ने हाम्रा बहिनीहरू पनि त्यहाँ छैनन्,

छैनन् अहिले हाम्रा दसैँ ,तिहार र भैली पनि

अनायासै सम्झिएँ म खेल्ने सुन्तला बगान

पाक्दै–खस्दै गर्न थालेको पनि वर्षौँ भयो

रछ्यानको आरुको बोट पनि बुढो भयो अब त

तैपनि छैन म आफै त्यहाँ ।

छ त सबैसँग आ–आफ्नै

स्मृतिको अमिलो मानसपटल,

जुन समय

बिहानै दुःखसँगै उदाउँथ्यो घाम

र अस्ताउँथ्यो हिजो जस्तै

थाह छैन कति पल्ट पस्थ्यो हाम्रो अगेनासम्म

र नाच्यो हाम्रो अभावको मझेरीमा ।

धेरै पल्ट जले छाप्रासँगै हाम्रा सुनौलो  सपनाहरू

थुप्रै पल्ट बगे झुपडीसँगै  आसाहरू

कयौँ  पल्ट मक्किए अनि ढले हाम्रा सङ्घर्ष

तर पनि खोजिरहेँ मैले

जुनकिरीको पछि दौडिएर उज्यालो

रमाएँ डाइस र खोप्पी खेलेर बाल्यकालमा

मिठाईका खोललाई पैसा सम्झिएर ।

जुन वेला भोको पेट बोकेर

जीवनको अक्षर पढेँ वा दुःख पढेँ ?

रगतले भिजेको बाको लास सम्झिएर

गाली गर्नु छैन त्यो माटोलाई ।

थाह छ !

मसँगै रोइरहेछ त्यो माटो पनि

यातनाले मक्किएका “बा”का हाडहरूसँगै

सजाएको छु अनेकन्  सपनाहरू

कतै फुल्छन् कि कुनै दिन

पुगेर एक दिन त्यही माटोमाथि

जहाँ मेरो  आँसु, रगत र पसिना छ

त्यस दिन चिच्याउँदै उठ्ने छ

बर्बरताको त्यो कालो इतिहास ।

आज म जहाँ छु

जे छु / जे छैन पनि

र पनि बाँचिरहेछु

बाबाहरूका पुराना तस्बिरहरू हेरेर

कहिलेकाहीँ बरबराउँछु आमाहरूका मुजा परेका निधार हेरेर ।

छोराछोरीका कलिला आँखामा भोलिको सपना भरेर

अनि बोकेर अलिकति आशा

दबाएर अलिकति निराशा

कहिले काहीँ साँच्चै भन्न मन लाग्छ

परदेशिएको  छ यो  ज्यान

तर तर .….

कहिल्यै परदेशी बन्न सक्दो रहेनछ यो मन ।

भक्त घिमिरे

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### **प्रेमको श्राद्ध**

ए...पोकली आमा

आज ‘ भ्यान्टेलेन डे’ अरे त !

स्कुलको झोला बिसाएर स्याँ स्याँ गर्दै

भ्यान्टे नातिले अघि भन्दै’थ्यो

‘हजुर बा- खै भ्याण्टेलेन मना’को ?’

उसैले सुनाएको हो मलाई आज-

जीवनका असी वसन्त पार गरुन्जेल,

तिमी र मैले जुनीभरि ला’को माया

हरेक मोडहरू, जीवनका घाम-छाया

सङ्घर्षका उकाली ओराली

सुखमा दुःखमा भिजेका परेली,

ती जम्मै कथाहरू एकै चोटि भन्नुपर्ने दिन रे !

साहुको घरमा ऋणसित प्रेमको सौदा गरेर

फेरि त्यही जोड-घटाउमा वर्षभरि

तिमी र मैले अर्काको खेतमा

हँसिया, कुटो-कोदालो चलाउँदै

यायावरीय जीवन पालेको कथा,

साहुकै घरमा कहिले-

हाम्रो खुसीको लिलामी भएको व्यथा;

ती जम्मै जम्मै हिक- हिकहरू ओकलेर

आज प्रेमको नाममा

विश्वबजारभरि बिस्कुन फिँजाउनु पर्ने रे...!

उहिले प्रेमको बिस्कुन नछरे पनि

हाम्रो प्रेममा कुनै खोट थिएन !

आज गुलाफ दियो, प्रेम गर्छु भन्यो-

एक महिनामा बिहे गर्छु भन्यो-

आजैदेखि ‘लिभिङ टुगेदर’ भन्यो,

कुनै बेला बिहे र सुत्केरी एकै साइत,

कोही बेला न्वारनको भोलिपल्ट छोडपत्र;

ब्रेक अप हो कि केजाति भन्छन्;

आज त प्रेम शून्य शून्य छ, फिक्का फिक्का छ;

आज लाग्दैछ,

गुलाफ र भ्यालेन्टाइनसँग

साटिँदैछ प्रेम !

जीवित रहेसम्म केही वस्तु वा कोही व्यक्ति

उसको नाममा कुनै शोक वा उत्सव मनाइँदैन;

मलाई लाग्दैछ, आज प्रेम मरिसक्यो र नै

स्नेही प्रेमको शवमाथि थुँगो फूल चढाएर -

वर्षमा एक चोटि प्रेमको श्राद्ध गर्दै,

मानिसहरू प्रेमकै अभावमा

वर्षैभरि तनावग्रस्त रहन थालेका छन् !

तिमीलाई थाहा छ निः

हामी त नबोलेर नै प्रेम गर्थ्यौँ,

बजारु विज्ञापनबिनाको

हाम्रो प्रेम सदाबहार थियो !

गाउँको एउटै मेला जाँदा

म उकालीको देउरालीमा पुग्दा

तिमी तल फेदीको चौतारीमै हुन्थ्यौ !

‘किन यसो गर्छौ, चाँडै आऊ, सँगै हिँडौँ’

म भनी टोपल्थेँ, तिमी निहुरिएर मुस्काइदिन्थ्यौ;

तिमीमा त्रास थियो-

सँगै हिँडेको देखे अरूले

‘छिल्लिएका’ भनेर खिसी गर्लान् !

तिमीलाई सम्झना छ छैन कुन्नि-

म सम्झिरहेको छु;

उस बेलाको समय...आजजस्तो

‘आई लभ यु’ नभन्नु बेग्लै कुरा थियो;

हामी त अझ दोहोरो बोलचाल नभई नै

तीन वटा सन्तानका धनी भएका थियौँ !

तिमीलाई याद होला निः

म दफ्तर जाने बेला

तिमी मलाई हेर्थ्यौ, म तिमीलाई

शब्दले नबोली हाम्रा आँखाहरू बोल्थे,

आँखैले तिमी भरे चाँडै आउनु भन्थ्यौ,

आँखैले म पनि ‘हुन्छ’ भन्दिन्थेँ ...!

न त्यति बेला रोश डे थियो

न त भ्यालेन्टाइन डे नै थियो !

आज झैँ-

प्रेमकै नाममा, तस्बिरको प्रेम जताउन

तिमीलाई एक थुँगो फूल दिएर कहाँ पुग्थ्यो र,

तिम्रै लागि भनेर मैले कान्लाभरि,

बारीका डिल डिलमा गुलाफका बोटहरू रोपेको थिएँ;

तिमी मन लाएर तिनलाई गोडमेल गर्थ्यौ !

एक चोटि सम्झ न:

हामीले रोपेका गुलाफका बोटहरू

आज कत्रा भए होलान्...

एक बोट बराबर कति फूल फुले होला...!

हिसाब गरौँ त अब...

ती बोटबाट एक एक थुँगा टिपेर

आज कति वटा भ्यालेन्टाइन जोडीलाई बाँड्न पुग्दो हो ?

भानु ढुङ्गाना

क्यानडा

#### धुपी

म धुपी दरिलो, म आफैँ भरिलो

जति पर्छ हिउँ, उत्तिकै झरिलो

भए चिसो ठन्डी, म उस्तै रहन्छु

परे हुस्सु ढुस्से, म जस्तै सहन्छु ।

जति हिउँ बर्सोस्, म गल्दै नगल्ने

जति लाग्छ बादल, म चल्दै नचल्ने

म जस्तो छु जे छु, सधैँ कै सरी छु

चले हावा हुरी, म उस्तै भरी छु ।

अरू वृक्ष सारा, गए नङ्गिएर

म नित्यै खडा छु, न छु रङ्गिएर

हिमाल, पहाड, तराइभरि छु

जति हिउँ खस्छ, उतिकै दरी छु ।

न नाङ्गो हुनु छ, न बाङ्गो हुनु छ

म जस्तो छु जे छु, सधैँ उस्तै नै छु

जति चल्छ हुरी, चले के भयो र ?

छँदै छु भरिलो, ममा के गयो र !

नयाँ आँकुरामा, नयाँ भित्री चाल

न देख्यो उदाङ्गो, न बिग्रियो डाल

म जस्तो छु उस्तै, भरी पात घारी

स्वयम् हृष्टपुष्ट, बनेँछु म घारी ।

सधैँ छु हरियो, सधैँ छु भरिलो

कसैबाट केही, नमिल्दै करिलो

ममा छैन केही, मलै जल्लिएको

न त देखियो नै, थलै सम्मिएको ।

जति कावा चुम्छु, हुरीकै नै चुम्छु

जति सारा गुम्छु, नभ धर्ती गुम्छु

मिली साथ हुन्छु, बनी आठ मास

झरी जान्छन् पत्र, धरा धाम वास ।

म केवल रहन्छु, रहेकै त हुन्छु

बाह्रै मास पत्र, सँगै नै बहन्छु

ममा छ फर्क यो, न ता लाली चढ्छु

केवल एकै नासे, म बढ्छु, म चढ्छु ।

सुरिलो खिरिलो, म साल समान

ममा गुण उस्तै, म छु धैर्यवान

चुरो अग्नि ज्वाला, मट्टितेल सरिको

न तातो न चिसो, सधैँ छु हरियो ।।

भरी आङ मेरो, रहेका यी पत्र

भरी डाल हाँगा, रहेका यी सत्र

म दिन्छु सहारा, पखेराहरूमा

लता-वृक्ष गाछी, बराबर अरूमा ।

रहे मास केही, अरू नाङ्गा रूप

म दिन्छु हरियो, बगैँचा स्वरूप

जब पालुवामा, अरू पर्खी पालो

म दिन्छु नयाँपन, जब जान्छ त्वाँलो ।

भावना गिरी

क्यानडा

#### उनकै लागि त हो

सिउँदोमा सिन्दूर भरेकी छु

हातमा उनीलाई कोरेकी छु

गुलाफबाट लाली चोरेकी छु

उनकै लागि त हो ।

जानी नजानी रातो सारी बेरेकी छु

गलामा हरियो पोते भिरेकी छु

सुनकेस्री केस लाछामा घेरेकी छु

उनकै लागि त हो ।

स्वर्गबाट भर्खर झरेकी छु

उनकै गाउँ आज मात्रै सरेकी छु

ओठमा अनमोल मुस्कान छरेकी छु

उनकै लागि त हो ।

सोमबारे व्रत बसेकी छु

त्यो मुटुको कोठामा पसेकी छु

दिलकै कविता रचेकी छु

उनकै लागि त हो ।

महादेव नै ठानेकी छु

सात जुनीको सहयात्री मानेकी छु

नारी हरियो चुराले बानेकी छु

उनकै लागि त हो ।

भोला ढुंगाना

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### तिम्रो र मेरो सम्बन्ध कस्तो ?

तिम्रो र मेरो सम्बन्ध कस्तो ?

शब्दमा ठ्याक्कै व्याख्या गर्न नसकिने

लगनगाँठो साक्षी भए पनि त्यसैभित्र नकसिने

गाँठो कस्न, हो त्यही गाँठो कस्न

तिमी पूर्व मोडिन्छौ, म मोडिन्छु पश्चिम

फर्किहेर्छु सम्बन्धलाई, मनमा अर्कै बस्छिन् ।

तिमी कति जाती, आघातमा पनि हात दिने

तिमी कति साहसी, विश्वासघातमा पनि साथ दिने

दिनभरि हेर्छौं, रातभरि भोग्छौँ ।

सम्बन्धका सारा पीडा आफैँभित्र

लगनगाँठोभित्र पनि नकसिने

कस्तो है ‘हाम्रो‘ चरित्र !

सबैलाई खुसी पार्न तिमी रोएको त्यो दिन

म जति खुसी थिएँ, त्योभन्दा बढी हाम्रो समाज

संस्कार परिपूर्तिको नामको त्यो निःशुल्क भोजन

लिने र दिने होडबाजीको त्यो प्रतिष्ठाको ओजन

बेचिएर उनी, मभित्र पस्छिन्,

बहुमूल्य उनी, फेरि त्रासमै बस्छिन् !

मूल्यले तिर्न नसकिने 'तिमी' नारीहरूको यो गुण,

चलन-चल्ती र दायित्वकै नामले भस्म गरेँ

सामाजिक कुरीति र कुसंस्कारको खोल ओढेर

दृश्यहीन तिरस्कार र देखावटी प्रेमको फूल गोडेर

मेरै संरक्षणमा मक्ख परिरहन्छिन्

सबैको सल्लाहमा मेरो सेवा गरिरहन्छिन् !

उखान, टुक्का र अन्धविश्वासले विक्षिप्त 'हामी'

अनि तिनै 'हामी' रमाउने सुन्दर कलङ्कित ठाउँ

भो अब 'हामी' बाट मलाई बराबरको 'म' बन्न देऊ

लगनगाँठोमा पूर्व लागेकी आफ्नीलाई कसिलो बन्न देऊ

फेरि उनी, मलाई सम्बन्धमा कस्छिन्

अनि पो उनी मेरो साझेदारमा बस्छिन् !

भोलानाथ सापकोटा

                             सिकागो, अमेरिका

#### साहित्यिक सम्पदाका स्रोत

वेदै शास्त्र महा छ ज्ञान ढुकुटी ! लागेर सद्ज्ञानमा

स्तूतीमा रमने छ ध्यान सबमा ! जानेर ऋग्वेदमा।

शुक्लै वेद छ यो, सुज्ञान जगको ! यज्ञादि स्रोत्शास्त्रमा

सङ्गीतै सबको छ,स्रोत जसको! मानेर साम्वेदमा ।।

विज्ञानै प्रविधी, अथर्व जगको ! स्रोतै छ त्यै वेदमा

वेदैमा जगको, सु-ज्ञान सबको ! स्रोतै छ यो वेदमा ।

कर्मैकाण्ड गरोस् ,विज्ञान त  पढोस् ! सङ्गीतको स्रोतमा

स्तूती प्रार्थनमा, समाज सबको ! ज्ञानै छ यो वेदमा  ।।

वैदिक् काल बिते छ, व्यास तबको ! स्रोतै छ गीता महा

कर्मै भक्ति र ज्ञान -योग सहजै ! ध्यानै छ सीपै महा ।

विज्ञानै जगको, विकास हुन गो ! गीता छ साक्षी यहाँ

रामायण् सबको छ , काव्य जगको ! विश्वास आदर्शमा ।।

माहा-भारतमा- छ ,काव्य सबको ! राज्नीति विश्वै महा

मत्स्यै, कूर्म, वराह, नारद, शिवै  ! ब्रह्माण्ड,देवी महा ।

मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत नै ! हो ब्रह्म- वैवर्तमा

लिङ्गै,वामन,स्कन्द, विष्णु,पदमै ! ब्रह्मै, हरि -वंशमा ।।

अश्वै-घोष र कालिदास सम यी ! दण्डी, रिमालै महा

शेक्पीयर्, इलियड्, भरत्-मुनि यिनै ! वाणै छ साहित्यमा ।

रोमीयो, जुलियट्, छ नाट्य जगमा ! ओडीसि वड्स्वर्थमा

पूर्वै-पश्चिम चर्चितै छ ,सबमा ! लक्ष्मी- प्रसादै जहाँ  ।।

शुद्धै व्याकरणै छ, नाटक कतै ! काव्यै त ! जीवन् महा

पक्कै साङ्ख्य, निबन्ध, दर्शन अझै ! ज्योतीष अस्तित्वमा ।

को हौ ! मित्र !! पढौँ सदा उपनिष् ! ज्ञानै छ गम्भीरमा

आकाशै , प्रकृती  सु-ज्ञान जनका ! काव्यै छ जीवन् महा ।।

भोगै कर्म र धर्म, दर्शन सबै ! विश्वास हाम्रो यहाँ

लाभै, अर्थ छ मोक्ष , दीन सबमा ! प्राचीन संस्कारमा ।

नामै धेर कथा प्रबन्ध उपन्यास् ! साहित्य न्यायै महा

थन्क्यायौँ षटदर्श नै ! जगतमा !!  निष्कर्ष वेदान्तमा ।।

अम्मर् कोश सधैँ, रिमाल सम नै ! आफन्त मित्रादिमा

मेरो गर्व छ, सम्पदा -सहज नै ! गन्दै छु हर्दम् जहाँ ।

ल्याटिन्, ग्रिक्,अनि संस्कृतै  जननि नै ! स्रोतै छ हाम्रो जहाँ

कान्छो बानि बसाल्नु हुन्न जहिले ! माधुर्य बोल्ने महा ॥

आफ्नो भाव समेट, आज यसरी ! सम्मान सौन्दर्यमा

विज्ञानै अबको, विकास सबको ! पाइन्छ आफ्नै पना ।

हाम्रा यी विषयै, नभूल जहिले ! सम्पत्ति आफ्नै महा

विश्वैमा रहनेछ, स्रोत अब हे ! विज्ञान ज्ञानै महा ।।

भोला सुवेदी

क्यानडा

#### अब ता भानुजयन्ती बिरानो भएछ

पूर्वीय सभ्यताको बिहानीसँगै रक्तिम ज्योति छर्दै

नेपाली भाषामा छन्द माधुर्यको सुवास छर्दै

उदाए'थ्यौ तिमी आषाढ २९ गते युगको आशा उमार्दै

लेखियौ तिमी सरस्वती वरदपुत्र नेपाली व्यञ्जनहरूमा

दीप जल्दछ तिम्रा सम्झनामा तिमी वरदान थियौ

पुजिन्थ्यौ तिमी नेपाली धरातलभरिमा श्रेष्ठ भएर

पढिन्थे तिम्रा गुणगानहरू मधुर भाकाहरूमा

सुनिन्थे तिम्रा अक्षरहरू दिनका कुना-कुनाहरूमा

तर अब ता बिरानो भएछ भानु जयन्ती !

बोकेर नवयुगको शुभ-सन्देश सृष्टिका नवीन आस्थाहरूमा

सुनिन्थ्यौ तिमी प्रकृति जस्तै भावका अविरल छन्दहरूमा

रम्दथ्यो यो गौरव कवि अनि कवयित्रीका मन-मन्दिरहरूमा

वसन्त ऋतु ढल्किएपछि गृष्म लीला फर्किएपछि

आफ से आफ फुर्दथे कविताका सुन्दर पङ्क्तिहरू

आफ से आफ बोल्दथे कविताका सुन्दर भावहरू

गाउँदेखि सहरसम्म र सहरदेखि गाउँसम्म

फुल्दथे वसन्ती वनझैँ कविताका सुनाखरीहरू

तर अब ता बिरानो भएछ भानु जयन्ती

पूर्वीय कल्पनाका धाराप्रवाह सिर्जनाहरूमा उभिएको तिम्रो आकाश

करुणा र वीर रसका आनन्दित भाकाहरूमा रामायणका अक्षरहरू

आफैँ बोल्दथे कोकिल कण्ठ खोलेर विभूति आस्थाहरू

सायद तिमी उदाउँदै गर्दा सेक्सपियर र मिल्टनहरू

आफ्नो विरासत छोडेर अस्ताइसकेका थिए

सायद तिमी उदाउँदै गर्दा यता देवकोटा र मोतीरामहरू

एक्काइसौँ शताब्दीका बिपनाको सपना देख्दै थिए

स्मरण रहोस् !! हामी असल पुर्खाका सन्तान तर उनीहरू

असल सन्तान त पुर्खा; हामी कविता सम्झँदा कुर्सी तान्छौँ

तर उनीहरू कवि सम्झँदा विभूति सम्झन्छन्

सायद त्यसैले अब ता बिरानो भएछ भानु जयन्ती !

रावणको वध गराएर राम विजयको महिमा सुनाउने

बधूशिक्षामा बधूलाई दिएका उपदेशका भाका सुनाउँथ्यो

जवानीमा राम र सीताको प्रेम-प्रमोद सिकाउने रामायण

सायद आज पश्चिमी प्रभावका शिखण्डीहरूले मेट्दै छन् कि

शालीन मूर्तिका आवरणमा कोरिएको मधुरो चित्रजस्तो

सावित्री र सत्यवानको अमर प्रेम-कहानी विषाक्त पारे जस्तो

धर्मयुद्धमा चक्रव्यूहमा पारिएको पाण्डव पुत्र अभिमन्युजस्तो

यात्रुका सहजतामा पुजिने डाँडाको शून्य देउराली जस्तो

कठै बरी अब ता बिरानो भएछ भानु जयन्ती !

नेपाली भाषाका शक्तिका शिखर आस्थाको महिमा

वृहस्पति अवतार त्यो बिहानको सुरश्मि उदाउँदा

पूर्वीय सभ्यताको क्षितिजमा इन्द्रेणी सजिएको थियो

तिम्रो सुमधुर जीवनलीला सुन्न पाउने हामी अबलाहरू

तिम्रा विम्बहरूका प्रतिबिम्बित इन्द्रियहरूमा अडिएर

भोलिका बिहानहरू सम्झाउने हाम्रा नवीन सपनाहरूमा

धावा बोलिँदै छ यहाँ पुस्तान्तर विवेकहरूमा

हामी झर्दछौँ जसरी वसन्ती पालुवाले पुरानो पात झार्छ

त्यसैले होला अब ता बिरानो भएछ भानु जयन्ती !!

मदन दुलाल

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### आउनेहरू/जानेहरू

आउनेहरू/जानेहरू

आउनेहरू आउँछन् [जान्छन्]

माया लाउँछन्

र

स्मृतिमा मीठा यादहरू छाडेर

कतै सुदूर संसारमा [विलीन हुन्छन्]

आउनेहरू [जानेहरू]

हिँडी दिउन् [मधुशालाको बाटो ]

र

चुमी दिउन्

कसैले छाडी हिँडेका

[ गुलाबी अधरहरू ]

…. र शान्त पारून् ती रित्ता ग्लासहरूको [तरुण इच्छा]

आउनेहरू [जानेहरू]

हिँडी दिउन [नदी किनार]-को बाटो

र

निषेधित गरून् उत्ताउला [जल-कुम्भिकाहरू ]

…. र आफुमाथि राखिएका [चिसा डोबहरू] सम्झँदै बगिरहोस् नदी

आउनेहरू [ जानेहरू ]

हिँडी दिउन [निधीवनको बाटो]

र

बुझाई दिउन् [रासलीला] तरुण-तपसीहरूलाई

…..र बजिरहोस् जीवनको [नौरंगी प्रेमिल ] बाँसुरी ती…रि.. रि…

आउनेहरू [जानेहरू]

हिँडी दिउन् प्रेमको त्यो प्रेमिल फाँट

र

बुझाई दिउन् [रोमियो जुलियट] -को मधुरता

—— [लयला-मज्नुन ]\_को सुमधुरता

—— [ दुश्यन्त-शाकुन्तला]-को कोमलता

\_\_\_\_\_ [ मुना-मदन ] को सुन्दरता

र

बुझाई दिउन् [राधा कृष्ण]-को अद्भुत प्रेमिल सरगम

आउनेहरू आउँछन् [जान्छन्]

माया लाउँछन्

र

स्मृतिमा मीठा यादहरू छाडेर

कतै सुदूर संसारमा [विलीन हुन्छन्]

मणिराम धिमाल “दीपित”

टेक्सास, अमेरिका

#### बाबा नहुँदा घर

बाबाको यस धर्तिमा किन अहो हुँदैन ठाडो शिर

आमाको कति गर्छ तारिफ सधैँ के भिन्न के खातिर

यी आँखा किन भिन्न हेर्छ मनुले पारी ठुलो अन्तर

छानो ओत हुँदैन छाक दुःखको बाबा नहुँदा घर ।।

उस्तै त्याग पवित्र मोह ममता उस्तै छ चाला पनि

उस्तै काख विलास रम्छ बबुरो उस्तै छ बोली पनि

उस्तै कर्म सिकाउने जगतका माता पिता ईश्वर

न्यानो काख हुँदैन पूर्ण सुखको बाबा नहुँदा घर ।।

माता हुन पृथिवी पिता गगन हुन हुन् धर्ति देखाउने

सारा दुःख र दर्द आदि मनुका छन् झुल्कने अल्पिने

यस्तो दिव्य मनुष्य जीवन दिने संसारमा को छ र

यो सृष्टि सब शून्य हुन्छ जगको बाबा नहुँदा घर ।।

बाबाको उपमा कुनै कलमले सक्तैन लेख्नै कुनै

सारा सृष्टि चलाउने शिव उनै ब्रह्मा र विष्णु उनै

बाबा विष्णु समान हुन् जगतका आस्था उनै हुन् तर

यो संसार कहाँ अडिन्छ र यसै बाबा नहुँदा घर ।।

शिक्षा ज्ञान दिने गुरू पनि उनै हर्ता र कर्ता उनै

सारा जीवन कर्मपद्धति दिने ज्ञाता पिता हुन् उनै

अर्को छैन कुनै महापुरुष यो संसार सृष्टि पर

हाम्रो जीवन पूर्ण हुन्न कहिले बाबा नहुँदा घर ।।                           

मञ्जु खड्का

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### आखिर किन म बाँचे ?

केही शब्द छैन मसँग

ती आमालाई भन्ने

हातमा समाइरहेकी छोरी

प्रकृति नै वैरी भएर

हातबाटै च्वाट्टै चुँडेर

नि:सन्तान बनाएको क्षणमा

म हेरिरहेथेँ

ती आमा

छट्पटाई-छट्पटाई रोएर मुर्छा परिरहिथिन्

भन्दै थिइन्-

“एकाएक कालो भुँवरी आयो

आँखामा तुवाँलो लागे जस्तो भयो

हे दैव ! भन्दै छोरीको हात च्याप्प समातिन्

आखिर मभन्दा ठुलो आएपछि

मेरो केही लागेन ।

एक्कासि जिन्दगी तहसनहस भयो

मेरोलागि संसार निराकार

बिलकुल निराकार भयो

मेरो जीवन

शिशामा ढुङ्गाले हानेर झर्‍याम्म फुटेसरह भयो

यो सत्यता झुट होइन

तर मलाई विश्वास लागिराख्या छैन

मेरी छोरी मलाई कतै बोलाइराख्या छिन् होला

आमा आमा शब्द

मेरो कानमा गुञ्जायमान भइराख्या छ

कता-कता यो शब्द

एक्कासि कानमा परेर

मलाई झस्काइदिन्छ ।”

ती आमा छटपटाइरहेको  म हेरिरहेथेँ

उसो के के भनिराख्याथिन्-

“एक पलमा मेरो संसार बिलायो

मैँले देखेको ठुलो सपना

मैँले बुनेको नौलो इच्छा/आकाङ्क्षाको माला

सुनामीको एक छालले

सब चकनाचुर बनाइदियो

कोपिलामै

मेरो फुल्ने फूल चुँडियो

कलिलो मुना भाँचिए मात्र हुन्थ्यो

आखिर बोटै उखेलियो”

उनी बोल्दै थिइन्-

“म कस्ती आमा

मैँले मेरी छोरी बचाउन सकिनँ

अभागी म

आखिर किन बाँचे ?”

मेरो मुटु कहाँ त्यति दर्बिलो थ्यो र?

बिचरालाई भन्ने

शब्द नै मसँग थिएन

रुँदै बर्बराइराख्या थिइन्-

“नाम-निशाना

चिनो-बानो

केही छैन मसँग

न त एक तस्बिर छ

हेरेर चित्त बुझाऊँ

न कुनै उसको प्रिय चीज छ

सधैँ आफूसँगै राखौँ

बरु प्रभु !

तिमीले कसैको कल्याण गर्छौ भने

ममाथि गर

आखिर मेरो हातबाट

मेरी छोरी लग्यौ

यो फिक्का संसारमा

अब उसो बाँच्नु छैन

मेरो बिन्ती

मलाई पनि मेरी छोरीसँगै लैजाऊ भन्दै थिइन्

अभागी म

आफ्नै हातबाट मेरी छोरी उछिट्याएँ

तर किन बाँचे म ?”

माया भट्टराई

केन्टकी, ओहायो

#### अनुत्तरित प्रश्न

म आफ्नो घर-बारी छोडेर

बाहिरिनुको कारण सोध्छु घरमा

आमा, दिदी, मामा-माइजू, भिनाजु लगायत आफूभन्दा ठुला-बडासँग,

तर कसैबाट सही उत्तर पाउँदिन,

कसरी हामी आफ्नै भूमिबाट विस्थापित भयौँ ?

यो मेरो प्रश्नको कसैले उत्तर दिँदैन,

हामी यता आए’सी कुनै कुनै नेपालका साथीले भन्छन् कि,

‘तिमीहरूको पुर्ख्यौली थलो पो हो त नेपाल, कहिले आउँछौ फर्केर ?’

म अकमक्क हुन्छु

अनि सोध्छु घरमा फेरि, उत्तरमा खै मात्र पाउँछु ।

त्यसैले म यी कुराहरूमा अनभिज्ञ नै छु अहिलेसम्म पनि

सानै थिएँ उ बेला

भूटानबाट लखेटिँदा

कोहीबाट नि सही उत्तर पाउँदिन मेरो सोधाइको

तर सधैँ एउटा कुरा चाहिँ सोचिरहन्छु कि,

यदि नेपाल हाम्रो पुर्ख्यौली थलो हो भने त

यही थलोमा हामी पुर्खाका सन्तानलाई

चाहिँ किन शरणार्थी बनाएर राखियो त ?

आखिर हाम्रा हजुरबा, कुप्रा हजुरबाहरूले

पनि दस नङ्ग्रा खियाएर खाँबा किल्ला ठोकेर

घर कटेरो बनाएका थिए होलान्

हाम्रा भावी सन्ततिलाई हुन्छ भनी

साँचेका थिए होलान्,

तर हामीलाई नेपाली बनाएर राख्नु त कता हो

शिविरको सङ्कुचित दायरामा राखिएको थियो

हो यस्तै प्रश्नहरू उब्जिन्छन् मेरा मनमा

तर कसैबाट सही उत्तर पाउँदिन ।

मौसमी ढुङ्गाना

क्यानडा

#### दशैँको याद

यता विदेशमा

आफ्नू देश जस्तो हुँदैन !

दसैँ त आयो

तर घर लिपिँदैन

अनि मनले मनलाई छुँदैन ।

दसैँ त आयो

रोटे-पिङ हुँदैन

सबै मिली रातो टीका लाउँछन्

तर कानमा सिउरिने

जमरा हुँदैन ।

मिलीजुली सबै खान्छौँ

साथ हाँसी- खेली

तर सुख्खा-सुख्खा दसैँ, दसैँ जस्तै हुँदैन ।

यस्तै रहेछ चाडबाड

सम्झनामा चढेँ

पहाड -पहाड ।

रमेश दियाली

ओहायो, अमेरिका

#### त्यो ‘रातो’

रङ्ग र मेरो पहिलो भेट

मलाई रङ्ग…..

र रङ्गहरूसँग खेल्न सारै मन पर्छ

गुलाब होइन, गुलाब

जस्तै देखिने फूल…

अनि फूल भित्रका राता राता रङ्गहरू

हो म त्यही बगैँचाको एउटा फूल हुँ

के फरक छ र ? फूल र ममा

उस्तै रङ्गहरू,..

तर…….

आज म रातो रङ्गहरूसँग बिस्तारै

पोखिँदै जाँदै छु….पोखिँदै छु आफैसँग

मुटु दुखेर कुटुक्क कुटुक्क भएको बेला

स्तब्धतालाई भङ्ग गर्दै चिच्याउँछु .. आमा … आमा

चिच्याउँदै गर्दा, मेरो सानो भाइ

टुप्लुक्क आई पुग्छ ।

हताश, निराश र

डरले ओठ…

थर्थराईरहदा मेरो भाइले रगतका

घव्वा मेरो खुट्टाका चेपमा देखाइरहेको हुन्छ

ऊ … हेर त दिदी ! तिम्रो खुट्टा!

रगतले पोतिएछ…

म सुस्त सुस्त रङ्गिँदै जाँदै थिएँ …

बिस्तारै बिस्तारै…

पिडाले जलेर खाग बन्न लाग्दा

अब

अब आमा आइपुगिन् …

आमाले गुन्युको टुक्रा च्यार्र…र……

च्यातेर म माथि फ्याँकिदिँदा

गुन्युको टुक्रामा

पोखियो रङ्ग र बन्यो क्यानभास

भाइ अचम्म मान्दै क्यानभासलाई

छुन खोज्दै गर्दा, आमाले पाप र

पुण्यको भाषा बर्बराईरह्की थिइन्

छुन हुँदैन…

हेर्नु हुँदैन…

बोल्नु हुँदैन…

म खुल्ला मैदानमा शीतल खोजी रहेको बेला

आफू भित्रभित्रै दबिएको थिएँ।

आकाश चोइटिएर टुक्रा-टुक्रा हुँदै गर्दा

बादलभित्र मेरो जीवनको रङ्गहरू खोज्दै थिएँ

सायद ती इन्द्रेणीका रङ्गहरू हुन पर्छ

रातलाई चिरेर अन्धकार हट्दै जाँदा

मेरा आकृतिहरू विलीन हुँदै हराउँथे

मलाई अन्धकारको भुमरीमा धकेल्दिए

म म निसास्सिएर, बन्द कोठामा कैद भएँ

ताराहरूसँग एक्लै घण्टौँ बसेर

कुरा गर्थेँ

गोठबाट गाईहरूले टुलुटुलु हेरि रहन्थे

सायद!!!….

गाईहरूलाई पनि मलाई जस्तै भयो होला

मन भक्कानियो, आँखा रसायो

थोपा थोपा रगत आशुमा भिज्दै हराउँथे

र म फेरि चिच्याउँथे….. आमा …..आमा..

बल्ल थाहा पाएँ …

म नछुने भएको रे ?

अनि पोखियो फेरि रातो रङ्ग…..

ठिक उसै गरी … पोखिएँ म पनि

रमेश गौतम

नर्वे

#### चिताको आगो साँच्चै तातो हुँदोरहेछ

आजको यो कविता

म एउटा आदिम बस्तीमा उभिएर लेख्दैछु ।

मलाई

यो कविता लेख्न पटक्कै मन थिएन

म चाहन्थेँ-

यति बेला म

तिमीलाई सम्झँदै

केही रोमान्टिक बनौँ

प…र क्षितिजमा डुब्दै गरेको रातो घाम

मेरो टाउकै माथिबाट उडेको

मायालु चराको एक युगल जोडी

सरर्र बहँदै गरेको बसन्ती पवन

माथि टाकुराको सल्लाको रुखमुनि

मुस्कुराउँदै गरेका युवायुवतीहरू

अनि यो सेतो हिउँ;

यी सबै कुराले मलाई

रोमान्टिक बनाउनु पर्ने हो

अझ भनौँ

मदहोश बनाउनु पर्ने हो

कामुक बनाउनु पर्ने हो ।

यसरी बहने यो बसन्ती हावा

तिमीलाई बोकेर आउँथ्यो मेरा सामु

तिम्रो केसराशी छरेर मेरो अनुहारभरि

मेरो हृदयभरि मादकता भर्थ्यो

म इन्द्रको बाटिकामा

कम्मर मर्काउँदै गरेकी

उर्वशीलाई हेरेर टोहोलाउँथे

तिमी हिउँ कोट्याएर

माछा हेर्दै मुस्कुराउँथ्यौ

जमेको समुद्रमाथि बसेर ।

आज मैले

तिम्रो खरानी उडाएको छु

वायुमण्डलमा

आगोले निल्दै गरेको

तिम्रो शरीरले वहन गरिरहेको दर्द

मेरो मुटुले भोगेको छ

तिम्रो चिताको ज्वालो हेरेर

रुझेका मेरा आँखा–

म कामना गर्छु-

त्यो पानी प्रदूषणहीन भइदेओस्

चिताको आगो पनि त तातो नै हुँदो रहेछ

तिमीलाई पनि थाहा भयो होला !

तिमी उभिएको धर्ती

एकाएक दब्यो र तिमी भासियौ समुद्रमा

तिमीलाई समात्न खोज्दै गरेको म

समुद्री आँधीको प्रचण्डतासँगै हुत्तिएँ कतै

डुब्दै गरेको तिम्रो शरीरबाट

बेजोडसँग विषालु ग्यास निस्कँदै थियो

आँखा चिम्लिएर

मनैले नियालेँ वरिपरि

संसार अँध्यारो थियो ।

तिम्रो चिता जल्दै गर्दा

सबै कुरा जम्यो एकाएक

तिम्रो पराभौतिकीसँग

मलाई कहिल्यै विश्वास थिएन ।

मेरा प्रिय वैज्ञानिकहरूले

संसारलाई छलेका रहेछन् यतिन्जेल

उनीहरूको संसारको तापमान वृद्धि

अथाह ध्रुवीय हिमपिण्डको पग्लाई

हरित गृह ग्यासहरू

सबै झुटा कुरा रहेछन्

तिमी पर्माफ्रोस्टको अनन्तताभित्र

हरायौ कता कता ।

तिमी जलेको खरानी

केही हावामा उड्यो

केही माटोमा मिल्यो

म निक्कै त्रसित भएँ-

तिम्रो शरीरबाट

अघि निस्किएका विषालु ग्यासहरू

वायुमण्डल मै मिले

तर तिमी

अझै सुतिरहेकीछ्यौ

अचलायमान !

तिमी एक चोटि मात्र भए पनि

मुस्कुराए हुन्थ्यो ।

तिमीलाई

सगर डढेको हेर्ने मन थियो

स्वाल्बार्डको एकान्त टापुमा

पग्लँदै गरेको हिउँमा

काम्दै उभिएको हिमभालु हेर्ने मन थियो

माउन्ट पिनाटुबो विस्फोटन पश्चातको

विचित्र अनि मनमोहक सूर्यास्त हेर्ने मन थियो ।

उठ, हेर त !

यो उत्तरध्रुवीय ज्योति

छाम्न सक्ने गरी/ खेलाउन सक्ने गरी

तिम्रो अनुहारमा पोखिएको छ ।

वायुमण्डलमा

उड्दै गरेको तिम्रो खरानी

हिमपातसँगै झर्‍यो धर्तीमा

अब यो खरानी मैले

कुन समुद्रमा बगाउने होला !

म टोहोलाइरहेको बेला

टुप्लुक्क आइपुगेकी थिइन्

क्यानडाको हार्सचेल टापुबाट यी वृद्धा

“पर्माफ्रोस्टको भ्रममा

तिमी दिशाहीन नबन

एकै छिनमा यो सम्पूर्ण धर्ती पग्लनेछ

र हाहाकार गर्दै निस्किने छन् चिहानभित्रका लासहरू

म मेरा पिता-पुर्खाका लासको चीत्कारसँग

भागिरहेछु अनन्त कालदेखि !

तिमी पनि भाग्ने तयारी गर

यो लासलाई छुनु हुँदैन

यसले ठुलो अनिष्ट गर्नेछ ।”

रोटी पकाउन मुछेको पिठो जस्तै

गलेको माटो

बेजोडसँग झर्न थाल्यो

ती वृद्धाले भने जस्तै

तर

कुनै लासले मेरा सामु

चीत्कार गरेन ।

कस्तो अनिष्ट हुने हो भनी

काँपिरहेको थिएँ म

मैले पत्तै पाइन

तिमी कता बग्यौ, कता हरायौ ।

तिमीलाई माया गर्ने म

चिरिएँ-

हीनताबोधले

किङ्कर्तव्यविमूढताले

भयले/त्रासले ।

मलाई थाहा छैन

तिम्रो बिम्ब कहाँ पुग्यो यति बेला

लाखौँ वर्ष बितेछ

म एक्लै छु

म लाचार छु ।

आज म

मङ्गल ग्रहको एउटा

सुविधा सम्पन्न प्रयोगशालामा बसेर

पृथ्वीको जलवायु परिवर्तनको नमुना कोर्दैछु

मेरा सहकर्मीहरूले

धेरै हजार वर्षको भगीरथ प्रयासबाट

पृथ्वीको समुद्रीतलसम्म पुगेर

कोरलको चट्टानको एउटा सानो खण्ड ल्याएछन् ।

मेरा आँखाहरू

बादलले भरिए फेरि

त्यो कोरलमा अवस्थित

अक्सिजन आइसोटोपहरूको

तुलनात्मक अध्ययनबाट होस्

वा

गह्रौँ धातुको

रेडियोधर्मी क्षयको अध्ययनबाट होस्

मेरो निष्कर्ष–

म कोरलमा

तिम्रो अनुहार भेटिरहेछु ।

तिमीले कोरलको रसायन बोकेर

के गर्‍यौ हँ

लाखौँ वर्षसम्म?

मैले आज

एउटा कठिन कार्य पुरा गर्नुछ

तिम्रो शरीरको कण-कण कोट्याएर मैले

बितेका करोडौँ वर्षहरूमा

पृथ्वी किन “पृथ्वी” हुन सकेन

खोज्नु छ

मैले तिम्रा प्रत्येक अङ्ग-प्रत्यङ्ग नङ्ग्याएर

पृथ्वीमा आफ्नो अस्तित्व प्रमाणित गरेका

कमसेकम

पाँच वटा हिमयुगहरूको चित्र उतार्नु छ

मेरी प्रिया !

तिमीलाई यसरी च्यातेर मैले

करिब २६ लाख वर्षअघि सुरु भएको

वर्तमान हिमयुगको

गतिकी पत्ता लगाउनु छ ।

यसरी

लाखौँ वर्षपछि

प्रयोगशालामा भेटिएकी तिमीसँग

कस्तो प्रेम साटासाट हुँदो हो

मलाई थाहा छैन ।

तर तिमी त

खण्ड खण्ड बाँचेकी छ्यौ आज

मङ्गल ग्रहमासमेत

छङ्छङ् गरिरहेको यो छहराले

तिमीलाई खुसी दिन सक्ने छैन

समुद्रको गहिराइमा

तिम्रो अस्तित्व सङ्कटमा छ

जलवायु परिवर्तन

समुद्री अम्लीकरण

विस्फोटक मत्स्य सिकार

आदिको एम्बुसबाट

तिमी कदापि सुरक्षित छैनौ ।

यसरी

तिमी प्रत्येक पल मर्दैछ्यौ

लाखौँ वर्षदेखि

तिम्रो चिताको आगो तापेर म

आहत भएको छु

रक्तरञ्जित छ मेरो परिवेश !

चिताको आगो साँच्चै तातो हुँदो रहेछ ।

रवि खनाल

मिचिगन, अमेरिका

#### प्याज र यादहरु

जीवनको पहाड आरोहण गर्दै गर्दा

बेस क्याम्पको याद आयो

कहिले डुब्दै … कहिले तैरँदै….

स्मृतिमा डुबुल्की मारिरहेँ

अनायासै,

अतीत

एउटा मिठो मृगतृष्णा

अणु अनि परमाणुको

अनपेक्षित रूपान्तरणमा तरल बन्यो

तप्प-तप्प सागरको पानी झैँ

नुनिला थोपाहरूमा

म रित्याउँदै थिएँ ती यादहरू

थोपा थोपामा……

एउटा शून्यताको अन्त्य

हो शून्यताको अन्त्यसँगै प्याजको याद आयो

त्यसलाई नियालिरहेँ

आवरण कुरूप त्यसको

केस्रा केस्रा पत्र-पत्र नियाल्दै पुनः शून्यतामा हराउँछु

जसरी अतीतको तस्बिर नियाल्छु त्यसरी

रहस्यको गहिराइमा एउटा आविष्कार―

प्रतिक्रिया फरक, प्रतिफल उस्तै

प्याजको आवरण कुरूप

यादको आइरहने बानी कुरूप

प्रतिफल छल्किरहन्छ आँखामा

समयले दिएका अनुभव

अनि ती बहुमूल्य पलहरू

समग्रमा सिङ्गो अतीत

मूल्यहीन थोपाहरू बग्छ

हो ती रासायनिक यादहरू आँखासम्म आउँछन्

अनि थोपा-थोपामा बगिरहन्छन् ।

स्व. राकेश काफ्ले

#### कहिल्यै नथाक्ने घाउ

यो हिँड्ने पाउको पीडा त

के पीडा हो र डाक्टर सा'ब ?

वास्तविक पीडा त छातीमा छ

बढिरहेछ जसको राप दिनदिनै

मेरो खुट्टाको त उपचार हुन्छ

तिमी नै भन्छौ

यो त जाती भइहाल्छ नि !

तर मेरो छातीमा धेरै वर्षदेखि घाउ छ

जहाँबाट दिन दिनै

दर्दको ज्वालामुखी दन्किरहन्छ

न यसको उपचारमा कुनै डाक्टर संलग्न छ

न निको हुने अभिलासा नै छ

सत्य हो डाक्टर साब अब

म पाउको पीडादेखि कहिल्यै रुँदिन

वेदनामा जस्तोसुकै चट्याङ परे पनि

अब म कहिल्यै डराउँदिन

अब म कहिल्यै चिच्याएर कराउँदिन

जसरी सानो खोलो गएर

ठुलो खोलोमा मिसिएर हराउँछ

जसरी सानो माछालाई निलेर

सक्छ ठुलो माछाले

मेरो खुट्टाको पीडा पनि त्यसरी नै

छातीको दर्दमा गएर एकाकार भयो

त्यसैले मेरो खुट्टामा घाउ भए पनि

कुनै पीडा छैन डाक्टर सा’ब !

ए डाक्टर साब !

सक्छौ गर यो दन्किँदो छातीको चिरफार

र लगाऊ मेरो दुखिरहेको पहिचानमा मलम

निकालिदेऊ निरङ्कुशलताले गाडेका

सारा यी किला र तिनका अवशेषहरू

हटाइदेऊ विवशता र अकर्मण्यताले

भिराइदिएका बिल्ला

र तिनका सबै सबै

विगत, वर्तमान र भविष्यहरू पनि

र मात्र तिमीले बनाएको पाउले

छातीभरि स्वाभिमान उभिएर संसार हिँड्न सक्छ

अनि सिङ्गो विश्वले

यो नेपालीभाषी भूटानी हो भनी चिन्ला

म नेपालीभाषी भूटानी हुँ

गर्वले यति भन्न कहिल्यै चुक्दिन

संसारको जुनै कुनामा गए पनि

हिम्मत छ अब कहिल्यै झुक्दिन

मेरो पनि आफ्नै पहिचान छ दुनियाँमा

अब म खडा शिर गरेर

नेपाली हुँ भन्न कहिल्यै भुल्दिन

हो डाक्टर सा’ब

अब म कहिल्यै चिच्याएर कराउँदिन

यी गोडालाई जति चिर्छौ चिर

मरे नि आमा भनेर

म कहिल्यै चिच्याउँदिन

किन कि मेरी आमालाई

मैँले शकुनीको हातमा छाडिसकेँ

वैरीको सामु कहिल्यै नपर्ने गरी

म टाढिइसकेँ, हो सयौँ डाँडा काटिसकेँ

त्यसैले त अब म काल आए पनि

किन आत्तिनु ? भनेँ नि पटक्कै डराउँदिन

तिमी हात कमाउँदै चिर्दै छौ मेरा पाउ

तर घाउले सेक्छ र दुख्दैन मेरो घाउ

तिम्रो विज्ञानलाई न कि तिमीलाई

थाहा छ मेरो वास्तविक घाउ

थाहा पाएर पनि विडम्बना

सक्दैनौ निको पार्न यो छातीको घाउ

सक्छौ भने डाक्टर मेरो छाती चिर्ने

उपाय सिक्न तिमी विज्ञानको सागरमा जाऊ

कृपया कुनै उपाय खोज

अनि चिरफार गर मेरो छातीको घाउ

नत्र सा’ब तिमीले सक्दैनौ

निको पार्न यो मेरो घाउ

तिमी मुस्कुराइरहेछौ

मेरो गोडाको शल्यक्रिया सफल भो भनी

म भने खोजिरहेछु

तिमीले दिएका पाउले

टेक्ने यात्रा कहाँ छ भनी

डाक्टर सा’ब !

म धेरै वर्षदेखि खोजिरहेछु

यी पाउहरूले हाँसेर हिँड्ने बाटो

यी पाइतालाहरूले गर्वका साथ टेक्नलाई

हो डाक्टर सा’ब !

म खोजिरहेछु मेरै देशको माटो ।

राज बराल

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### म खुसीको पसल थाप्न सक्छु

सपनाहरू

जसले नीद चोरेका थिए

वस्तु सत्य थिए

म आज बुझ्दै छु

जब

खुसीका आँकुराहरू

साउती गर्छन्

अब

हुरी आउनेछ भनेर……

आज पनि बच्चा काढेर

झ्याउँ-झ्याउँ गरिरा’छन्

तिनै सपनाका सन्तानहरू,

म

तिनको पालन-पोषण गर्न

कति पनि झिँजो नमानी

बिताइरहेछु समय

वर्तमान धरातलको

चैन टुटाएर,

यस्तो लाग्छ कैले कहीँ

कि

म सपनाको बन्ध्याकरण गरिदिऊँ ।

छाती भित्र स्पात नहुँदो हो त

म

सदैव बाँझोमाथि

सिर्फ बुर्कुसी मच्चाउने थिएँ

प्रकृतिले चट्याङ छादेको बेला

म हृदयाघातको सिकार हुन्थेँ

मेरो निरीह टाउकोमा नाच्नेहरूलाई

बधाई-शुभकामना दिन्थेँ ।

तर अहँ…..

मलाई नयाँ बाटो हिँड्नु छ

मेरो प्यारो छाती

तिनको भकुन्डे मैदान कहाँ हो र !

मैले बाँच्न प्रलयलाई

प्रेम गर्नै पर्छ

आखिर खुसी त

अठोट र कठोर साधनाको भ्रूण हो,

जब मलाई साधना र सङ्घर्ष नै प्यारो लाग्छ

म खुसीको पसल थाप्न सक्छ ।

राधा काफ्ले

क्यानडा

#### आह्वान

तिम्रो आवाज आकाशले सुन्दैन अरे

तिम्रो रुवाइ, दुखाइ अनि कठिनाइ

उसले गन्दैन अरे

अब आऊ, हरेक घाउको औषधि

आफैँ बोकेर आऊ

शीतलतामा हिमपात बोकेर,

वर्षातमा बबन्डर बोकेर,

आगोमा लाभा बोकेर,

हावामा हरिकेन बोकेर र

सरल आवाजमा,

विस्फोट बोकेर

पक्का र चाँडै आऊ

तिम्रो रुवाइले,

ऊ खुसी, आनन्दित र हर्षित छ ।

उसलाई हाँस उठेको छ ।

मज्जाले भोक लागेको छ ।

खान पाए बाँदर जस्तो,

दुवै हातले एक्लै उठी-उठी खान्छ ।

त्यसलाई के थाहा

तिमी किन रोयौ भनेर

किन कि आफू भोकै बसेर,

उसलाई खुवायौ

नाङ्गै बसेर न्यानो बनायौ

मरेर त्यसलाई बँचायौ

ऊ (आकाश) भन्छ,

म सबै जान्दछु,

कमाउँछु,

बनाउँछु,

संरक्षक म,

मालिक हुँ,

त्यसैले तिम्रो रुवाइ बुझ्दैन अरे

गन्दैन अरे

अब आफ्नो आँसु पुछ्न

आफ्नै हात उठाऊ

दुई हात होइन

आठ पाखुराहरूमा

खुँडा,

खुकुरी,

त्रिशूल,

भाला,

शङ्ख,

चक्र,

डमरु,

तलवार उठाऊ ।

तिमी रोइसक्यौ

बस् !!

अब आऊ ।

तिम्रो दुखाइलाई अझै कुल्चिँदै छ

त्यो चिच्याहटलाई सुस्त आवाज मान्दैछ

गलामा पासो लगाई हत्या गर्दैछ

चिरा-चिरा पारी,

जङ्गलमा फ्याँक्दैछ

भिरबाट पल्टाउँदै

किनार र बालुवामा गाड्दैछ

बलात्कार गरी रगताम्य बनाएर

झाडीमा फ्याँकी,

मरी-मरी हाँस्दैछ

तिम्रो गहिरो घाउमा,

किरा स्याउँस्याउँती परे

पाकेर पिप र रगतले

पुरै शरीर ढाक्यो

तर आकाश !

खुसीको उत्सव मनाउँदैछ

अब यसको बदला लिन

तिमी साँच्चै आऊ

पहाडको चेपबाट,

हिमालको टाकुराबाट,

समुद्रको सतहबाट,

झर्नाको वेगबाट,

तराईको फाँटबाट

आऊ तिमी आऊ

तिम्रो कठिनाइले

त्यो नर पिसाचको हर्ष बडेको छ

ऊ त मस्त छ

न शोक छ, न सुर्ता छ

जति अप्ठ्याराहरू तिमीमा परुन्

तर कुम्भकर्णझैँ आनन्दले

ती सारा दुःखको रमिता हेरी

खित्का छोड्दैछ

तिरस्कार गरी खिल्ली उडाइरहेछ

त्यो दर्दबाट निस्किएको कारुणिक आवाज

सुन्दैन अरे,

जान्दैन अरे,

बुझ्दैन अरे,

अब आफ्नो परिचय दिन

विकराल रूपमा

केस हैन जगटा फिँजाएर आऊ,

दाँत हैन दाह्रा देखाएर आऊ

नङ हैन नङ्ग्रा तेर्स्याएर आऊ

अन्ततः

त्यो आकाशको कालो, मैलो, धुलो, धुवाँ सबै हटाएर

त्यस भित्रको घमण्ड तोडेर

तिमीबाट निस्केको कर्कश र बज्रको आवाजले

उसको कानको जाली भत्काउनु छ

र सोध्नु छ

आज सुनिस्, पृथ्वीको आवाज ?

अनि फेरि,

तिमी र मैले नै

अति स्वच्छ, सुन्दर

विशाल अनि भव्य

सौम्य र शान्त

अनि प्रेरक

आकाशको सिर्जना गर्नु छ

त्यसैले आऊ अब ढिला नगरी आऊ ।

**रिमेन आलोक**

**अल्बरी, अस्ट्रेलिया**

#### **सम्बन्ध**

सम्बन्धलाई धागो बनाएर उडाउँदै

बाफदार कुरासँगै अङ्गालो मार्दै

आँगनीमा मेरा बारेमा चिया पिउँदै

इज्जतमाथि थपडी मारेको

त्यो पलले तिमीलाई सताउने छ

मुटुमा च्वास्स दुख्न सक्छ

म त फर्केर आउन सक्दिन

तर,……. मेरो तस्बिरले बोलायो भने

सम्झिनु म तिम्रो आफन्त थिएँ ।

जब सन्ध्या हुन्छ, फूल मस्काउँछ

हाँगा-पातहरू मौन रहन्छन्

चराको चिरबिरे आवाजसँगै

तीता मिठा पलहरू सम्झँदै

त्यही बाटो हुँदै मेरा पाइलाहरू

हावाको वेगसँगै झ्यालनेर आएर

ढोकाको छेउनेर मेरो आत्माले तिमीलाई

पर्खिरहने छ,………. त्यति खेर नतर्सिनु है

त्यो आत्मा हाम्रो सम्बन्धको हुने छ ।

बेलुकी पख जब साँझ पर्नै लाग्छ

मेरो छायाले तिम्रो छायाको सहारा खोज्छ

तिमी अर्कै दुनियाँमा रमाइरहेकी हुनेछौ

बचेरा छोडेर माउले भाले खोजे झैँ

कहिले रातमा हराउँछौ र त कहिले दिनमा

यो रासलीला भन्ने चिज कस्तो अचम्मको

न आफन्तको याद आउन दिन्छ न सन्तानको।

मेरो तिमीलाई एउटा बिन्ती छ।

अब त समाज सम्झ आफन्ततिर फर्क।

तिमी पनि बुढी हुने छौ, तागत सकिने छ

बैँसमा ओढेका सिरक सम्झने बेला आउँछ

उमेरमा गरेको उत्ताउला पल सम्झिनेछौ

लट्ठीको सहारा लिएर त्यही पुरानो सम्बन्ध

खोज्दै खोज्दै मेरो घर छेउ आएर भन्ने छौ

यही छहारीले दिएको एउटा अटुट सम्बन्ध

मलाई एक्लै छोडेर त्यो बादल जस्तै बनेर गयो

त्यति खेर मेरो लास तिमीबाट टाढिएको हुनेछ

अन्तिम पटक सम्बन्धको याद आओस् ।

रुप पोखरेल

पेन्सिलभेनिया**, अमेरिका**

#### अजीव व्यक्ति

भेष बदली-बदली आउँछ ऊ

नाट्यशालाको पात्र झैँ

फट्कार्छ सय वटा जिब्रो भएझैँ गरी

पोख्छ प्रश्न अनेक -

नाना थरी

एउटा अजीव व्यक्ति

म नै उसको एक मात्र आरोपी झैँ गरी

सताइरहेछ महिनौँदेखि

मेरा हरेक रात मारी ।

ऊ अदालतमा बयान दिएसरि

पेस गर्छ प्रमाण -

साक्षी उभ्याउँछु भन्छ

लिन्छ नाम सबै मृतात्माको

म बोल्नै पाउँदिन !

मलाई सुन्ने उससँग फुर्सत नै छैन

ऊ यति हतारोमा बोल्छ;

तातो हाँडीमा मुरली मकै पड्के झैँ

यति धेरै ऊ बोलिसक्यो

भारी ठेली किताब तुहिसक्यो ।

'मैले महामहिम हुन्छु - भनिनँ

मैले माननीय बन्छु - भनिनँ

मैले अमुक रङ्गिन दर्ज्यानी - खोजिनँ

मैले कुनै कुर्सी माथि राल - चुहाइनँ

म ढिँडो रोटोमै जन्मेको

गिट्ठा-भ्याकुर सँगै लहरिएको

शरीर न थिएँ !

वेश्यालयमा

अबला कुमारीलाई नङ्ग्याएर

शरीरबाट कुमारीत्व निमोठेझैँ

मबाट मेरो देह नङ्ग्याइयो;

खट्कुँलामा खुसीको भतेर धेरै ठाउँ पाक्यो

धेरैका दर्ज्यानी चिन्ह थपिए

सुकेको रुखका काँधमा

बेमौसमी सुनाखरी झुलेझैँ

कायरको निन्द्रा फक्रियो-

मेरो देह मबाट छुट्टिँदा ।'

म मरेको छैन !

घरी बगिरहेछु गङ्गा

घरी उड्छु श्वेत परेवा

घरी उभिन्छु सदाबहार धुपी

घरी दुहिन्छु लैनो गाई

म बाँचिरहेछु अनेक भई ।

भेष बदली-बदली आउँछ ऊ

नाट्यशालाको पात्र झैँ

र झस्क्याउँ छ-

मलाई हरेक यात्रामा

हरेक दिन कार्यक्षेत्रमा

म नै उसको एक आरोपी झैँ ।

देखिरहेछ 'रे-

खुल्ला तमासा

व्याप्त विभेद

होडबाजी वस्त्रको रङ्ग फेर्न

छेपारोले झैँ

ओहोदाको छतमा टेक्न

चाकडी र चाप्लुसीको लिस्नु चढ्दै

नमच्चिने पिङमा हुइँकेको ।

अझ-

पिँधिँदैछन् 'रे मकैसँगै निमुखा घुन

बेचिन्छ 'रे हलुङेको भाउमा महलमा सुन

हिरा-मोती सरह छ 'रे गाउँमा नुन

गाउँ बेसी अधमरो बाँचिरहँदा-

महलबाटै थोक बिक्री हुन्छ 'रे खुसी

विश्व बजारमा ।

एउटा अजीव व्यक्ति

फट्कार्छ सय वटा जिब्रो भएझैँ गरी

फत्फताउँछ नाना थरी रातभरि ।

रुपेश ढुंगाना

क्यानडा

#### आमाको बुढी औँलो

शासकहरूले

आमाको बुढी औँला खोसेर

जमिन लुटे ।

शासकहरूले आमाकै नाम लेखेर बुबालाई गिरफ्तार गरे, जेल हाले

आमाको औँठा छापलाई साक्षी बनाए

र इज्जत लुटे

घर जलाए

छोरा छोरीलाई नम्बर नम्बरमा बाँडेर छुटाइदिए

र सबै कागज पत्र च्यातिदिए

त्यसपछि आमाको एक मात्र निशानी त्यो बुढी औँलो पनि काटेर काली खोलामा बगाइदिए ।

त्यही औँला माछो बन्दै

नाउ बन्दै

चरो बन्दै

बग्दै-बग्दै-बग्दै…

फोनको स्क्रिनहरूमा त्यो क्रूर शासकहरूको विरुद्धमा आज पनि ‘थम्स डाउन’ 👎 दिइरहेको छ

‘थम्स अप’ 👍 दिनेहरूलाई पनि थाहा होला सायद मेरी आमाको कथा

लीला निशा

ओहायो, अमेरिका

#### दृष्टिभ्रम

कान्छा !

तिमी भन्छौ- तिम्रो चेहराको

रङ्ग रोगन उडेछ ।

निधारमा वसन्तका

धेरै रेखाहरू कोरिएछ ।

लाली पोतिने ठाउँमा

कालो बादलले ढाकेछ ।

बैँस ढलेछ,

केश पनि फुलेछ !

म भन्छु -कान्छा !

बैँस कहाँ ढल्दो र छ!

तन पो बुढो हुँदो र छ ।

जोबन/ माया कहाँ झर्दो र छ

यो त

सतिसाल जस्तै ठिङ्ग उभिँदो र छ

धुपी सल्ला झैँ हरियो हुँदो र छ

बाह्रमासे फूल झैँ फुली रहँदो र छ

भुइँचम्पा फूल झैँ मगमगाई रहँदो र छ

अनि कान्छा,

म पुनः भन्छु-

मेरो केश कहाँ फुल्या हो र ?

यो त कञ्चनजङ्घा हिमाल पो टल्क्या हो

अचेल

आँखा त तिम्रो सकुशल नै देख्छु

बरु, मलाई हेर्ने

तिम्रो दृष्टि पो दिग्भ्रमित भा रै छ !

लक्की राशि

केन्टकी, अमेरिका

#### सास रहेसम्म आस

कालो रातको बस्तीमा

उज्यालो ज्योति पर्खेर

बसेकी मेरी बुढी आमा

अझै पनि पर्खी रहेछिन्

त्यो दिन, समयलाई आस गरी गरी

कपालको रङ्ग फेर्दै, खोसेलामा सुर्ती बेर्दै ।

अब त माटोसँग सम्बन्ध टुटेको पनि

तिसौँ वर्ष भई सकेछ,

म त अब चिन्दिन मेरो जन्मभूमिको माटो कस्तो थियो

थाहा छैन माटोले मलाइ चिन्छ चिन्दैन ।

हरेक दिन समयले मलाइ नि अरूलाई झैँ बुढो बनाइरहेछ..

हातको औँलाहरू पुर्पुरो कन्याइरहेछ ।

एक अपरिचित बाटोमा,

यता पराइ माटोमा, कहिले पनि आफ्नोपन,

दया माया महसुस गर्ने मौकै मिलेन ।

सायद दुवै हात र मस्तिष्क रातै भरि

डरलाग्दो मेसिनसँग ठोक्किएर होला

भाषा बोल्न नसक्दा जिब्रो ठोक्किएर होला ।

घर, गाडीको ऋण सम्झी रहेँ

कहिले मुक्त,स्वतन्त्र हुने त्यो दिन पनि सम्झिरहेँ

बाल बच्चाको भाषा भविष्य झनै सम्झिरहेँ

सँगसँगै मेरो वर्तमान, भविष्य

अब अरू कसैको अधीनमा छ भन्ने नि सम्झिरहँदा

मेरो गह्रुङ्गो मन बिसाउने चौतारी खोज्दै थिएँ …

एक्कासि अङ्ग्रेजी शब्द

वर्क हार्ड, वर्क हार्ड

गेट मनी, गेट मनी

भनेको त्यो आवाजले झसङ्ग झस्कायो

र रातै भरी त्यही आवाज कानमा गुन्जी रह्यो ।

मेरो निष्कर्ष सायद यहाँ

आज पैसा भन्दा ठुलो माटो रहेनछ,

पैसा भन्दा ठुलो भाषा रहेनछ

कता कता डर सरी बोल्न खोज्दै थियो

मेरो सेतो मास्क र कालो पट्टी बाँधेको मुख।

जन्मभूमि भूटान घर नम्बर १०५

पुर्खा-भूमि नेपाल बेल्डाँगी  १ सेक्टर B/4

घर नम्बर ४२०, हाल अमेरिका केन्टकी

घर नम्बर १०६ विस्परिङ्ग हिल

अझै यस्तो जिउँदो घर नम्बरहरू

क्रमशः: कति हुने हो त्यो थाहा छैन ।

थाहा छ त केवल मेरो मृत्यु पछि

एउटै अन्तिम सिमेट्री घर नम्बर १०/०६/२०८०/ !

विकाश प्राञ्जल

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### झरि, जाँच र जोङ्खा लोपेन

सिम-सिम पानी परिरहेछ

एउटा भएको छाता बहिनीहरूले लगेर जान्छन्

दाजु उसैको साथीको छातामा ओत लागेर जान्छ

म पानी बिसिएला कि भनेर पर्खन्छु

केही गलेको जस्तो...

केही आत्तिएको जस्तो...

रातभरि नसुतेको अनिदो शरीर

जाँच बिगार्ला कि भनेर

पिताजीले पहिलो भालेको डाकमै ब्युँझाएको

ब्युँझिएदेखि नै लगातार घोकिरहेको

अर्धवार्षिकमा राम्रो अङ्क नआएर फेल भएको

यस पाली जसरी पनि अङ्क ल्याउनुपर्ने बाध्यता छ

झरी बिसेक हुने अवस्था नभएपछि

आमा भन्छिन् –

‘भिज्दै भए पनि जा’

म भन्छु –

‘एक छिन पर्ख न’

आमा थप्छिन् –

‘अब नजाने भो’

‘फेल मात्रै हो, जाँचमा नगएर’

‘तँलाई के गर्दि रछु’

‘फेल’ शब्द सुन्ने बित्तिकै मलाई डर लाग्छ

‘खोइ त छाता!’

म झर्कन्छु

‘मानेको पात ओढेर जा नानी’

‘जाँच छुटाउनु हुँदैन’

एउटा हातमा कार्डबोर्ड

अको हातमा मानेको पातको छाता

गोजीभित्र फाउन्टेन पेन

यति बोकेर म स्कुलतर्फ लाग्छु

बर्खे झरीको तागतलाई रोक्ने कसले

सारा शरीर पुरै निथ्रुक्क

बेला-बेला आउने हावाको चिसो झोक्काले

मेरो छाता पनि भाँच्न खोज्छ

तर मेरो छाता सबैभन्दा ठुलो मानेको पातले बनेकोले

अझसम्म त सुरक्षित नै छ

स्कुलको नजिक पुग्छु

अब ठुलो चुनौती छ

रतुवा खोलाको एउटा भँगालो नै बोकेर बग्ने

तर्नुपर्ने बडेमाको डुङ छ

अरू साथीहरूले फड्के मारेको देखेर

भएभरको बल लगाएर आफू पनि फड्के हान्छु

तर भँगालै नाघ्न सक्ने मेरो सामर्थ्य कहाँ !

शरीर पानीमा चुम्लुङ्ग !

हठात् बाहिर निस्कन खोज्छु

केही तलसम्म बग्छु

जीवनका यस्ता स-साना खोलाहरू मैले धेरै पार गरेको छु

बटारिएर बग्ने यी भँगालाहरू र

ठक्कर खाँदै अघि बढ्ने मेरो बाल्यावस्था उस्तै-उस्तै छन्

कपालबाट पानी तप-तप झरिरहेको

नाकबाट सिँगान चुहिरहेको

बालुवा पसेको आँखा बिझाइरहेको

मुसो झैँ भिजिरहेको शरीर लिएर म अब

स्कुल नजिकै पुग्छु

गृष्मको जाडोमा न्यानोको आस गर्दै

बसेका एक हुल चराचुरुङ्गी झैँ

स्कुलको बलेँसीमा ओत लागेर

उभिरहेका केही विद्यार्थीहरू

एक्कासि ह्वार्र छरपस्ट हुन्छन्

तर मलाई चासो हुँदैन

मलाई बलेँसीमा पुगेर उसै गरी ओत लाग्नु छ

जाँच अघि एक छिन भए पनि न्यानोको अनुभव गर्नु छ

म बलेँसीमा पुग्छु

झरिरहेका बाछिटाले सुरुवाल भिजे पनि

टाउकोमा ओत चाहिएको छ

थोरै भए पनि बतासले

कपाल सुकाउनु छ

कस्ता प्रश्न सोध्लान् भन्ने डरले

मन आत्तिएको छ

त्यसमाथि रातभर नसुतेको अनिदो आँखा छ

अचानक

स्कुलको गेटबाट जोङ्खा लोपेन

म भएतिर दौडेर आउँछन्

सात फिट भन्दा अग्ला जोङ्खा लोपेन

जोर नारी भएका जोङ्खा लोपेन

हात्तीका जस्तै तिघ्रा भएका जोङ्खा लोपेन

उनको शरीर देखेर हाम्रो शरीर गर्विन्थ्यो

उनी दौडँदा मलाई लागेथ्यो

साँच्चै उनी कुनै महारथी हुन्

आँखाभरि आक्रोश र अनुहार भरि क्रोध बोकेर

उनी दौडँदा मलाई लागेथ्यो

उनी कुनै दुस्मनको शिर ताकेर

अगाडी बढिरहेछन्

तर कठै म बबुरो !

उनको निशानाको म बबुरो

एकै लात्तीमा म पाँच फिट पर पछारिन पुग्छु

सपना हो कि बिपना

थाहा पाउन खोज्दा खोज्दै

मेरो कलिलो अनुहारमा

फेरि अर्को झापड बर्सन्छ

म हिलोमा घोप्टो परेर पछारिन्छु

पछाडिबाट सर्टमा तुर्लुङ्ग झुन्डाएर

गोल खेले जस्तो लाग्छ

म फेरि हिलोमा पछारिन्छु

फेरि अर्को झापड टाउकोमा बज्रन्छ

बोल्न खोज्छु तर बोली नै बन्द

भाग्न खोज्छु तर खुट्टा नै बन्द

हेर्न खोज्छु तर आँखा नै बन्द

जोङ्खा लोपेन अगाडी

मेरो सास नै बन्द

मेरो होस नै बन्द

होसमा आउँदा क्लास क्याप्टेन बानियाँ दाइ

मेरो छेउमा बसेर गन-गन गरिरहेथे

‘धान खाने मुसो, चोट पाउने भ्यागुतो’

‘बिचरा आज यसले बिना कसुर कुटाई खायो’

मैले बिस्तारै टाउको उठाएर हेरेँ-

जोङ्खा लोपेन

शानका साथ लमक्क-लमक्क गेटबाट भित्र पस्दै थिए

युद्ध नै जिते झैँ गरी

दुस्मनको शिर छेदन गरे झैँ गरी

दिउँसोको जाँचको घण्टी पनि बज्छ

म उठेर मेरा ओसिएका आँखा पुज्छु

हिलो टकटकाउँछु

कार्डबोर्ड टिप्छु

अनि आफ्नो कसुर के थियो भन्ने सोच्दै

जाँच कोठा तर्फ सुस्तरी लम्कन्छु

केही अघि मात्र

बलेँसीको ओतबाट ह्वार्र छरपस्ट हुने एक हुल

विद्यार्थीहरू

‘बिचरा भोले, बिचरा भोले’

भन्दै म तर्फ लम्किरहेका थिए ।

विदुर काले पौडेल

न्यूजिल्याण्ड

#### कविता कस्तो हुनुपर्छ?

म जस्तो हुस्सुले, म जस्तै हुस्सुलाई

वर्षौं अघिदेखि सोध्दै आएको

एउटा फूल जस्तै सुन्दर प्रश्न

कविता कस्तो हुनुपर्छ ?

माझीको जालमा प्याक-प्याक गरिरहेको माछा जस्तो

चिलको पन्जामा छटपटाइरहेको परेवा जस्तो

सिंहको नजरदेखि भाग्दै गरेको हरिण जस्तो

या भनौँ युद्धमा सहिद भएको

बूढी आमाको लक्का जवान छोरा जस्तो

अझै पनि मैले नबुझेको कुरा

कविता कस्तो हुनुपर्छ ?

सिमानाले छुटाएको देश जस्तो

उब्जनी दिने बेँसीको खेत जस्तो

शीतल बतास चल्ने डाँडाको चौतारी जस्तो

मुट्ठी दूध भेला गरी

घाराघुरा पारी घिउ निकाल्ने मधानी जस्तो

अझै पनि मैले नबुझेको कुरा

कविता कस्तो हुनुपर्छ ?

उचाइदेखि तल झर्दा सुन्दर देखिने झरना जस्तो

गोधुलीमा चिरबिराउँदै आफ्नो घर फर्केका चरा जस्तो

तालीले गुन्जायमान भएको आफ्नाहरूको सभा जस्तो

आफ्नो जिन्दगी र परिवार बोक्दा

पटपट फुटेको गरिब नागरिकको कुर्कुच्चा जस्तो

अझै पनि मैले नबुझेको कुरा

कविता कस्तो हुनुपर्छ ?

निश्चल सल्ल बगेको खोलालाई हेरेँ

भेदभाव कहिले नराख्ने आगोलाई हेरेँ

यतिकैमा, मैले कोर्दै गरेको अक्षरलाई हेरेँ

कसरी आँखा एकासी भित्तामा झुन्डिएको

विश्व विख्यात विद्वानहरूको तस्बिरमा पुग्यो

र निकै बेर मन मनै सोचेँ

अहा! कविता त यस्तो हुनुपर्छ।

विशु निछा

अस्ट्रेलिया

#### म र म-हरु

म हेरिरहेछु

र,

म देखिरहेछु ।

अनन्त ब्ल्याकहोलहरूभित्रबाट,

अनन्त म-हरू निस्किरहेछन्,

अनन्त ब्ल्याकहोलहरूभित्रतिर,

अनन्त म-हरू पसिरहेछन् ।

म-हरू नागासाकीहरू हिरोसिमाहरू बनाउँछन्,

म-हरू नागासाकीहरू हिरोसिमाहरूमा अणुबमहरू खसाल्छन्,

म-हरू हेर्दाहेर्दै हिटलरहरू क्रूर बन्छन् ।

म-हरू मङ्गलमा जीवन पनि खोज्छन्,

म-हरू जीवनमा मङ्गल पनि खोज्छन् ।

म-हरू फूलहरू

म-हरू काँडाहरू

म-हरू पुलहरू

म-हरू पर्खालहरू

आफूलाई निमिट्यान्न पार्न

धेरै धन र समय खर्चेर

आफैँले बनाएको बारुदको पहाडमाथि सगर्व उभिएर

आफ्ना खुनी विचारले लोहित बुद्धिको

अमानुषिक विज्ञापन सम्प्रेषण गर्न व्यस्त छन्

अहिले म-हरू ।

विश्वास लामा

क्यानडा

#### जीवनको ग्रेटवाल उभिएर

आफूलाई सुनामी सम्झिनेहरू

प्राय:

फूलको रुपमा पेस हुन्छन्

कहिले काँडाको अभिनय हुन्छ

अनि,

धारिलो हतियार बनेर

रेट्न आउँछ पारिजातको जीवन

म,

यती बेला,

उही जीवन भोगिरहेको छु

अनि,

कैयौँ हिट्लरहरूको भिडमा

बेमौसम हराएको छु

अनि,

खोज्दैछु,

निरन्तर,

महत्मा गान्धीहरू

गौतम बुद्धहरू

जिजस क्राइस्टहरू,

यो दुनियाँ बिलकुल फरक छ

आँखामा सपनाहरू ओछ्याएर

मैँले कैयौँ रात तिमीलाई सम्झेकोछु

तर,

तिमी प्रत्येक रात भूकम्प बनेर

मेरो रहरको बलात्कार गर्छौ

म,

यती बेला हराएको बतास भएको छु

एउटा खाली पन्नामा जीवन कोर्दैछु

सत्य र असत्यको

माया र हिंसाको

बस्,

यो खाली पन्नामा लेखिनु छ

जीवनका रहस्यहरू

र

मलाई फूल मुस्कुराएको हेर्नु छ ।

सिम-सिम पानी परिरहेछ

एउटा भएको छाता बहिनीहरुले लगेर जान्छन्

दाजू उसैको साथीको छातामा ओत लागेर जान्छ

म पानी बिसिएला कि भनेर पर्खन्छु

केहि गलेको जस्तो...

केहि आत्तिएको जस्तो...

रातभरि नसुतेको अनिँदो शरिर

जाँच बिगार्ला कि भनेर

पीताजीले पहिलो भालेको डाकमै ब्यूँझाएको

ब्यूँझिएदेखि नै लगातार घोकिरहेको

अर्धवार्षिकीमा राम्रो अंक नआएर फेल भएको

यसपाली जसरी पनि अंक ल्याउनुपर्ने बाध्यता छ

झरि बिसेक हुने अवस्था नभएपछि

आमा भन्छिन् –

‘भिज्दै भए पनि जा’

म भन्छु –

‘एकछिन पर्ख न’

आमा थप्छिन् –

‘अब नजाने भो’

‘फेल मात्रै हो, जाँचमा नगएर’

‘तँलाई के गर्दि रछु’

‘फेल’ शब्द सुन्ने बित्तिकै मलाई डर लाग्छ

‘खोइ त छाता!’

म झर्कन्छु

‘मानेको पात ओढेर जा नानी’

‘जाँच छुटाउनु हुँदैन’

एउटा हातमा कार्डबोर्ड

अको हातमा मानेको पातको छाता

गोजीभित्र फाउन्टेन पेन

यति बोकेर म स्कूलतर्फ लाग्छु

बर्खे झरिको तागतलाई रोक्ने कसले

सारा शरिर पूरै निथ्रुक्क

बेला-बेला आउने हावाको चिसो झोक्काले

मेरो छाता पनि भाँच्न खोज्छ

तर मेरो छाता सबैभन्दा ठूलो मानेको पातले बनेकोले

अझसम्म त सुरक्षित नै छ

स्कूलको नजिक पुग्छु

अब ठूलो चुनौती छ

रतुवा खोलाको एउटा भंगालो नै बोकेर बग्ने

तर्नुपर्ने बडेमाको डुङ छ

अरु साथीहरुले फड्के मारेको देखेर

भएभरको बल लगाएर आफू पनि फड्के हान्छु

तर भङ्गालै नाघ्न सक्ने मेरो सामर्थ्य कहाँ !

शरिर पानीमा चुम्लुङ्ग !

हठात् बाहिर निस्कन खोज्छु

केहि तलसम्म बग्छु

जीवनका यस्ता स-साना खोलाहरु मैले धेरै पार गरेको छु

बटारिएर बग्ने यी भङ्गालाहरु र

ठक्कर खाँदै अघि बढ्ने मेरो बाल्यवस्था उस्तै-उस्तै छन्

कपालबाट पानी तप-तप झरिरहेको

नाकबाट सिँगान चुहिरहेको

बालुवा पसेको आँखा बिझाइरहेको

मुसो झैँ भिजिरहेको शरिर लिएर म अब

स्कूल नजिकै पुग्छु

गृष्मको जाडोमा न्यानोको आश गर्दै

बसेका एक हुल चराचुरुङ्गि झैँ

स्कूलको बलेँसीमा ओत लागेर

उभिरहेका केहि विद्यार्थीहरु

एक्कासी ह्वार्र छरपष्ट हुन्छन्

तर मलाई चासो हुँदैन

मलाई बलेँसीमा पुगेर उसै गरि ओत लाग्नु छ

जाँच अघि एकछिन भए पनि न्यानोको अनुभव गर्नु छ

म बलेँसीमा पुग्छु

झरिरहेका बाछिटाले शुरुवाल भिजे पनि

टाउकोमा ओत चाहिएको छ

थोरै भए पनि बतासले

कपाल सुकाउनु छ

कस्ता प्रश्न सोध्लान भन्ने डरले

मन आत्तिएको छ

त्यसमाथी रातभर नसुतेको अनिँदो आँखा छ

अचानक

स्कूलको गेटबाट जोङ्खा लोपेन

म भएतिर दौडेर आउँछन्

सातफिट भन्दा अग्ला जोङ्खा लोपेन

जोरनारी भएका जोङ्खा लोपेन

हात्तीका जस्तै तिघ्रा भएका जोङ्खा लोपेन

उनको शरिर देखेर हाम्रो शरिर गर्विन्थ्यो

उनी दौँडदा मलाई लागेथ्यो

साँच्चै उनी कुनै महारथी हुन्

आँखाभरि आक्रोश र अनुहार भरि क्रोध बोकेर

उनी दौँडदा मलाई लागेथ्यो

उनी कुनै दुश्मनको शिर ताकेर

अगाडी बढिरहेछन्

तर कठै म बबुरो !

उनको निशानाको म बबुरो

एकै लात्तीमा म पाँच फिट पर पछारिन पुग्छु

सपना हो कि बिपना

थहा पाउन खोज्दा खोज्दै

मेरो कलिलो अनुहारमा

फेरि अर्को झापड बर्षन्छ

म हिलोमा घोप्टो परेर पछारिन्छु

पछाडीबाट सर्टमा तुर्लुङ्ग झुण्डाएर

गोल खेले जस्तो लाग्छ

म फेरि हिलोमा पछारिन्छु

फेरि अर्को झापड टाउकोमा बज्रन्छ

बोल्न खोज्छु तर बोली नै बन्द

भाग्न खोज्छु तर खुट्टा नै बन्द

हेर्न खोज्छु तर आँखा नै बन्द

जोङ्खा लोपेन अगाडी

मेरो सास नै बन्द

मेरो होस नै बन्द

होशमा आउँदा क्लाश क्याप्टेन बानियाँ दाई

मेरो छेउमा बसेर गन-गन गरिरहेथे

‘धान खाने मुसो, चोट पाउने भ्यागुतो’

‘बिचरा आज यसले बिना कसुर कुटाई खायो’

मैले विस्तारै टाउको उठाएर हेरेँ-

जोङ्खा लोपेन

शानका साथ लमक्क-लमक्क गेटबाट भित्र पस्दै थिए

युद्ध नै जिते झैँ गरि

दुश्मनको शिर छेदन गरे झैँ गरि

दिउँसोको जाँचको घण्टि पनि बज्छ

म उठेर मेरा ओशिएका आँखा पुस्छु

हिलो टक्टकाउँछु

कार्डबोर्ड टिप्छु

अनि आफ्नो कसुर के थियो भन्ने सोच्दै

जाँच कोठा तर्फ सुस्तरी लम्कन्छु

केहि अघिमात्र

बलेँसिको ओतबाट ह्वार्र छरपष्ट हुने एकहुल

विद्यार्थीहरु

‘बिचरा भोले, बिचरा भोले’

भन्दै म तर्फ लम्किरहेका थिए ।

श्याम खनाल

ओहायो, अमेरिका

#### तुर्सा

प्यारो लाग्छ मलाइ यो जगतमा टाढै पुगौँ ता पनि ।

नौलो देश विषे कतै पवनझैँ घुम्दै रहूँ ता पनि ।।

निद्राको सपना हुँदी मन सधैँ दौडी चली गै उहाँ ।

घुम्ने गर्दछ वारिपारि खुसि भै तुर्सा नदी छिन् जहाँ ।।१।।

छिन् माता धरणी त्यतै म पनि लौ हेर्दै बढे थेँ जसै ।

तुर्साको जब तीरको  स्मरणले पग्लन्छ छाती यसै ।।

मेरो गाउँ मुनी विशाल जलकी तुर्सा नदी बग्दछिन् ।

पाऊ भारतमा खसालि कन फेर् तिब्बत् तकीया गरिन् ।।२।।

चीसो, निर्मल, शान्तिको हिमजलै लीएर ती झर्दछिन् ।

लेकाली,अउले पहाड भरको जो कान्ति हो छर्दछिन् ।।

हा, साम्छ्यु अनि नेछ्यु,पाछ्यु, बटुली लिन्छिन् सघाऊ अझै ।

क्रान्ती-वेग छ शान्तिको जलभरी बग्छिन् छचल्का दिँदै ।।३।।

वारी, पारि चुचे पहाड, पहरा हेर्छन् तमासा कति ।

सुन्दर्, शान्ति विशाल बाग, वनले घेर्छन् किनारा उति ।।

काहीँ छन् ति अगम्यका त पहरा, सुन्दर् पखेरा कहीँ ।

वन्केरा, अनि बाँस, वृक्ष, लहरा लाग्दो रमीता कहीँ ।।४।।

गाऊँ, गोठ, किसान, खेत भरिला बारी, बगैँचा, भरै ।

काहीँ धान र कागुनी अनि मकै, कोदो, गहूँ, फापरै ।।

फल्छन् फेर् बडहर् र आँप, कटहर् अम्बक् रसीला फलै ।

सुन्तोला अनि  कागती कति त खोल्सामा अलैँची भरै ।।५।।

त्यस्तै छन् ति नदी-किनार भरिमा बाँझो कस्यानी भरी ।

गाऊँलाइ उछिन्न पो बगरमा खेती उमारे सरी ।।

शोभा रङ्ग वसन्तमा वन विषे छर्छन् त वन् फूलले ।

वर्षाको ऋतु हाँस्छ साजसँगमा धोबी,भकिम्लो फुले ।।६।।

झन् वासन्ति जताततै रुखभरी मग्मग् वनै-वन् भरी ।

वारी पारि सुवासना वनभरी सूनाखरीले गरी ।।

यस्तै स्वच्छ, सुरम्य, गाउँ, वनले पारी अलंकार् गरी।

गर्जिन्छिन् ति पहाडले गड-गडाउँदै  त ठक्कर् परी ।।७।।

कोही ठाउँ फराकिला बगर छन् भीरै कटी बीच भै ।

आफ्नो वेग छ तिब्रको गति गरी बग्छिन् त तुर्सा सधैँ ।।

मेरो गाउँ उनै नदी नजिकमा पहाडको काखमा ।

तुर्साको छ चिसो बतास पिउँदै झल्किन्छ उद्यानमा ।।८।।

तुर्सा सामु महा अझै अरु कला भर्छन् कतीले तहाँ ।

पक्षी औ पशु वन् भरी रमि-रमी खेल्छन् नदी तीरमा ।।

वैशाखी दिनमा वसन्त ऋतुको आनन्दताले गरी ।

वारीपारि ति न्याउली-स्वर मिठो घन्काउँछन् वन् भरी ।।९।।

छेऊ-छाउ निकुञ्जमा वन चरा छन्  कोइली, काग है ।

कुर्ली नाच्छन ढुक्कुरै र कति  उड्छन् गौँथली, चाँचरै ।।

साँच्चै  मन्-मन लाग्छ, हुन्छ रमिता हेर्दै लगे सुन्दर ।

तुर्साको जलपान गर्नछ कठिन् चीसो असाध्यै छ र ।।१०।।

भर् लाग्दो बल पाइने शरिरमा रोगादि जाने अझ ।

तुर्साको जलले सुतृप्त नहुने भूटानमा को छ र ?

उक्कालो र भिरै समाति हिँड्दै गड्तीरमा मानिस ।

बोकी ढाकरमा त भारि जनले गर्थे बजारै सब ।।११।।

शिवलाल दाहाल

केन्टकी, अमेरिका

#### पिरोडिक टेवल

परियोडिक टेबल

जसका बारेमा धेरै दिनदेखि सोचिरहेको छु

यो रसायन विज्ञानको एक महाकाव्य

मेरो सानैदेखि विज्ञान पढ्ने रहरको एक हिस्सा

त्यो रहर, त्यो उत्साह

कसरी कसरी निलिदियो गरिबीको भूतले

कसरी कसरी छिनालिदियो देशबिनाको अतीतले

अब त सोचेर पो कहाँ पुगौँला !

तर पनि सोचिरहन्छु

यो आणविक युद्धको सङ्घारमा पुगेको धर्तीमा

कोरियाली प्रायद्वीपमा आगो बल्न लागेको समयमा

यो परियोडिक टेबलको महत्ताको गुण किन नगाउने

फेरि पनि उही परियोडिक टेबलको कल्पना गर्दछु

हुन त मैले अब रसायन शास्त्री बन्नु छैन

असलमा यो कवि हुने रहर पनि होइन

तथापि म सोचिरहेको छु

उही परियोडिक टेबलका बारेमा

जो आफैँमा एउटा महाकाव्य हो

जो आफैँमा एउटा ब्रह्माण्ड हो

फेरि पनि जिन्दगीमा

एकवार विद्यार्थी भइदिएको छु

बिना रहरले

बिना चाहनाले

कहिले कहीँ म काहीँ न पुग्ने बाटो पनि हिँडिदिन्छु

किन भने मैले पुग्नै पर्ने गन्तव्य नै छैन सायद

यो एउटा सानो एक पृष्ठभित्र

कति थोक आँटेको छ

सृष्टिको उदयदेखिको कथा

संसारको सम्भावित प्रलयसम्मको कथा

सूर्य, चन्द्र, ग्रह नक्षत्र

हावा, पानी, आकाश

मानिस, रुख–बिरुवा, आवास

खाद्यान्न, औषधि, विनाश

यही हो परियोडिक टेबल

पोहोर सिरियामा भएको रासायनिक हमला,

सात दशक अघिको हिरोसिमा र नागासाकी

अहिलेको उत्तर कोरिया र इरान

हिट्लरको ग्यासच्याम्मबरको मानव चित्कार

यी देशका सिमाना र निसानाहरू

यी परदेशका अटालीका र आलिसान भवनहरू

यहीँ छ अमेरिका, रुस, बेलायत

यहीँ छ भारत, पाकिस्तान र चीन

यहीँ छ तिनको शक्ति र सामर्थ्य

यहीँ छ तिनको हुङ्कार र गर्जन

यहीँ छन् मेन्डलीफ, बोयर

यहीँ छन् आइन्स्टाइन, प्याल्यङ्क

म्याडम क्युरी र अरूहरू

यस्तो लाग्छ परियोडिक टेबल छ र नै

संसार छ, विश्वब्रम्हाण्ड छ

देश र सिमानाहरू छन्

हतियार छ, युद्ध छ

भोक र गरिबी छ

रोग र निदान छ

यहीँ छ भौतिक उन्नति र विकास

यहीँ छ समृद्धि र विनाश

त्यसैले म भन्छु परियोडिक टेबल एक महाकाव्य

सृष्टि, स्थिति र प्रलयको एक महागाथा ।

शङ्कर रैनपुरे

युटा, अमेरिका

#### सेतो झोला

एउटा सेतो झोलामा

खोइ कसरी कहाँबाट

सिङ्गै अमेरिका हालिदियो हाल्दिनेले…

र आकाश औँल्याएर

जहाज देखाइदियो…..

ओइलाएका मेरा सपनाहरू

अचानक मौलाएर

बादल छुन हौसिएँ…।

चुहिरहने झुपडीको

छानो देखाएर

आहा ! महल भन्दियो

म महल महल भएर बाफिएँ ।

पुराना सपनाका थैलाहरू

अलि अलि खोलेर

चिल्लो सडक हालिदियो

चिल्ला गाडी हालिदियो

डलरको रङ्ग हालिदियो

अलिकति सन्तानको सुख

अलिकति भविष्यको चिन्ता

थुप्रै थुप्रै

आशा भरोसा हालिदियो

र बिस्तारै बिस्तारै…

मेरा सपनाका तिजोरीहरूबाट

देशको झण्डा हरायो

माटोको सुगन्ध हरायो

स्वदेशको सपना हरायो

स्वाभिमानको धरहरा हरायो

र म हराउँदै हराउँदै गएँ

एउटा सेतो झोलामा

खोइ कसरी कहाँबाट

सिङ्गै अमेरिका हालिदियो

हाल्दिनेले…..

र म हराउँदै गएँ ।

मेरा पाखुरा छामेर

मभित्रको पौरख चिमट्यो

मेहनत सहिनसक्नु दुख्यो

हृदयको एउटा कुनामा

परिश्रमको पानी र

पसिनाको आगोले

एक मानो चामल उमाल्यो

र स्वनिर्भर टुस्स टुसायो…

मैले मेरै पाखुरीमा

मुस्कुराउनु छ

अगेनो जोर्नु छ

पाइला चाल्नु छ

बेपत्ता दौडिनु छ जिन्दगीमा

फैलिँदै आकाश माथिसम्म

त्यसैले त होला

सम्भावनाहरूको देश

एउटा सेतो झोलामा

खोइ कसरी कहाँबाट

सिङ्गै अमेरिका हालिदियो

हाल्दिनेले…

र स्वनिर्भरता टुसायो ।

आफ्नै सम्भावनाहरूसित अपरिचित

रित्तो स्वाभिमान बोकेर

व्यापारी राष्ट्रियता च्यापेर

बेखबर देशको आरती उतार्दै

यात्राको प्रत्येक ट्रान्जिटहरूमा

शरणार्थीदै शरणार्थीदै

मेरो जिन्दगी

एउटा सेतो झोलामा

खोइ कसरी कहाँबाट

सिङ्गै अमेरिका हालिदियो

हाल्दिनेले

र म फेरि शरणार्थीएँ….!!

श्रीलाल सिवा

न्यू ह्यामसाएर, अमेरिका

#### **दमाईको मलामी**

छुट्टीको दिन

बिहानको पारिलो घामसँगै

काइँलो कराउँदै कराउँदै

सबै जातजातिको

गाउँ-टोलमा पुगेर

डाँडाघरे नरे दमाईले

आफ्नो समय

पूरा गरेको खबर सुनाए

घर-घरबाट

मलामी जान

सागरसम्म पुराएर

अन्तिम बिदाइ गर्न

सबै जनालाई

आह्वान गरे ।

गाउँका प्राय सबैको

कान कानमा पुराए काइँलाले

नरे दमाईको

मानो घोप्टिएको खबर ।

सुन्नेहरूमा, कसैले

खिसिक्क निधार खुम्च्याएर

श्रद्धाञ्जली व्यक्त गरे

कसैले, ए त्यो त मरेछ भने

कसैले भने

दमाई त सानो जात हो

ऊ दलित हो, अछुत हो

त्यसलाई पनि कसैले

मान-सम्मान गर्छ?

साना जातीको पनि

कोही मलामी जान्छ?

काइँलो हत्त न पत्त बोले

‘उहाँ त स्वर्गारोहण भइसक्नु भो

उहाँ पितृ हुनु भो, आत्मा हुनु भो

उहाँ त भगवान हुनु भो

भगवानलाई पनि कसैले

नीच बोली बोल्छ?’

बिचरा नरे दमाई !

उसका शोकाकुल परिवारजन

लासको वरिपरि थिए

आफन्तहरू

लासलाई सागरसम्म लान

तयारी गरी सकेका थिए

काइँलो फेरि कराए

‘खोइ ?

कोही आएनन् त

ढिला भई सक्यो ।’

कोही एकै जाति

भिन्न धर्मको कारणले आएनन्

कोही एकै धर्म

भिन्न जातिका कारणले आएनन्

अरू जे भए नि

एउटै धर्म, एउटै शास्त्र

एउटै गाउँ टोलमा

भएर नि आएनन् ।

खै

छोइन्छ रे,

अशुद्धै भइन्छ रे

भन्दै उनीहरू आएनन् ।

बल्लबल्ल

दुईचार जना जम्मा भए

लास उठाउने बेला हुन लाग्यो

अन्तिम कर्म गर्ने किताब

लासको छेउमै

धूप-दीप राखिएकै थालीमा

राखिएको थियो ।

त्यो किताब पढ्न जान्ने

मान्छेहरू पनि केही थिए,

तर

जातै गई हाल्ने भन्दै

कसैले पढेनन्

जान्नेहरू कसैले सिकाएनन् ।

लास उठाउने बेलामा

कसैको मलामी जाँदा

टाढै बसेर भए पनि

देखेर सिकेको आधारमा

कर्म गर्दै-गर्दै गए

लास उठाए

राम नाम सत्य हो

राम नाम सत्य हो ।

आँगनको एक छेउमा

एक झुन्ड छूतहरू थिए

उनीहरू धेरैले मलामी

जानै नभ्याउने भए

कसैले मानवताको कुरा गर्दै

कसैले, पितृ त समान हुन्छन् भन्दै

समुदाय कै प्रतिनिधित्व गरी

दुई-तीन जना

लासको पछि पछि हिँडे ।

यी तिनै नरे दमाई

गाउँ टोलमा केही पर्‍यो कि

टुप्लुक्क पुगिहाल्थे

भित्रको नभए नि

बाहिरको सबै काम गरिदिन्थे ।

केही महिना अघि त हो

ठुला पण्डित बाको

गजडिया छोरोले

झुन्डिएरै आत्महत्या गरेपछि

बुढो शरीर सकी नसकी

मृत्युको खबर लिएर पुगे थिए

यिनै नरे दमाई

सबैको घर-घरमा, आँगन-आँगनमा ।

लास जली नसकी

असिना पानीले कुट्नु कुटेथ्यो

थरथर काम्दै विकट खादै भन्थ्यो

जीवनमा अरू केही नकमाए पनि

मर्दा मलामी त कमाइन्छ

आखिर

त्यही चिसो असिना पानीको कारणले

लग्यो उसलाई आज

उसले कमाएको मलामी

यति रहेछन्

आखिरमा

दमाईको मलामी

यति नै रहेछ ।

सबिन शर्मा

ओहायो, अमेरिका

#### यी मुर्छित हरफहरु

कविताका हरफ हेर्दै छु ।

धर्ती सधैँ रातोको रातै छ

आकाश सधैँ बादलले ढाकेको ढाक्यै छ ।

युगौँसम्म पनि मौसम फेरिएन

कवित्व-संसारमा ।

ड्रग इन्जेक्ट गरिएको छ

कुराहरू सबै बिर्सिने ।

बिर्सिएपछि

सुरुदेखि सुरु हुन्छ सम्झिन

र वर्तमानसम्म आइनपुग्दै

बाटैमा घर जलाइएकोमा रुन्छन्

लखेटिएकोमा आक्रोशित हुन्छन् ।

सम्झनाको भारी बोकेर थाकेका छन्

फेरि त्यही भारी बोकेर हिँड्छन् ।

कविताहरू सधैँ थिचिए पिरहरूमा ।

यी यातायातले मुर्छित हरफहरू

यी डसिएर विषाक्त शब्दहरू

बिना कुनै औषधी

बिना कुनै शल्यक्रिया

छोडिदिँदै छु यत्तिकै

तपाईँको हृदयको आइ सि यु मा

बाँच्न सक्लान् कि भनेर…

सत्यवीर

बेल्डाँगी, नेपाल

#### हली उवाच: तिमीले मलाई बौलाहा बनायौ

**तिमीले मलाई बौलाहा बनायौ**

**जब श्रीमतीको फाटेको चोली सम्झन्छु**

**जाडोले काँपिरहेको**

**बालबच्चाको कोमल शरीर सम्झन्छु**

**तब थोरै बढी वेतनको माग गर्न पुग्छु**

**तिमी कड्केर व्यर्थै सोध्छौ- बौलाइस् तँ ?**

**म यसरी**

**बाली लगाउने बेलामा बौलाउँछु एक बार**

**बाली उठाउने बेलामा बौलाउँछु एक बार**

**अक्कल झुक्कल तिमीसँग आँखा जुधेमा बौलाउँछु**

**तिमीलाई प्रश्न गर्ने हिम्मत गरेमा बौलाउँछु**

**र यस्तै यस्तै बेलामा**

**म बौलाउँछु, साह्रै बौलाउँछु**

**तिमी हाँसेको बेलामा म बौलाएको छु**

**तिमी मातेको बेलामा म बौलाएको छु**

**हिजो-अस्ति मात्रै त हो,**

**सलामी टक्र्याउन अलि ढिलो भएको थियो**

**तिमी आयौ**

**मेरो कान्तिहीन अनुहारमा मुड्की बजार्‍यौ**

**र भन्यौ – ठुलो पल्टिन्छस् ? साला बौलाहा !**

**मलाई थाहा छ**

**म सद्दे छु, एकदम सद्दे**

**सद्दे नहुँदो हुँ त**

**धाँजो फाटेको जमिन जस्तो**

**चरचर्ती फाटेको आफ्नो कुर्कुच्चामा**

**मलहम दल्ने आकाङ्क्षा कसरी राख्थेँ ?**

**कसरी बुझ्थेँ मेरो बच्चाहरूका खाली पेटको भाषा ?**

**कसरी जोत्न सक्थेँ तिम्रो दस गाउँको बिर्ता ?**

**मेरो सद्दे शरीरमा**

**तिम्रै निम्ति बगिरहेछ पसिनाका धारा**

**फोक्सोको श्वासप्रश्वास नियाल्नु**

**तिम्रै निम्ति लिइरहेछु श्वास**

**र मेरो सद्दे मुटु आदि पनि**

**तिम्रै निम्ति धड्किरहेछ पलपल**

**सद्दे रहिरहनु भनेको तिम्रो पैतालाको लगाम भिर्नु हो**

**यी सबै त तिम्रै अधीनमा छन्**

**तर जो बौलाएकाहरू छन्**

**ती तिम्रो अधीनमा छैनन्**

**जस्तो कि बौलाहा झरी**

**यो घामको बौलाहा ताप**

**त्यो बौलाहा आँधी….**

**आगोको बौलाहा ज्वालासँग त झन्**

**तिमी आँखै जुधाउन सक्दैनौ**

**सद्दे भनाउँदा त**

**यो पृथ्वी आकारको म्याग्माको पनि**

**तिमीले टाउकोमै टेकेर उभिएको छौ**

**तर जब त्यही म्याग्मा बौलाएर ज्वालामुखी बन्छ**

**टाउकोमा टेकेर अविचल उभिइरहने**

**दुनियाँको कस्तै शासकको पनि**

**विशाल मुटुलाई खाक बनाउने सामर्थ्य राख्दो रहेछ**

**हेर्नु त्यो नदीले पनि**

**आफूलाई छेक्ने बाँध टुटाउने भनेको**

**बौलाएको बेला मात्रै रहेछ**

**त्यसैले हो**

**अलग दुनियाँको श्वास लिन थाल्लान् भन्ने पिरमा**

**मेरो फोक्सोलाई गाली गरिरहन्छौ**

**तिम्रो बाँध भत्काउला भन्ने डरमा**

**मेरो रगतलाई बौलाहा करार दिन्छौ**

**समग्रमा भयभीत छौ**

**तिम्रो स्वर्ग डगमगाउने हो कि भन्नेमा**

**र मलाई नबौलाउन खबरदारी गरिरहेछौ**

**आखिर, बौलाएको भनिएको त लुते कुकुरले धरि**

**तिम्रो अभिमानलाई ललकार्न सक्दो रहेछ**

**मालिक**

**कसैगरी मलाई मान्छे हुनु छ**

**तिमीले मानिरहेको छैनौ**

**तिमीले मलाई बौलाहा बनायौ ।**

**सञ्चमान खालिङ**

**पेन्सिलभेनिया, अमेरिका**

#### गाउँखाने कथामा…

गाउँखाने कथामा गावैँ हारेपछि

खै, कता लागे कता गाउँलेहरू

थाहा छैन

फेरि कुन गोरेटो भएर भेट्ने होला

कुन देउरालीमा वाचा बाँध्ने हो

शायद कुनै साल

महाअनिकाल लागेको बेला

या त साहूले घरबारी लुटेको बेला

धने मुगलान पस्यो

गावैँ माया मारेर

त्यसपछि त –

एउटा मुगलान पछि, अर्को मुगलान

अर्को पछि, अर्को …….

अविरल, अविरल यही क्रम चलिरह्यो/ चली नै रहनेछ

संसारले जति सुकै शताब्दी फेरोस्

सि. एम्. निरौला

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### स्वतन्त्रता दिवस

मनभरि डर बोकेर स्वतन्त्रता दिवस मनाइरहेको म

डरै डरमा पल्याकपुलुक्क गर्दै

पटका पड्कँदा पनि गोली झैँ लाग्ने म

कुकुरलाई बिजुली चम्कँदा अगुल्टाको यादझैँ बनेको

तरै पनि चीत्कार गर्दै छु स्वतन्त्रता दिवसको ।

हो किच्च हाँसेझैँ गरेर डरैडरमा सडकमा छु म

किन हो थाहा छैन देशको झन्डा हातमा बोकेर

डराई-डराई स्वतन्त्र भएको महसुस गर्दै छु

परिवार र आफन्तको हाल थाहा पाउन कौतूहल छु म

तरै पनि स्वतन्त्रता दिवस मनाइरहेछु ।

हो म पिँजडाको पन्छीझैँ स्वतन्त्र छु

कुवाको भ्यागुतो झैँ संसार चिनेको छु

मलाई के को डर म स्वतन्त्र छु, म आफ्नै मालिक बनेको छु

तर कसैको साइकलको टायर पड्कँदा पनि मेरो होस उड्छ

कुकरको सिटी लाग्दा जीवनको अन्तिम दिनझैँ लाग्छ

तरै पनि म स्वतन्त्रता दिवस मनाइ रहेको छु ।

म मेरै मान्छेसँग डराउँछु, न म स्वतन्त्र छु

न मेरो भावना, कसले कतिखेर के गर्छ थाहा छैन

कहाँ केको सिकार बन्छु सोच्न पनि सक्दिन

तर पनि फिस्स हाँसेर ठुलो स्वरमा डराई-डराई

म भने स्वतन्त्रता दिवस मनाइ रहेछु !

सुसन माझी

टेक्सास, अमेरिका

#### एउटा प्रश्न

नियतिले यतिखेर

दुनियाँको सपनाको देशमा

बिपनीमै जिइरहेको मान्छे म

सधैँ एउटा

सरल अनि नियमित प्रश्नसँग झस्कन्छु-

तपाईँ कहाँबाट ?

हो, यही एउटा प्रश्न, सरल प्रश्न

मानिसलाई सोध्न जति सहज छ

अनि त्यत्ति नै सरल छ उत्तर दिन

तर मलाई ? कति गाह्रो

मानौँ यो छातीमा

सिङ्गो ब्रह्माण्ड नै आएर थिचेजस्तो !

कसैलाई भनी दिन्छु, म नेपाली हुँ, नेपालबाट

सोच्छु, मातृभूमिलाई अन्याय भो,

त्यसैले भन्ने गर्छु, भूटानी मूलको नेपाली म ।

नेपालबाट हुँ भन्दा

कसै कसैले बुद्धका कुरा गर्छन्,

कोही भने एभरेस्टको !

भूटानलाई त चिन्दा पनि चिन्दैनन्

बरु सापटी लिनु पर्छ भारतको !

आजभोलि दोधारमा छु / दोसाँधमा छु

मातृभूमिलाई चिनाऊँ या नेपालीपनलाई ?

म आफैँलाई चिनाऊँ या देशलाई ?

आखिर,

नारीहरूको कुनै थर नभएजस्तै

नागरिक भन्नु पनि त त्यस्तै रै’छ

तर

जन्मभूमि स्वर्गभन्दा प्यारो हुन्छ

त्यो त मनमा हुन्छ, मुटुमा हुन्छ;

चाहे कर्मभूमि जहाँसुकै होस्

र जतासुकैको नागरिक बने पनि …!

खैर जे होस्

यस घरि म त्यही एउटा प्रश्न / सरल प्रश्नको

उत्तर खोज्नमा सोचमग्न छु !

हरि फुयाँल

पेन्सिलभेनिया, अमेरिका

#### कुसुम

मन पुलकित भैगो बाग सान्निध्य पुग्दा

वरिपरि सब देखेँ फूलका दिव्य गुच्छा ।

मगमग मृदु बास्ना वायुले चट्ट बोकी

भुवनभर फिँजायो दुःख कारुण्य मेटी ।।

वनभरि त्यसरी नै जाई, बेली, चमेली

कमल मखमलीको सान बेग्लै छ खेली ।

वरिपरि सयपत्री फूल फुल्छन् मजाले

मधुर कुसुम छायो दिव्य आनन्दताले ।।

कुसुमित अब बास्ना मनभरी नै पलाऊन्

मन मगमग बन्दै हर्ष आनन्द छाऊन् ।

ढकमक अति राम्रा भावना फैलिजाऊन्

मनहर शुभ राम्रा कीर्ति चम्केर आऊन् ।।

मन र तन दुबैमा शान्ति मिल्ने उपाय

कुसुमित मन पारौँ यै छ राम्रो उपाय

असल मन भएमा मालती भित्र फुल्छिन्

नवरस लतिकाझैँ काव्यमा झुल्न पुग्छिन् ।।

तब मनुज खुसीले विश्वमा रम्न थाल्छन्

कलुषित मनलाई भावनाले पखाल्छन् ।

तँ तँ म म भनि हिँड्ने जोसमा होस भर्छन्

जगत भर दयाको श्रोत नै बन्न पुग्छन् ।।

मद छ जति बढेको झट्ट गर्दिन्छ नाश

मनुज भनि चिनाई ज्ञान भर्दिन्छ खास ।

पुलकित मन पारी दिव्य आनन्द भर्छ ।

सकल जनममा नै साम्यता भाव छर्छ ।

हरी उप्रेति

ओहायो, अमेरिका

#### कुण्ठित सपनाहरू

जब जब मेरा आँखाहरू खुल्थे

आकाशतिर टोहोलाउने गर्दथेँ

अनि असीमित सपनाहरू बुन्दथेँ

एक दिन त्यो आकाशलाई चुमौँ

बादलपारिको दुनियाँमा छुट्टै संसार बनाऊँ

धर्तीको आश्रय लिएर टुकुटुकु हिँडौँ

अरू जस्तै म पनि असीमित सपना बोकेर

बादलमाथि अनि आकाशमुनि

चरीले झैँ पखेटा फिँजाएर

भुरभुर उडौँ जस्तै लाग्थ्यो

कविले झैँ कलम बोकी

खाली पन्नामा रङ्गिन कविता कोरौँ जस्तो

डक्टरले झैँ मुटुको शल्यक्रिया गरौँ जस्तो

पर्वतारोहीलेझैँ सगरमाथा चढौँ जस्तो

चलचित्रमा खलनायकलेझैँ

एक पछि अर्को मान्छे पिटौँ जस्तो

कोइलीको आवाज जस्तै उसको कण्ठमा

मुर्चुङ्गा र बिनायोको धुन बनौँ जस्तो

तर तर आज आकाशभन्दा धेरै तल छु

अनि धर्तीभन्दा अलिकति माथि

त्यही आकाशले इसारा गर्दै भन्छ

तिम्रा हजार सपना म पुरा गर्छु

तर — आज धर्ती बिरानो भएको छ

हरियाली वन उजाडिएका छन्

आफन्तहरू टाढिएका छन्

नजिकको साथी दुस्मन भएको छ

मानव प्रवृत्ति नपुंसक बन्दै गएको छ

सायद यही विडम्बना हो मेरो

अनि ठुलो अभिसाप

न त मैँले आकाशलाई छुन सकेँ

न धर्तीमा टेक्न नै

अनगिन्ती सपनाहरू चिच्याइरहेछन्

पल पल कुण्ठित हुँदैछन् ती सपनाहरू

खोलामा पानीबिना माछी छटपटिए झैँ ।

हिमशिखर अधिकारी

ओहायो, अमेरिका

#### प्रिय याद

केही चिने जस्तै लाग्ने

एक अँगाला यादहरू

मनको आँगनीबाट

लेफ्ट-राइट खेल्दै जान्छन्

मनकै आँखीझ्याल

घरक्क उघारेर हेर्छु

थोपा-थोपामा भन्छु

‘प्रिय याद पनि दूर गएको ?’

आवेशमा

सब मेटाऊँ जस्तो हुन्छ

कुनामा थन्किएर रोऊँ हुन्छ

किचनको छुरा तानेर

छाती वार-पार पार्दिऊँ हुन्छ

झीरले कानको जाली फुटाऊँ हुन्छ

झर्को लाग्ने गरी मन रुन्छ

उही घरक्क खोलिएको आँखीझ्यालमा

राइट-लेफ्ट गर्दै

ढिका-ढिकामा सम्झिन्छु

‘प्रिय याद नजिकिएको हुन्छ’

सपना

यो निद्रामा

यी आँखाले कति देखेका !!

खास सपना .. सपनै हुन्छन्

र भइरहून् ।

हेमन्ता आचार्य

सिड्नी, अस्ट्रेलिया

#### म वृद्धाश्रमकी एक वृद्धा

यो ठाउँ किन अनजान-अनजान जस्तो लाग्छ

वर्षौँ बितिसके पनि

यो घर किन शून्य-शून्य जस्तो लाग्छ

हजारौँ आउने जाने भए पनि

हजारौँको यो भिडमा मेरो मन

आफन्त देख्न तड्पिरहन्छ ।

हरेक बिहानी अनि अँधेरी रात

शनिवारको प्रतीक्षा गरिरहन्छ ।

बिहानीको मिरमिरे घाम अनि

शनिवारको स्वच्छ हावासँगै

भुलाइदिन्छ हरेक तड्पन अनि एकलोपन

आफन्त भेट्नेको बेचैनीसँगै ।

किन कि, यही त एक दिन हो

जहाँ खुसीको मौसम, आँसुको वर्षा,

अनि उकुसमुकुस भएका कुराहरू

पोख्न पाइन्छ ।

यही त एक क्षण हो,

जहाँ सधैँझैँ निलो वस्त्र गरेका

दिनै भिन्न-भिन्न चेहरा लिएका

एक हातमा तिखो सुई,

अनि अर्को हातमा दबाइको सिसी बोकेका हैन

रङ्गिन भेषमा, मासूम चेहरामा,

मेरा आफ्ना मुटुका टुक्रा देख्न पाइन्छ ।

यही त एक प्रतीक्षा हो,

जहाँ वृद्धाश्रमका यी

भिन्न-भिन्न भाषीसँगको

साङ्केतिक भाषा छोडेर

आफन्तसँग आफ्नै मातृभाषामा

बोल्न पाइन्छ ।

शनिवारको अँधेरी रातसँगै

सारा जोस हराउँदछ, प्रश्नै प्रश्नले

मन भरिन्छ कि

म किन यहाँ छु ?

मेरो आफ्नो सुन्दर घर छोडी

म किन यहाँ छु ?

मेरो डाक्टर छोरो अनि

शिक्षिका छोरी छाडी

म किन यहाँ छु ?

मेरा यिनै हातले हुर्काएका

ती नातिनातिना छोडी

म किन यहाँ छु ?

आज पनि याद छ त्यो दिन

जब मेरो छोरोले पहिलो पटक

संसार देखेको थियो ।

उसको पहिलो आँखा झिम्क्याई मैँ

मेरो सारा घाउ निको भएको थियो ।

कसरी बिर्सन सक्छु म त्यो क्षण

जब मेरी छोरीले पहिलो पटक

आमा ! आमा ! भनी पुकारेकी थिई

अनि उसका ती कोमल हातले

मेरा कान्छी औँला समातेकी थिई

यिनै औँला समाई स्कुल गई

सक्षम नारी बनेकी थिई

फेरि म सोच्दछु कि

म किन यहाँ छु ?

के यो समय हो ? के यो भाग्य हो ?

कि यो कर्म अनुसारको फल हो ?

के छोराछोरी पढाउनु, पश्चात्तापको रापमा जल्नु हो ?

अथवा सारा जीवन

यही वृद्धाश्रममै काट्नु हो ?

यतिराज अजनबी

एड्लेड, अस्ट्रेलिया

#### केही यक्ष प्रश्नहरू

रातभर खसी धर्तीको छातीमा ठोक्किएर

वरपर सुगन्धित पार्ने पारिजातको जस्तो अत्तर

बोकी ल्याउँछ मधुकर

स्मृतिको वाटिकामा डुलेर

कैले टोक्छ र जान्छ छोडिराखेर

केही निष्ठुर प्रश्नहरूको खिल

सतीदेवीको लास बोकेर युगौँ हिँडेको शिव झैँ

यी प्रश्नहरूको भारी बोकेर वर्षौँदेखि हिँडिरहेछु,

हिँड्दाहिँड्दै आइपुगेको छु

अप्रयुक्त र गतावधिक मानक भत्काएर

स्थापित सैद्धान्तिक विधिविरुद्ध विध्वंस गर्ने

यो प्रविधिको जङ्गलमा,

रहेछ यहाँ गुगल नामक सार्वजनिक बिसौनी

जहाँ विश्राम लिएर विचरण गर्छन्

क्रियाशील बेवकुफदेखि थकित विद्वान्

सूचनाको यो विराट उद्यान !

मैले निम्न प्रश्नहरूको उत्तर गुगलमा धेरै पल्ट खोजेँ तर

भूगोलमा नभेटिएको कुरा गुगलमा किन भेटिन्थ्यो?

त्यसैले सोध्दैछु हजुरलाई ।

जसै अत्तर छर्किन्छु

तीतेपाती र उन्यूको सोत्तरको सुवास किन आउँछ नाकमा ?

सात फिटे मानवाकृति सजिलै छिर्ने

मेरो घरको ढोकाबाट भित्र प्रवेश गर्दा

किन निहुरिन्छ मेरो पाँच फिटे शरीरको मालिक ?

कान खाने ज्याज बजेको बेला

किन सुनिन्छ मन खाने मुरलीको धुन ?

गम ट्रिको झाडीबाट अहोरात्र आउने ककटूको कर्कशावाज

मेरा कानमा ठोक्किँदा किन प्रतिध्वनित हुन्छ

दश महिना गुप्त स्वराभ्यास गरी

रानीवनको वासन्ती पत्रहरूको नेपथ्यमा बसेर मलाई बोलाउने

कोइलीको मधुर मूर्च्छना र आलाप ?

गुवा, नरिवल, आँप र कटहरका रुखहरूको

उपनिवेशभित्र लुकेर हराएको झुपडी

किन चिहाइरहन्छ मलाई सात समुद्रपारिबाट ?

नौ वर्ष कोखमा बसेर १९३२ मा जन्मेदेखि

विजयपश्चात् कुनै नायकले खलनायकको छातीमा गर्वले टेके झैँ

प्रशान्त महासागरमा टेकेर अहिलेसम्म उभिएको सिड्नी हार्बर ब्रिजमा

उभिएर अपेरा हाउसतिर हेर्दा

किन देखिन्छ क्षितिजमा ऋतुसँगै फेरिने त्यो माउ खोलाको बाँसको फड्के ?

साङ्लोले कुकुर डोर्‍याएर हिँड्ने

काँचका प्रतिमासँगै किन हिँड्छ

दूध, दही र घिउको मिश्रित महक आउने

शिरदेखि पाउसम्म

कपडामा परिवेष्टित गोठाल्नीहरूको छाया ?

फुङ्ग उडेको धर्तीबाट पनि जसरी उम्रन्छ पानी त्यसरी नै

बाह्य रूप रुखो देखिने मान्छेको पनि भिजिरहन्छ गह

रसिलो भएकाले नै हुनुपर्छ उनीहरूको भित्री तह,

पहाडजस्तो शरीर शिखरजस्तो शिर भएको,

हृदय भएर पनि संवेदनाशून्य

ब्रह्मविहीन रोबोटका आँखाजस्तै देखिने खोपिल्टाबाट

जब झर्दैन आँसु अर्काको क्रन्दनमा

तब हिउँदभरिको मेरो दु:ख देखेर बर्खाभरि रसाउने

प्रस्तरको पर्वतका आँखा सम्झिएर मूर्च्छा पर्छु

हुरी-बतास घाम-पानीले नभेट्ने ल्याण्डक्रुसरमा

यो मैदानको चौडा सडकमा सयर गर्दा किन देखिन्छ मृगजलमा

भिरको गोरेटोमा नि:शस्त्र हिँडिरहेको मुर्छित मान्छेको धूमिल मरीचिका ?

घुँडा टेकाउन खोज्ने यौटा समयको टाउको खुँडाले छिनाएर

अर्को समयलाई वली चढाई कुल-देउता बुझाउने बुढा र

सरकारी भत्ता रोकिएर परामर्शककोमा पुगेको

अधबैँसे बेरोजगारलाई देख्दा

किन देख्छु म भस्मे फाँड्न खुर्पा उध्याइरहेको पुरुषलाई ?

गोल्ड कोष्टको सुकसुकाउँदो पाँचतारे होटेलको पाँच डलर पर्ने

५०० एमएलको स्प्रिङ वाटर जति खाए पनि नमेटिएपछि तलतल

त्यही धराप छाप्रोको मैला माटाको घैला किन आउँछ रदिफ झैँ दोहोरिँदै आँखामा झलझल ?

पैसाले आमाबाहेक सबै किन्न पाइन्छ भन्ने सुनेको थिएँ हैन रहेछ

कुनै तरुणीसँगको निस्स्वार्थ र नि:शर्त प्रेममा

लट्ठिएको यौटा तरुणले जसरी हेर्दैन र देख्दैन

उसकी प्रियतामाको आयतन,

आकृति, रूप, रङ्ग, जात, धर्म,

योग्यता, दर्शन, दर्जा, इत्यादि र

मात्र देख्दछ उसको सुकुमार कौमार्य

त्यसरी नै देखिरहन्छु म

मेरो देशको सौन्दर्य जो अन्तर्गत छ

जसरी हिँड्न सिक्दछ पुत्रले पकडेर पिताको हात

त्यसरी नै सिकेको थिएँ हिँड्न मैले

मान्छेका हात, खुट्टा र औँला झैँ

पहाडको जीउबाट निस्किएका रुखका जरा समातेर,

आमाले झैँ फुक्दथ्यो त्यो पहाड मेरा चोटहरूमा

एक फण्याङ् हिर्काएर नौ मन माया गर्ने

नरो मेरो बाबै भन्दै आफैँ रुने

असल आमा र देश उस्तैउस्तै रहेछन्

मनको अगेनोमा फोक्सोले फुकिरहने

अनन्त आगो रहेछ देशप्रेम

जो

जति छोपे पनि सनातनरूपमा धुवाइरहन्छ ।

म अस्पतालको निर्जीव शय्यामा जन्मेको भए

मेरो पहिलो चिच्याहट त्यसका निष्प्राण भित्ताले थुनेको भए

आमाले छुनु अघि मलाई धाईआमाले छोएको भए

सायद लाग्दैनथ्यो मलाई यति बिघ्न देशको माया,

मेरो प्रथम रोदन मेरो गाउँले सुनेको थियो

मैले फेरेको पहिलो श्वासको चुम्बनले

ब्युँझिएका थिए त्यहाँका लतावृक्ष,

मलाई आमाको माया लाग्नुअघि नै

मेरो आङमा माटो लागेको थियो कहिल्यै नपखालिने गरी,

त्यसैले होला जति धोए पनि

माटोको जस्तै भएको मेरो छालाको रङ्ग

मलाई आमाले चुम्नुअघि त्यहाँको आकाशले चुमेको थियो

आमाले सुमसुम्याउनुअघि त्यहाँको बतासले सुमसुम्याएको थियो

यसरी ममतामयी मातालेभन्दा पहिल्यै

त्यहाँको धर्ती, आकाश र बतासले मलाई स्पर्श गरेर नै होला सायद

म जन्मेको माटोप्रतिको मेरो प्रेम प्रगाढ भएको, अगाध भएको,

जिन्दगीका प्रारम्भिक पथहरूमा

जुत्ता लगाएर हिँडेको भए

अथवा

मेरा पैताला र धर्तीका बिचमा

स्पर्शावरोधक अलकत्रा लेपन गरिएको कङ्क्रिट मार्ग भएको भए

सायद लाग्दैनथ्यो होला यति औधी माया,

त्यो अक्करे बाटोमा ठोक्किएर नझरेको भए मेरो रगत,

त्यहाँका वनस्पतिले नपुछेका भए मेरो निधार,

(सम्झना आउने थिएन होला बारम्बार,)२

(त्यो माटोमा नखसेको भए मेरो पसिना

बाफिएर पर्ने थिएन होला यो स्मृतिको पानी र असिना, )२

उतिखेर चिप्लिएर नलडेको भए, दलदलमा नफसिएको भए

यतिखेर सायद बिना बर्खा आँखाबाट खस्ने थिएन होला झर्ना,

समयको हतौडाले हानेर

मनको उपत्यकामा स्थापित भएका

सम्झनाका यी स्थापत्यलाई कुनै पनि भूकम्पले ढाल्ने छैन

धुलोमा जन्मेर धुलोमै ठुलो भएको मान्छे म

ठुलो जति भए पनि बिर्सने छैन त्यो धुलो,

म जन्मेको हुर्केको माटोको कण पसेको छ मेरो आँखामा बसेको छ

सदैव प्रज्वलित तर अदाह्य मेरो आत्मामा टाँसिएको छ

जो रहनेछ त्यहीँ म जति नै तल खसे पनि जति नै माथि उठे पनि

र जानेछ मसँगै मेरो समाधिसम्म, त्यसपछि छ भने नर्क या स्वर्गसम्म

यति बिघ्न किन लाग्छ म जन्मेको माटोको माया ?

किन यति औधी आउँछ छुटेको बाटोको याद ?

प्रेम सायद सामीप्य, स्पर्श अनि संयोगले बढाउँछ,

सम्झना सायद दुरी, वर्जन र वियोगले बढाउँछ,

यी घातक र निर्दयी प्रश्नहरूले प्रत्येक रात

मेरो निद्राको कन्चटमा गोली हानेर उडाइदिन्छन्

हे युधिष्ठिर !

कसरी बाँचेको होला यौटा जिजीविषा यो वधशालामा ?

यदु युगान्तर "आलोक"

नेदरल्यान्ड्स

#### नेपाली परिचय-पत्र...

म अचम्मित भएँ,

जब तिमीले यति गहन र गौरवशाली "नेपाली" शब्दलाई

त्यति सङ्कुचित तवरले परिभाषित गरिदियौ!

म निराश भएँ,

जब हाम्रो इतिहास र रगतलाई जोड्ने यो नातालाई

भूगोलको सीमारेखाले सीमित गरिदियौ ।

तिमीले मलाई आफ्नो नठानेकोमा,

एउटै पूर्वजका सन्तान झैँ नमानेकोमा,

मेरो कुनै गुनासो छैन, न त आपत्ति नै,

तर जहाँ तिमीले आकाश जस्तो विशाल "नेपाली" शब्दलाई,

घरको आँगन जत्रो बनाएर खुम्चाई दियौ!

नेपालको सीमित मान-चित्र भित्र बुच्चाई दियौ!

तिम्रो त्यही अहमताप्रति आपत्ति छ,

तिम्रो त्यही अज्ञानताप्रति सहानुभूति छ ।

के त्यो  नेपाली हो,

जो नेपाली भूमिमा जन्मेर पनि

ऊ अनेपाली मन बोकेर,

दौरा - सुरुवालमा सजेको छ?

के त्यो नेपाली हो,

जो स्वदेशी भएर पनि

विदेशी मानसिकतामा बसेको छ?

के त्यो नेपाली होइन,

जो भूटान र वर्मामा जन्मेर पनि

युगौँ-युग नेपाली भई बाँचेको छ?

जो अर्को नेपालीको खुसीमा

मनै देखि हाँसेको छ ।

के त्यो नेपाली होइन,

जसले पराई भूमिमा रहेर पनि

आफ्नो मुटुमा नेपाल बोकेको छ?

जसले "म नेपाली हुँ" भनेकै कारण

आफू जन्मेको माटोको वियोग भोगेको छ ।

यदि नेपाल भित्रकै मात्र नेपाली हो,

जसभित्र नेपाल छैन भने ।

यदि नेपाली परिचय-पत्र बोकेर,

नेपाललाई परिचय गराउँदैन भने ।

माफ गर, म त्यो नेपाली होइन ।

म त्यो नेपाली होइन,

जो ओठमा नेपाल बोकेर

मनले 'अमेरिकन ड्रीम 'देख्छ ।

म त्यो नेपाली होइन,

जो नेपालमा जन्मेर पनि

नेपाललाई नै बेच्छ ।

तिम्रो कागजको टुक्राले

मलाई गैर-नेपाली भन्दैमा ।

तिम्रो सङ्कीर्ण परिभाषाले

मलाई नेपाली नभन्दैमा ।

मेरो नेपाली गौरव र अस्तित्व

कहिल्यै नासिने होइन ।

मेरो नेपालप्रतिको प्रेम

कहिल्यै सकिने छैन ।

भो! चाहिँदैन मलाई

तिम्रो नेपाली परिचय-पत्र ।

याम थुलुङ

बेलडाँगी, नेपाल

#### बादलका टुक्राहरू…

समुद्र सतहदेखि

अलि–अलि गरी

हावासँगै…

अल्लारेपन घुमाउँदै

माथि–माथि जान्छन्

अग्लिएको भानसँगै

एक्लै, आफैँ रमाएर

तल हेरी

जमिनलाई

सलाम गर्छन्……..

पानीको कण न हो

आफैँमा टुक्रिँदै जोडिएको

वास्ता हुँदैन…

निक्कै माथि पुगेपछि

घमन्ड भरिन्छ

समुद्रको सन्तान सम्झँदै

ठुलो हो–हल्ला गर्न थाल्छन्

एकोहोरो गर्जनमै मस्त हुन्छन्

जति माथि गए पनि

आखिर ती

पानीको बाफ न हुन्…

हुस्सु, कुहिरो र बादलको

संज्ञा पाउँछन्

कालो, चिसोको

दोष पाउँछन्…

कोसौँ अग्लिए पनि

घुम्दा–घुम्दै

थाक्नु पर्छ

थकाइले….

डाँडा, पहाड र हावासँग

ठक्कर खान्छन्

अनि…

असुरक्षित तरहले

वर्षा बनी

जता–ततै

बर्सनु पर्छ

र

उही पुरानै

गाउँ ठाउँमा

झरेर फेरि मिल्नु पर्छ …..।

युग दवाडी

वासिङ्टन डी. सी., अमेरिका

#### तिमी कुलागाङ्ग्री

म सानो छँदा

मैले सधैँ सुनेको,

हरेक साल

हाजिरी जवाफमा

तिम्रो नाममा

एक गौरवशाली

प्रश्न सोधिन्थ्यो

तिमी मेरो माटोको

सबैभन्दा उच्च हिमाल

तिमी कुलागाङ्ग्री !

मेरो भूगोल शिक्षकले

सधैँ तिम्रो गरिमा गाउँदथे

तिमी, भूटानको अस्मिता

पहिचान र स्वाभिमान बोकेर

सधैँ अटल र अविचलित

एक धरोहरका रूपमा

साब्ड्रुङदेखि जिम्मेसम्म

आफ्नो मर्यादा नछोडी

म अनि मेरो माटोको

इतिहासलाई नियालिरहने

तिमी कुलागाङ्ग्री !!

म ठूलो हुँदा

तिम्रो अस्मिता र सुन्दरतामा

आँखा गाड्नेहरुको भिड

तिम्रो छातीमा गाडिएका

यति अनि टाकिनका पाइलाछाप

निमिट्यान्न पार्न तम्सिएका

उत्तरका ठूल्दाइ

दक्षिणका सान्दाइ

अनि ….

आफ्नै कुर्सी जोगाउन

तिम्रो अस्मितालाई बन्दकी राख्न

पछि नपर्ने

यस देशमा सत्ताको बागडोर सम्हाल्नेहरूको

मैले हेर्दाहेर्दै

सस्तो उपहार बन्न पुगेको

तिमी कुलागाङ्ग्री !

तिमीले अङ्गालेको

भूगोल बेचिए पनि

यतिका पाइलाहरू मेटिए पनि

तिमीलाई जोम्होलरीले जिस्काए पनि

तिम्रो अस्मिता

तिम्रो पहिचान

मेरो बाल मस्तिकमा छापिएको

तिमी मेरो माटोको

उच्च हिमाल

मेरो माटोको मर्यादा

हाम्रो स्वाभिमानको धरोहर

तिमी कुलागाङ्ग्री !!